TC/RAJ/RAJ/00095
ISSN 2349-6460

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

अक्टूबर-दिसंबर 2014

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जैसलमेर

ओम पुरोहित 'कागद', हनुमानगढ़

प्रधान संपादक

पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

मिजमान संपादक

डॉ. नीरज दइया

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित बीकानेर, **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा** महाजन, **प्रह्लाद राय पारीक** हनुमानगढ़
गौरीशंकर जोधपुर, **ओम नागर** कोटा

मुखौळ : **कुंवर रवीन्द्र**

रेखाचित्र : **किरण राजपुरोहित 'नितिला'** जोधपुर
अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

मुद्रक : **भंडारी ऑफसेट** जोधपुर
साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया
अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया
तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया
आजीवन : 1100 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800
e-mail : apranchrajasthani@gmail.com
web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑मिजमान संपादक री बात

हलकै विसेस मांय हुवण वाळै रचाव री बानगी — *डॉ. नीरज दइया* — 3

❑संपादकीय

आतंकवाद रौ कोई धरम नीं — *गौतम अरोड़ा* — 5

❑नूंवी बानगी

आपरै रूप रूबायां रा अै...! — *मोहन आलोक* — 6

❑अेकल काव्यपाठ

बचाव/बदळाव/सींव/जूण — *कुमार अजय* — 8

❑कवि-गोस्ठी

पैलड़ी हथाई रै चूंतरै/कोई बांचौ — *रवि पुरोहित* — 12

आतम भूख/हस्ती रै परबार — *मालचन्द तिवाड़ी* — 13

लोकराज/बावड़ी/कुल्हाड़ी/अै कठफोड़ा/पगरखी/मिणिया — *शिवराज छंगाणी* — 14

❑दोय व्यंग

आप जकौ मांडौ, वौ सौ टंच खरौ/कविता रौ दफ्तर टैम — *बुलाकी शर्मा* — 15

❑विनोद-वारता

लाला टोपणदास रा अऊत — *डॉ. मदन केवलिया* — 19

❑उपन्यास अंस

अवधूत — *मधु आचार्य 'आशावादी'* — 22

❑कहाणी

दाग़ आछा है — *डॉ. मदन सैनी* — 28

सोच — *नवनीत पाण्डे* — 30

ममता — *राजेन्द्र जोशी* — 34

❑लघुकथावां

जथारथ/ड्यूटी — *सुनील गज्जाणी* — 38

❑नाटक

सुपनां में नीं सीर — *हरीश बी. शर्मा* — 39

❑पोथी-परख

उकळती ओकळ माथै उभाणै पगां — *डॉ. मदन गोपाल लढ़ा* — 60

❑बीकाणै री साख

साहित-सिरजण री भोम : बीकानेर — *डॉ. दीनदयाल ओझा* — 63

● मिजमान संपादक री बात

हलकै विसेस मांय हुवण वाळै रचाव री बानगी

अपरंच बांचणियां री छिब चितारू तौ केई चितराम आंख्यां साम्हीं आवै। वां मांय म्हारा व्हाला नै मानजोग लेखकां-कवियां भेळै राजस्थानी रा हेताळुवां नै प्रणाम करूं कै आप री हूंस रै पाण ई राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां रौ जस है। आधुनिक तकनीकी विकास अर मीडिया रै जाळा मांय कागदां माथै छप्यै आखरां सूं अपणायत करणिया दिनोदिन कमती हुयग्या। कागद मिलण-बांचण रा जूना दिनां सूं आपां ई-मेल रै हेवा हुयग्या। न्हासती सदी रै इण जुग मांय कंप्यूटर माथै राजस्थानी रा केई-केई रंग देख्या जाय सकै। सोसल मीडिया साइट भेळै अपरंच ब्लॉग इण बात रौ प्रमाण है कै आपां री सगळां मोरचां माथै पकड़ मजबूत रैवणी चाइजै। किणी समाज, पत्रिका अर लेखकां-संपादकां खातर जरूरी बात आपरी भाषा-साहित्य रै लगोलग विगसाव री अंवेर मानीजै। इणी ओळ मांय अपरंच रौ 'बीकानेर अंक' देख्यौ जावणौ चाइजै।

राजस्थानी रा लूंठा कवि-संपादक अर अनुवादक श्री पारस अरोड़ा रौ घणौ जस मानूं कै वां म्हारै माथै पतियारौ करतां बीकानेर अंक रौ संपादन कारज म्हनै सूंप्यौ। युवा रचनाकार भाई गौतम अरोड़ा नै ई रंग कै वै इण कारज मांय सैयोगी रैया अर लगोलग बात-बंतळ सूं अंक आप रै साम्हीं आयौ। अंक री घोषणा पछै म्हारै नांव केई कागद अर फोन आया-गया। चावा-ठावा कवि श्री मोहन आलोक लिख्यो, ''बीकानेर अंक रो कांई मतलब ठाह कोनी, यूं तो फेर गंगानगर अंक, चूरू अंक, हनुमानगढ़ अंक? अंक जोगी स्तर री रचनावां रगळै ई सगळै मिलणी मुस्कल है। ऐरियो बधावणो चाइजै।'' साहित्य-पारखी लूंठा विद्वान लिखारा श्री दीनदयाल ओझा जैसलमेर सूं बीकानेर रौ जस लिख'र भेज्यौ अर फोन माथै ई अंक पेटै जरूरी भोळावण दीवी। घणै गीरबै साथै कैयौ जावणौ चाइजै कै राजस्थानी रा नवा रचनाकारां आपरी परंपरा नै जिण ढंग सूं संभाळी है उण रौ जस आवण वाळौ बगत बखाणैला। 'बीकानेर अंक' मांय कोसीस करीजी कै घणी बातां सामिल करी जावै, पण जो कीं आपरै साम्हीं है उण पेटै औ कैयौ जावणौ ठीक रैवैला कै इण जाजम मुजब जचावणी मांय कोई कोर कसर कोनी राखी।

बीकानेर हलकै अर उण रै आसै-पासै रौ रचाव राजस्थान री दूजी जागावां सूं सदीव ई हरेक दीठ सूं इक्कीस रैवतौ आयौ है। बीकानेर संभाग मांय दूजै संभाग करतां रचनाकार अर रचनात्मकता बेसी हुवण सूं अठै संख्यात्मक अर गुणात्मक रचनावां बेसी मिळै। इण बात रै कैवण लारै अठै औ अखरावणौ है कै अंक मांय किणी रै सामिल नीं हुवण रौ का सामिल हुवण रौ औ मायनौ नीं कै औ दीठाव बीकानेर रौ पैलौ का छेहलौ दीठाव है। इण ढाळै री कोसीस रै लारै किणी हलकै विसेस मांय हुवण वाळै रचाव री बानगी राखणी हुया करै अर अठै औ भाव ई बेसी लखावैला।

किणी पण रचना अर रचनाकार रा सोखी दो-तीन पख हुया करै, बांचणिया, आलोचक अर संपादक। असल मांय बांचणिया अर लिखणियां बिचाळै संपादक अेक पुळियौ बणावण रौ कारज संभाळै। कोई पत्रिका का पोथी पेटै पख अर विपख दोनूं भावां रै बिना खरोखरी परख नीं हुय सकै। आं भावां रौ जलम सगळां सूं पैली खुद रचनाकार रै हियै होवणौ चाइजै। रचनाकार नै खुद आ बात समझणी जरूरी है कै बै जिकौ कीं लिख रैया है वौ आज री जरूरत मुजब है का कोनी। राजस्थानी साहित्य रौ सिरजण समकालीन भारतीय साहित्य रै जोड़ मांय बधै इण खातर संपादकां रौ फरज है कै वै घणी सावचेती सूं रचनावां रौ चयन-संपादन करै। राजस्थानी मांय आ आज री मोटी अबखाई मान सकां। आ बडी बात कैवण री हिम्मत करण लारै मंसा फगत इत्ती है कै जे आपां किणी नै स्वीकार का अस्वीकार करां तौ उण लारै पूरी सोचा-विचारी अर समझदारी हुवणी चाइजै।

अंक मांय प्रकाशित रचनावां पेटै इत्तौ ई कैवणो है कै अै रचनावां खुद आपरै मूंडै बोलै तद किणी संपादक नै आं बाबत बोलण री ठौड़ आलोचक नै बोलणौ चाइजै। संपादक रौ चयन ई उण रौ बोलणौ हुया करै। बीकानेर-अंक पेटै भाई शंकरसिंह राजपुरोहित नै रंग कै बां रै सैयोग सूं औ कारज बगतसर पूरौ हुय रैयौ है।

-डॉ. नीरज दइया

महिला विसेसांक

मिजमान संपादक : डॉ. सुमन बिस्सा
314-सी, तीसरी डी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान) 342001
मोबाईल नं. 9414215128

राजस्थानी रचनाकारां सूं अरज है कै महिला विसेसांक सारू आपरी रचनावां ऊपर लिख्या पता माथै मिजमान संपादक नै सीधी भिजवावौ।

● *संपादकीय*

आतंकवाद रौ कोई धरम नीं

अपरंच रा सगळा पाठकां, लेखकां अर अपरंच-परिवार सूं जुड़्योड़ा सगळा सदस्यां नै नुंवै बरस री हियै-तणी मंगळकामनावां। अपरंच रौ बरस 2014 रौ छेहलौ अंक आपरै सांमी है। जद आपां 2014 रै छेहलै अंक री बात करां तौ 2014 रौ लेखौ-जोखौ अर पड़ताळ जरूरी व्है जावै।

बरस 2014 राजस्थानी भासा आंदोलण री दीठ सूं घणौ महताऊ रैयो, इण बरस दोय चावा-ठावा टी.वी. चैनल 'फर्स्ट इंडिया' अर 'ई टीवी राजस्थान' राजस्थानी भासा मांय खबरां रा बुलेटिन सरू कर'र मायड़ भासा रौ मान बधायौ, तौ राजस्थान रा मुख्यमंत्री भी इण बात नै हांकरी कै वै राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता सारू केंद्र सूं बात करैला। इणी बरस बाल साहित्य री पैली राजस्थानी पत्रिका 'पारसमणी', 'आलोचना अर शोध री पत्रिका' अर पारिवारिक पत्रिका 'लीलटांस' रौ प्रकासण राजस्थानी भासा अर साहित्य रै प्रचार-प्रसार री दीठ सूं महताऊ है। इणी बरस राजस्थानी मांय पैली सैट अर प्राध्यापक-प्रथम री भरती री परीक्षावां ई व्ही। इण लेखै 2014 घणौ महताऊ रैयौ अर 2015 सूं मोकळी आसावां है।

पण इणी बरस रै छेहलै हिस्सै पड़ौसी देस पाकिस्तान मांय स्कूली टाबरां माथै होयै हमलै सूं आतंकवाद रौ अेक नुंवौ रूप सांमी आयौ। आ घटना इण बात रौ प्रमाण है कै आतंकवाद रौ कोई धरम अर जात नीं व्है, अर ना आतंकवाद किणी धरम विसेस रै खिलाफ है। आतंकवाद तौ मिनखपणै सांमी ऊभौ अजगर है। आतंकवाद तौ मिनखाजूण अर समाज सांमी वा चुणौती है जिण सूं आपां सगळां नै मिळ'र निपटणौ है। 'अपरंच' इण हमलै मांय सहीद व्हिया सगळा टाबरां नै सलाम करै, सादर सरधांजळी देवै।

म्हैं इण अंक सारू भाई नीरज रौ आभारी हूं कै वै बगतसर इण अंक नै सगळी विधावां अर पूरै बीकानेर अंचल नै परोटता थकां 'बीकानेरी कलम' रूप सांमी लाया। आस करूं कै अंक आप सगळां नै दाय आवैला।

-गौतम अरोड़ा

● *नूंवी बानगी*

आपरै रूप रूबायां रा अै...!

मोहन आलोक

(अेक)

सबदां रा थे अरथ बण्या और बस्या
आप रै रूप रूबायां रा अै बंध कस्या
आप री जोत ई प्रगटी मांय'र बारै,
आप बण म्हारै अंधारै हिय दीप चस्या।

(दो)

माथै पै बळीतै री भरोटी, छोरो—
गोदी में लियोड़ौ है, दोरौ-स्सोरौ
दो च्यार बकरड़्यां नै है घेरच्यां आवै,
ज्यूं करज चुकाबौ है कोई इण भो रौ।

(तीन)

मेहमान ई दोपारै मझ में आया
रोट्यां तो बणाणी ई है, थे छाया
माची नै खड़ी कर'र करी चूल्है पर,
है रूप रै साथै ई थारा गुण जाया।

(च्यार)

थारो ओ देव, महादेव री पूजा करणौ
परिवार री सुख-स्यान्त नै चिंतित फिरणौ,
पूजा में ई बिरछ री रिछपाळ नै प्रगटै,
पीपळ रै लिपटणौ अर मुट्ठी भरणौ।

(पांच)

आप घर झाड़-बुहार करौ कंचन सो
कोई तापस, कोई देव रै निरमळ मन सो,
आप हो रूप री देवी थांरौ घर मिंदर
जग थां सूं ई रमणीक है नन्दन-बन सो।

(छह)

ओढणौ नाख, अेक माची पर
पिछोकड़ कर खड़ी, आडी भू पर
आप नहावौ तौ नभ मंडळ सूं
देवता फूल बरसावै रूप पर।

(सात)

लाळ सूरज रै पड़ै जद देखै बो
खेत रै मांय यूं इमरत लुटतौ
टीबड़ी माथै अेक टापी बैठ्या—
आप जद गीगलै नै बोबौ द्यौ।

(आठ)

खेत, सिट्टा पै चिमकती आ कूंकूं चादर
बाजरौ आप रुखाळौ हौ खड़्या डूंचै पर
हाथ ऊंचा'र करौ हौ जद हाकौ,
थांरी छात्यां पै पड़ै सायनै सूरज री निजर।

(नव)

सिर माथै घड़ौ अर गोदी छोरौ
ऊंचाण पै है गांव, चढणौ दोरौ
चलतां रा भुंवै पग, तौ ई थे कैवौ—
मा और सहेल्यां नै, सासरौ सोरौ।

(दस)

नहरी नै गयो चाट, बिरानी खाग्यौ
गोरी री हर एक रात सुहाणी खाग्यौ
स्सा हूंस खतम कर दी ढोलै सूं मिलण री
ओ कातरौ 'मरवण' री जुवानी खाग्यौ।

(उपसंघार)

'जेर' रै अर 'जबर' रै झगड़ै में,
'काफिये' अर 'बहर' रै झगड़ै में
म्हनै क्यूं खांमखां रा खींचो हौ,
भाईजी! थांरै घर रै झगड़ै में।

●●

207, फोर्थ ब्लाक, पुरानी आबादी
श्रीगंगानगर (राजस्थान)
मो. 9799661832

कुमार अजय

बचाव

प्रीत-हेत माथै
सिरजीज्या है घणा ई पोथा
अर औ विसै अैड़ौ डूंगौ है
कै और ई मांडीज सकै
घणी ई कवितावां
भरीज सकै पोथा रा पोथा
अर जे नीं तौ कविता रै मारफत
गायीज सकै
राजा-महाराजावां री बिरदावळ्यां
करीज सकै वांरी बडम
हुय सकै बरणाव वांरै कंवळापै
अर बडाळहीयां रा
कै वांरी हीम्मत कै हूंस रा
वांरी राणियां रौ फूटरापौ ई
बतायीज सकै आखरां रै ओळावै।

आ ई नीं जचै तौ
उकेरीज सकै पछै
परकत रा चितरांम
पुसप, प्हाड़, झरणा, नाडी
पाणी अगन अर आभौ परसती
कविता ई खूब मांडीज सकै।

इण ढंग घणी ई बातां है
कविता सारू
अर घणा ई है
मिनख, जीव-जिनावर
जकां नै लेयनै करीज सकै कविता
पण कविता नै
अेक चीज सूं
बचावणौ जरूरी है
कै कदी कविता में
नीं बड़ जावै लालौ चमार
कै छोटू भंगी रौ छोरौ
भलांई हुवै वौ
कोई बडौ नेता
कै मोटौ अफसर
कै पछै बीजै किणी छेतर में
लीन्हौ हुवै कोई मुकाम खास
पछै ई वींरै परस सूं
भिंटीजणै रौ डर है कविता नै
जे बचायां राखणी है
किणी हीणप सूं कविता नै
तौ आं हीण मिनखां नै
बड़णै सूं बरजणौ जरूरी है
कविता में आं रौ बड़णौ
हुयसी घणी अणखावणी बात।

बदळाव

हां, बगत घणौ बदळग्यौ है द्रोपदां!
पण थां सारू कीं नीं बदळ्यौ हाल
बदळतै बगत मांय जे कीं हुयौ है तौ औ ई फगत
कै लांबा हुया है दुरजोधनां-दुसासनां रा हाथ ई...।
थांरौ तौ बिंयां ई भरयै दरबार
हुवणौ है चीरहरण सगळां रै साम्हीं
पैलां केई निजरां जमीं तौ कुचरै ही
अबै तौ सगळा तमासौ देखणै ढूकसी....।
कौरव-पांडवां बिचाळै अब कठै रैयौ आंतरौ
किण रै भेख मांय कुण निसरै कांई ठाह
क्रिस्ण तौ खुद ई न्हाखतौ फिरै डाका
थांरी हीयाळू पीड़ नै नीं ठौड़ वीं रै हीयै...।
हां बगत तौ घणौ बदळग्यौ है द्रोपदां!
पण बदळाव रै इण तोफाण मांय
बदळी है फगत तकनीकां दुराचार री
चीरहरण रा ढंग-ढाळा ई हुया है हाईटेक...।
थांरौ बगत तौ थन्नै खुद ई बदळणौ पड़सी द्रोपदां
उठावणी पड़सी खुद ई बैरियां साम्हीं तलवार
अर जे अैड़ै बगत ई नीं कर सकै थूं इंयां
तौ बैरी कुणई दूजौ नीं, थांरी बैरण थूं आप है...।

सींव

स्कूल री बाखळ में, हरियळ दूब में
बोछरड़ी नदी ज्यूं मोद सूं उछळती,
हिरण्यां री भांत कूदड़का मारती,
साथणां सूं कुचरण्यां करती
टाबरपणै भेळै जवानी रा अैनाण लेवती
वीं छोरी रै हीयै मांय हिलोळा मारती आस है,
हरख रा इंदरधनख है, आभौ छूवता सुपना है...।

कांईं ठाह खुद रै मांय ई मोदीजती अर
चीड़ीबल्लौ खेलती वीं भोळी चिड़कली नै
कै घरै पूगणै सूं पैलां ई बाड़ीजगी है वा
रोड़ीजगी है वा समूची उमर सारू अेक पिंजरै में
साथै ई रोड़ीजग्या-रूंधीजग्या है वीं रा सुपना
आस रा सूरजी अर हरख रा इंदरधनख ई...।
पिंजरै मांय रोड़ीजी वीं चीड़कली री जिंदगांणी में ई
बोछरड़ी नदी जैड़ौ ई मोद है, ऊमाव है
हिरण्यां री भांतली कूदाकां है
वैड़ौ ई कुचरणीगारौ है वीं रौ जीव ई हाल
आस है, हरख है अर सपना है, स्सौ-कीं है
पण अबै सगळां री अेक सींव है
अेक पिंजरौ है जकै रै मांय ई
वीं री दुनिया है, वीं रौ आभौ है...।

जूण

सागड़दी रै किणी हरख में
हरखनै मुळक साथै नीं दिरीजै
आपणै सूं हीयै तणी बधाई।
नीं ई किणी बेली री पीड़ में
झुर सकां आपां आछी भांत
भोगनै वीं री पीड़ खुद रै हीयै।
आपणै कन्नै नीं है वै सबद जकां सूं
जलम रा दिवाळ बूढै मायतां रौ अेकलपौ
भजाय सकां आपां आंतरै।
आपणै कन्नै नीं है वां हूंस
जकी सूं कैय सकां आपां किणी नै
'क्यूं फिकराळू हुवै, म्हैं हूं नीं!'
कित्ता दिन हुयग्या आपां नै
गांव बिचलै पीपळगट्टै बैठनै
हथाई करनै दिन सळ्यौ जीयां ।
कित्ता दिन बीतग्या आपां नै
गांव रै उत्तरादी सरै

बठै ऊभी बोरड़ी रा मीठा बोरिया खायां।
खेत री आथूणी आवड़ी रै पड़ालै बैठनै
ढबरयां रा कूढ लगायनै मतीरी खायां
तौ साचांणी जमारौ ई बीतग्यौ।
दिखणादी हड़ाई में बाजरी रा सीटा सेकतै
बडोड़ै ताऊजी रै हाथ सूं
मोरण खायां तौ जाणै सईका बीतग्या।
कित्ता दिन सूं आपां नीं गया
किणी जागरणै में,
बैठनै दो घड़ी नीं सुण्या लिच्छू दादै रा भजन।
कित्ता दिन सूं आपां नीं हुया भेळा
किणी मौकै अेक ठौड़ सगळा बेली
टाबरपणै री मीठी ओळूं लेयनै।
टाबरां सारू आपां लगाय दीन्हा रमतियां रा कूढ
पण साथै बीतावणै सारू नीं
दो-च्यार छिण ई आपणै कन्नै।
विग्यान अर तकनीक रै स्हारै मसीन बणी जिंदगांणी में
जीवणै अर दुख-सुख मैसूसणै सारू
नीं है ओसाण अेक घड़ी रौ ई।
गाडी-घोड़ा, मोटी तिणखा, चौकबंदी हेली
हुवता थकां ई आपां लाग रैया हां
नित-नवी मसीनां बटोरणै में।
ठाह ई नीं पड़ै अबै
कै अै मसीनां, सुख-सुविधावां सगळी चीजां
आपणै सारू है कै आपां आं सारू।
साच तौ आ है कै आं सोरपायां-अबखायां में
आपां जी नीं रैया हां अबै
फगत जूण काटां हां।
हां जूण ई तौ काटां हां आपां सगळा
अश्वत्थामा री दांई माथै लेयनै घाव
फिरां दिन-रात डाफाचूक जाणै किणी मुगती री हेर में।

●●

सहायक सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
चूरू (राजस्थान)
मो. 9929582610

रवि पुरोहित

पैलड़ी हथाई रै चूंतरै

मनगत म्हारी
घणी तिरसायी
थारै नेह री...
भीजी-भीजी
आं आंख्यां में
थारी
यादां री पुरवाई
थारी
ओळ्यूं रै परवाण...
छाती में म्हारी
आंसुवां री अणथक नदी,
पिघळणौ चावै
थारी सांसां रै
ताप सूं...!
ठाह नीं
कित्तौ बगत बीतग्यौ
इण चावना नै
पण म्हारी मनगत...
म्हारी चेतना...
म्हारी समूची जिंदगी
ओजूं ही
अटकी खड़ी है
थां सूं होयी
पैलड़ी हथाई रै चूंतरै!

कोई बांचौ

अबार
बगत लिखै
म्हारै चैरै रै पानां,
जज्बातां रौ
झाळमुख...
कीं पळ
आपरै लेखै
मूंडै री कंवळाई सूं
मैळ खावती
कूंपळ सूं
पण कालै
जद
झुरियां रौ राज होसी
कंवळै-कोमल
चीकणै गालां
तद चैरौ
खुदोखुद
खुली किताब बण जासी
कोई बांचौ
कोई मोड़ौ-तोड़ौ
किणी विध
किणी ढब चाहै!

●●

179, सिविल लाइन,गांधी पार्क के सामने, बीकानेर
मो. 9414416252

●मालचन्द तिवाड़ी

आतम भूख

म्हारी आ ईह-लीला
ईह-लीला छै कै प्रेत-लीला ?
कारण कै
म्हारी सांसां, सांसां नीं
दुख रा पसवाड़ा छै निसदिन

म्हारा भायलां
करौ अेक उपाव
म्हनै वौ लतीफौ बणाय दौ प्लीज
रेल-मंत्री रेल-बजट राखती वेळा
कालै जिकौ संसद में सुणायौ छौ
जुलाई महीनै री दिसविहूण हवा रै जोर
वाम फगत वाम लुळता अै बेबीज कीकर
महनै म्हारा मा-जाया क्यूं लखावै ?
म्हैं अेक निरोगी हतासा रौ
लासानी मरीज तौ कोनी ?

कूड़ी मुळक होठां माथै चेप्यां
डाक्टर करतां मैनेजर बत्तौ लागतौ
गांठ रौ पूरौ बगत नांव रौ औ हकीम
म्हनै किणी खटारा साइकिल ज्यूं
रिपेयर करणी क्यूं चावै ?
जदकै म्हैं तौ आ तकात नीं जाणूं
म्हारी आतमा रौ बासौ
इणरै लारलै पेड़ै में छै के आगलै में ?
अर थाळी में परूसी थकी रोटी
म्हनै एल्प्राजोलालाम री टिकड़ी जैड़ी
क्यूं दीसै ?

माफ करौ बेलियां
म्हारौ उदर उतरौ नीं
जितरी म्हारी आतमा भूखी छै
म्हैं साची कैवूं—
मसालां रै परिपाक तेल में गरक
काचै आम री फांकड़ी सरीखौ
संसार नांव रै इण मरतबांन में
बेसुध पड़ियौ छूं म्हैं
म्हारी सुध तौ लौ भायलां !

आपूकी उमर रै किणी लुकमै में लपेटनै
म्हारौ सवाद तौ लौ !

मुमकिन छै थांरी जीभ रै किणी चटखारै
तिरपत व्है जावै म्हारी ई आतमा !

हस्ती रै परबार

भासा में नीं
कैयौ किणी बीजी सांनी थूं
म्हारौ कुमळावणौ घणौ जरूरी
थारै खिल-खिल जावण सारू !

कुमळायोड़ौ तद सूं
दीसूं दुनियां नै दूणौ हरौ
हेरतौ थकौ थनै
आपूकी हस्ती रै परबार
ले देख—
म्हैं नीं तोड़्या वाचा !

●●

'प्रहेलिका', सोनगिरी कुआं, बीकानेर (राजस्थान) 334005
मो. 9460022824

●शिवराज छंगाणी

लोकराज

औ थारौ राज
कै म्हारौ राज
थोथा बादळ मती गाज
कांई भेदभाव
अेक दूजै नै चाव
औ थारौ-म्हारौ राज
जद ई बाजै लोकराज।

बावड़ी

मरुथळ मांय
जळ रौ भंडार राखै
बावड़ी
पण आ घात-बावड़ी
कांई राखै
म्यानौ बतावौ— सा'ब।

कुल्हाड़ी

कुल्हाड़ी बणावणियां
कदैई कुल्हाड़ी नै
अहिंसा री सीख
कोनी दिराई
कोरा बाढै माथा
खेजड़ी रै डाळा तांई
मिनख तौ मिनख ई हुवै अर
कुल्हाड़ी उणां री
मददगार बाजै
गौतम-गांधी री
सीख क्यूं लाजै ?

अै कठफोड़ा

कठै जलम्या
अै कठफोड़ा
जिकां नै काठ फोड़ण सूं ई
फुरसत कोनी मिळै
कांई इणी सूं तौ
मिनखां सीख नीं लीन्ही ?
कठफोड़ा तौ कठफोड़ा ई हुवै
पण मिनख
कठफोड़ा बणै
जद अचूंभौ आवै।

पगरखी

पग री रिछा करै
बा पगरखी—
उणनै जूनी मत बणाव
जिकी फाटै अर नूंवी आवै
छेवट
है तौ बा ई पगरखी।

मिणिया

खूब गुड़कावै
माळा रा मिणिया
पण लोक दिखापै
मन मांयला
मिणिया फेर
जद आवै ला
उणरौ सुमेर।

●●

नत्थूसर गेट रै मांय, बीकानेर (राजस्थान)

● *दोय व्यंग*

आप जकौ मांडौ, वौ सौ टंच खरौ

बुलाकी शर्मा

सांवर दइया विविध विधावां में सांतरौ सिरजण करयौ पण 'भूमिका लेखन' पेटै वै साव उदासीन रैया। म्हारी समझ में इण री दोय वजै होय सकै। पैली आ कै वांनै 'भूमिका लेखन' री अघोसित सरतां जची कोनी होवैला। भूमिका लेखक सारू शुभ-शुभ लिखण री अघोसित सरत मानण री बाध्यता होया करै। वा बाध्यता नैतिकता सूं जुड़्योड़ी रैवै। जिकी किताब रौ लोकार्पण होवै, मतलब वा बजार में बिकण सारू लोंच करीजै, उण घड़ी बीं री खूबियां ई बताइज्या करै, खामियां कानी आंख्यां मीच्योड़ी राखणी वक्त रौ तकाजौ होया करै। लोकार्पण-समारोह में भायला-भापेला, भाई-गिनायत, साहित्य-संसार री मौजीज शख्सियतां भेळी होवै। वां बिचाळै जे खामियां गिणायोड़ी भूमिका बांची जावै तौ लेखक रौ कात्यौ-पींज्यौ कपास हुय जावै कै नीं, आप सरदार ई फरमावौ। सांवरजी रै सुभाव सूं सगळा वाकिफ हा कै वै खरा-खरी खळकावण में संकौ कोनी करै। जणै लेखक वां सूं 'भूमिका' लिखावण सूं पैला सौ बार सोचा-बिचारी करतौ, नफै-नुकसाण रौ तलपट मिलावतौ। तलपट मिलायां उणनै मालम पड़ जावतौ कै वां सूं भूमिका लिखावण में नुकसाण इज है। वै आपरै सुभाव मुजब खरा-खरी रै ओळावै कीं आंकौ-बांकौ लिख न्हाखयौ तौ उणरी फजीहत ई होवणी है। स्यात् इण वजै सूं लिखारा वां सूं आपरी किताब री भूमिका लिखावण सूं परहेज राखता।

दूजी वजै स्यात् आ हुय सकै कै सांवरजी आपरी रचनावां नै टाळ'र दूजै लेखकां री रचनावां नै इण जोड़ री नीं मानी हुवै कै वांरी भूमिका लिखण सारू खुद नै त्यार कर सकता।

जद म्हारै जिसै लेखक नै ई चार-पांच पोथ्यां री भूमिका लिखण रो 'गोल्डन चांस' मिल सकै तद वांनै इसा 'गोल्डन चांस' क्यूं कोनी मिल्या, कै वां आं नै 'गोल्डन चांस' नीं समझ विनम्रता सूं ठुकराय दीन्या, आ आडी म्हारै सूं ओजूं तांई सुळझी कोनी है। पण सांवरजी आपरी सरतां माथै अेक पोथी री भूमिका जरूर लिखी ही। बरोबरी रै बहादुरां री भिड़ंत रौ मजौ ई कीं निरवाळौ हुया करै। वै जिकी भूमिका लिखी उणरौ नांव राख्यौ— 'बेजोड़ भूमिका'। अेक बेजोड़ कवि री पोथी री 'बेजोड़ भूमिका'। बा भूमिका ही मोहन आलोक री पोथी 'सौ सोनेट' माथै। पोथी-लेखक अर भूमिका-लेखक दोनूं साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत। पुरस्कार हासल हुयां पछै कोई कीं लिखौ, कीं कैवौ, लेखक री सैहत माथै कीं फरक कोनी पड़्या करै। जिका

पुरस्कार पावण री उम्मीदवारी री लैण में ऊभा है, वां री सैहत माथै टेढी-मेढी टीप रौ तुरता फुरत असर पड़्या करै।

सांवरजी आपरी 'बेजोड़ भूमिका' में समीक्षकां अर आलोचकां री मस्ती रै मूड में खैंचाई करता कैवै, ''आपणै अठै तौ अैड़ा वीर समीक्षक ई है जिका फ्लेप मैटर बांच'र ई समीक्षा लिखै। भूमिका लिखणियै नै बहुश्रुत अर बहुपठित (बहुपतित नईं) होवणौ चाइजै— आ बात साव कूड़ी है। म्हैं अैड़ै विद्वानां नै जाणूं जिका पोथी बांच्यां बिना ई भूमिका लिखै।''

वां अै ओळ्यां मांड'र अेक तीर सूं दो निसाणा साध्या। पैलो, पैला आयोड़ी भूमिकावां पोथ्यां बांच्यां बिना लिखीज्योड़ी है। दूजौ, आ भूमिका पूरी पोथी बांच'र लिख्योड़ी है, जणै ई आ 'बेजोड़ भूमिका' है।

बेजोड़ पोथी माथै ई बेजोड़ भूमिका लिखीज सकै। भूमिका लेखक आलोचकां-समीक्षकां नै आईनौ दिखावै, जणै पोथी-लेखक किसा लारै रैवै। 'सौ सोनेट' रै अेक सोनेट री आं ओळ्यां माथै गौर फरमावौ :

आ मना बिरत है/मायड़ भाषा रा सिरजक/दो ओळ्यां मांड/जिका बणग्या आलोचक।

आलोचकां री आलोचना करण री हूंस आपरै मन में ई उठती होवैला पण इण हूंस नै मांय ई मांय लटपटावण देवौ, बारै भूल'र ई ना काढ्या। सांवरजी, आलोकजी जैड़ा साहित्य री धायी-धापी हस्तियां है। साहित्य में लूंठी ठौड़ है। इनाम-इकराम हासल कर्‌योड़ा मिनख है। अेक सांतरी पारी खेल'र गया परा अर दूजा उमर नै अंगूठौ दिखावता क्रीज माथै जम्योड़ा है।

आपां नै ओजूं घणौ ई हासल करणौ है। इनाम-इकराम रा सुपना देखतां रात नै नींद छाईं-माईं हुय रैयी है। आपां सारू आलोचकां री, समीक्षकां री वाणी इमरत वाणी है। वै जिकौ मांडै, आपां सारू सौ टंच खरौ। आलोचकां-समीक्षकां री नूरा-कुश्ती देख'र कदैई किणी अेक रौ पख लेवण री भूल ना कर्‌या। अैड़ी कुश्त्यां दिखावू होवै, बियां बां बिच्चै अणथाग हेत अर बेलीपौ हुया करै। राजनेता सभावां में दूजी पारटी रै राजनेतावां नै भूंडता रैवै पण वां बिचाळै अपणायत में कदैई कोई कमी कोनी हुया करै। राजनीतिक पारटियां रा कार्यकर्ता आपस में लड़ता-भिड़ता रैवै, पण आं कार्यकर्तावां रा मुखिया मतलब राजनेता कदैई आपस में लड़ता-भिड़ता कोनी दीखै। वै जाणै कै इण लोकतंत्र में देशहित में कणै किसी पारटी में जावणौ पड़ सकै। इण सारू राजनेता मतभेद राखै, मनभेद किण सूं ई कोनी राखै। सफळ राजनेता ई वौ ई हुया करै।

आपां सरीखा साहित्यिक-कार्यकर्तावां नै आलोचकां री जै-जैकार करतौ रैवणौ है। वै ई खैवणहार है। सांतरी रचना नै पोची अर माड़ी रचना नै काळजयी बतावण-बणावण में वांनै महारत हासल है। मांयली हूंस सूं लेखन करण री बातां कैईज्या करै, पण म्हारै जैड़ा तौ प्रसिद्धि सारू लिखै। अठै फेरूं म्हनै मोहन आलोक रौ 'अेक सोनेट' चेतै आय रैयौ है—

हूं बी मांडू पण इणरै साथै खास सरत/आ क्यूं राखूं कै और कोई हुग्यो प्रसिद्ध/तो म्हारै लेखन रौ कोई उद्देश्य सिद्ध नीं होसी/अर म्हारौ लिखणौ तौ गयौ व्यरथ।

आपां नै आपां रै लिख्योड़ै नै व्यरथ कोनी जावण देवणौ है। आलोचकां-समालोचकां नै राजी राख'र वां सूं खुद माथै सांतरौ मंडाय'र प्रसिद्ध हुवण रा जतन करणा है।

कविता रौ दफ्तर-टैम

इयां कियां हुयग्यौ है/आज रौ मिनख/उसूलां अर नेम-कायदां नै/रांधै अर खावै/बातां रा बतूळिया उडावै/रीढबिहूणौ हुय'र/मुनाफै रौ तलपट मिलावै/इयां कियां...

-सुण्या, थांनै साब बुलाय रैया है।

कविराज मेज माथै राख्योड़ी पेंडिंग फाइलां नै बिसराय'र मुग्धभाव सूं काव्य-सिरजण में डूब्योड़ा है कै इण बेसुरै सुर रै कानां में पड़तां ई वां री अेकाग्रता भंग हुयगी। वां झल्लाय'र साम्हीं देख्यौ। चपड़ासी हथाळी माथै अंगूठै सूं जरदौ रगड़तौ राफ्यां चौड़ी करयां वां साम्हीं मुळकै हौ।

वै बेराजी हुवता-साक बोल्या— साब नै कैय दै कै हाथ री फाइल सलटाय'र आय रैया है।

''वाह बाऊजी...।'' सूगली-सीक हंसी हंसतौ वौ बोल्यौ, ''कवि हुय'र ई कूड़ा बोल रैया हो! फाइलां तौ बापड़ी तीन दिनां सूं मेज माथै पड़ी धूड़ जीमण लाग रैयी है।... थे ओळावा छोडौ अर साब कनै हाजरी मांडौ। वै दिनूगै सूं सगळां माथै लाल-पीळा हुय रैया है। लागै मेम साब सूं डांट खाय'र आया है कोठी सूं।

वै चपड़ासी री बात सुण'र चिड़ग्या, ''जा, थूं थारै काम लाग। म्हैं मिल लेसूं साब सूं। घणौ ग्यान ना बघारया कर म्हारै साम्हीं, समझ्यौ!''

वौ जावतौ-जावतौ चूंठियौ फेरूं बोड़ग्यौ, ''म्हैं तौ समझ्यौ हूं बाऊजी... थे साब कनै जाय'र पाछा आय जावौ, पछै म्हैं थांनै देख'र घणौ समझ जासूं।''

वै उणरै मूंढै लागणौ कोनी चावता हा। इण खातर आपरौ मूंढौ बंद राख्यौ। पण वै दफ्तर रै वातावरण सूं कोझीतरयां भन्नायग्या, ''ओ साब कोनी, सांप है... हर टैम फण उठायां फुफकारतौ रैवै। दूजा सगळा उणरै साम्हीं पूंछ हिलावता रैवै। प्रतिभा री अठै जाबक ई कदर कोनी। ...कित्ती दमदार कविता सिरज रैयौ हौ... आयग्यौ साब रौ बुलावौ...!''

दफ्तर में वै बाबूजी है पण मूळ में वै कविराज है। चौबीसूं घंटा रा कविराज। दूजोड़ा बाबू नोटशीट लिख'र फाइलां निपटावै, क्यूंकै वै फकत बाबू है पण वै बाबू होवता थकां ई रूं-रूं सूं कवि है। इण खातर फाइलां कानी देखण रौ वां रौ मन ई कोनी करै। वै तौ दफ्तरी-टैम में ई काव्य-सिरजण करता थकां मा सुरसत री समरपण भाव सूं सेवा करता रैवै।

दफ्तरी-टैम वै बिरथा कोनी गमावै। फाइलां पैंडिंग भलै ई पड़ी रैवौ, पण वै काव्य-सिरजण नै पैंडिंग कोनी राखै। दफ्तरी-कागजां रौ सांतरौ उपयोग करता थकां वां माथै काव्य-सिरजण कर'र दफ्तरी-फोन सूं साहित्यिक भायलां नै वां रचनावां नै तल्लीनता सूं सुणाय'र, वां सूं सल्ला-सूत कर'र, वां नै दफ्तरी कम्प्यूटरी सूं फेयर करण ताईं री प्रक्रिया कर'र वै कवि-धरम रौ ईमानदारी सूं निभाव करता आया है। पण वां रै इण सत्करम में भांत-भांत री बाधावां उणी उणमान आवती रैयी है, जियां कै कळजुग सूं पैलां रा जुगां मांय रिसी-मुनियां रै धारमिक

अनुष्ठानां री बेळा कदैई कोनी डिग्या। दफ्तरी-टैम में काव्य-सिरजणा करणौ है तौ करणौ है। दफ्तर रा साथी वां रै सिरजण रौ मखौल उडाय'र कै साब दफ्तरी-काम टैमसर नीं करण रौ आरोप मंढ'र वांनै उसूलां सूं डिगावण री चेस्टावां कर'र थाकग्या पण वै आपरै सिद्धांतां, आपरै नैम-कायदां माथै द्रिढ है। वांनै सिरजण करणौ है तौ दफ्तर में इज करणौ है। इण टैम रौ इण सूं सांतरौ उपयोग दूजौ होय ई कोनी सकै। दफ्तर सूं निकळ्यां पछै वां कनै सैंस काम है। साहित्यिक गोष्ठ्यां में भागीदारी निभावणी पड़ै। भायला-पापेला सूं मिल'र हथायां करणी हुवै। घर रौ ई छोटौ-मोटौ काम साज'र घरआळी रै बी.पी. नै कंट्रोल राखणो पड़ै। जे घरआळी री अणसुणी कर'र वै कविता लिखण सारू पानौ लेय'र बैठ जावै जणै तौ रामजी ई बचावण सारू आवता डरपै। मा सुरसत रै इण साधक ऊपरां वा मा रणचंडी बण'र इण भांत दड़ूकै कै कविता लिखणी अळघी, कविता रौ नांव ई वां नै चेतै कोनी आवै। घर में सांयती बणायोड़ी राखण खातर वै घणौ टैम घर सूं बारै ई बदीत करया करै।

कवि-करम कित्तौ दौरौ है। ना घरवाळी इण काम रौ मान करै, ना ई दफ्तर वाळा। साहित्यिक गोष्ठ्यां में जरूर इण री पूछ हुवै। कवि-रूप सन्मान मिलै।

साब रै साम्हीं पेश हुय'र कविराज कम बाबूजी पूठा आपरै आसण मतलब मेज कनै पूग्या तद बेजा रीस में हा। दफ्तर रा साथी कीं टीप करै, उण सूं पैलां ई वै दड़ूक्या, ''कुरसी कांई मिलगी, खुद नै खुदा समझण रौ बैम पाळण लागग्यौ है। वर्क पैंडिंग क्यूं है... फाइलें सलटाते क्यूं नहीं... ऑफिस आवर्स में पर्सनल वर्क क्यूं करते हो... हूऽऽ आयो है म्हनै सुधारण नै... घणाई अफसर आया अर गया परा... म्हैं म्हारै चीलां ई चाल्यौ अर आगै ई इयां ई चालसूं... दफ्तर रा काम तौ इयां ई चालता रैसी पण म्हारी तरयां अेक कविता लिख'र बताय देवै तौ म्हैं उण री टांग हेटियाकर निकळण नै त्यार हूं।

साथीड़ा आपरै कवि-बाबू री पीड़ सुणता रैया अर मांय-मांय मुळकता रैया। साथ्यां बिचाळै ऊभौ चपड़ासी कीं कैवण सारू आपरै मूंढै नै कष्ट देवण री खैचळ करण लाग रैयौ हौ कै वै उण सूं बोल्या, ''अरे भायला, अेक कड़क चाय लेय'र आव, आपां दोनूं पीवांला। ...हां सागै अेक गुटकौ ई लेय'र आवै... साब मूड खराब कर न्हाख्यौ।

चपड़ासी राफ्यां चौड़ी करयां टुरग्यौ। दूजा साथी ई आप आपरै थान-मुकाम कानी चाल पड़्या अर कविराज आपरी रीस नै सांत करण सारू आपरी अधूरी कविता माथै पाछौ वर्क करण लाग्या— *इयां कियां हुयग्यौ है/आज रौ मिनख/खुद नै मानै गादड़ा/गिटणौ चावै वांनै/म्हैं नीं हूं गादड़ौ/म्हैं करूंला सिंघ रौ सिकार...।*

●●

सीताराम द्वार रै साम्हीं, जस्सूसर गेट रै बारै
बीकानेर 334004
मो. 9413939900

● *विनोद-वारता*

लाला टोपणदास रा अऊत

डॉ. मदन केवलिया

आंधड़ चाल रैयौ हौ। अप्रैल री सरुआत ई आंधड़ सूं होयी ही। मार्च तांई तौ शीतलहर ही, पण चाणचक मौसम रौ मिजाज बदळग्यौ अर आंधी सरू होयगी। लाला टोपणदास रा घरआळा सोच रैया हा, कै शीतलहर रै साथै लालाजी भी बह जासी, पण वै जीवण रै रणखेतर में मौत सूं भिड़ता रैया अर जीतब रा संधिपत्र लिखता रैया।

पण अचाणचक ई साइकिल सवार रै धक्कै सूं टें बोलग्या। लालाजी रा दोय बेटा है। भीमसेन तौ लूणकरणसर में रैवै अर छोटै बेटै मोहन साथै लालाजी रौ रैवास हौ। मोहन तीजी ताळ बडै भाई भीमसेन नै मोबाइल माथै खबर कर दी। संध्या होयगी ही। लालाजी री काया बरफ री सिल माथै राख दी। दूजै लोगां नै भी खबर कर दीनी। अखबारां में ई सोग समाचार भेजीजग्या।

आंगणै में लालाजी बरफ री सिला माथै लेट्या हा अर आसी-पासी घर-गळी रा लोग बैठ्या हा। आंधड़ हाल भी बाज रैयौ हौ। देर रात तांई गळी-मोहल्ला वाळा लोग आप-आपरै घरां गया परा। घरवाळा जीम-जूठ'र फेर आंगणै में आयग्या।

लालाजी रै मूंढै सूं थोड़ी चादर हटगी ही, वां देख्यौ कै दोन्यूं भाई भिड़रैया है। भीमसेन कैवै हौ— म्हैं बडौ बेटौ हूं, पण वसीयत में तौ म्हनै खास कीं कोनी मिल्यौ। थूं 'लायन शेअर' (बडौ हिस्सौ) लेय उड्यौ है। आ बात ठीक कोनी।

मोहन बोल्यौ— भाईजी, लालाजी तौ बरोबर-बरोबर पांती करग्या है। थे बतावौ, म्हारै कनै किसी चीज ज्यादा है ?

भीमसेन— म्हनै कांई ठाह कै सोनौ कित्तौ'क हौ ? नकदी भी थूं लेय बैठ्यौ है।

मोहन— कारज सारू पीसा भी तौ चाहीजै।

बेटां री झिकाळ सुण'र लालाजी दुखी होय रैया हा। आंधड़ फेर वांरौ मूंढौ ढक दियौ। लालाजी तौ आ इज चावता हा। वै स्कूलां में हैडमास्टरी करी ही। दोनूं छोरां नै ढंगसर भणाया हा। भीमसेन फिजिकल इंस्पेक्टर है अर मोहन बैंक में नौकरी करै। वां री मां तौ कद री गुजरगी ही।

मोहन री बीनणी लालाजी रौ खास ध्यान नीं राखती ही। फ्रिज रौ पाणी पीवण नै बै तरस जावता, पण बीनणी फ्रिज बंद ई राखती। कित्ती अनोखी बात है कै सागी लालाजी आज बरफ री सिला माथै पौढ्या है। लालाजी जीतब रौ चुरस हिस्सौ छोरां नै संस्कारी बणावा में काढ्या है, पण आज मरणै रै बाद वां नै लाग रैयौ है कै वां रा, खुद रा छोरा संस्कारी नीं बण सक्या है। अऊत है, कनखळ कर रैया है। इसै माहौल सूं तौ मरणौ ई चोखौ। भीमसेन कैय रैयौ हौ— औ डोकरौ घणौ चालाक अर बदमास है।

दोनूं भाई फेरूं कनखळ करण लागग्या।

❑❑

'राम नाम सत है', लोग मसाण कानी जा रैया हा। भीमसेन अर मोहन न्यारा-न्यारा जाय रैया हा। सगळा जणा होळै-होळै बंतळ करै हा। अचाचूक भीमसेन, मोहन कानी आयौ अर उणनै उठा'र धरती माथै नांख दियौ। अरथी रुकगी।

अेक स्याणौ मिनख वांनै समझाया— आ चोखी बात कोनी। हिस्सा-पांती रा फैसला पाछा घरां जाय'र कर लिया। अठै तमासा ना करौ।

लाला टोपणदास समझग्यौ कै आ टेऊंमल री आवाज है। बापड़ौ आखी जिंदगी म्हारौ साथ दियौ है, मरणै रै बाद भी...। लालाजी चुपचाप पड़्या रैया। लोग फेर 'राम नाम सत है' कैय'र आगै बध्या।

दोनूं भाई अेक-दूजै नै खारी निजरां सूं देख'र आगै बध्या। भीम हाल तांई बापू नै गाळियां देय रैयौ हौ। कदै-कदै वौ ताऊजी नै ई बकण लागतौ— ताऊ, कदैई म्हारै बाप नै चैन सूं रैवण कोनी दिया, पीसा मांगता ई रैया। थे घणा लालची हौ।

ताऊ आपरै बेटै साथै लारै आ रैया हा। छोरै नै उग्र हुवण सूं रोक भी रैया हा, नींतर अेक कांड भळै होय जावतौ। बडा-बडेरा भी इण रासै नै रोकण री भरपूर कोसीस कर रैया हा। टोपणदास कांई कर सकतौ हौ? आखी उमर लाचार ई रैयौ!

❑❑

बै लोग मसाण रै गेट मांय गया। आज भी भामाशाहां री कोई कमी नीं है। समाज सेवी घणा ई है। लकड़ियां बठै भळी करयोड़ी ही। अरथी नै ठावकी जाग्यां राखीजगी अर चिता बणावण सारू लोग जुटग्या।

अठीनै दोनूं भायां देख्यौ कै अबै मौकौ भी है, माहौल भी है अर मैदान भी खुलौ है। बै मन में 'अेक, दो, तीन' कैयनै आपस में जोर सूं भिड़ग्या। लोगबाग भी आसी-पासी खड़ा होयग्या अर मन में ई 'बेवकूफ' कैवण लागग्या। भीमसेन फिजिकल इंस्पेक्टर तौ हौ ई, सरीर सूं ई भीम हो। मोहन नै बुरी तरियां सूं पटक पछाड़्यौ। मोहन 'हाय-बोय' करण लागग्यौ। बडा-बडेरा आया अर वांनै न्यारी-न्यारी जाग्यां बैठा दिया।

लाला टोपणदास छोरां री करतूतां सूं घणा दुखी होया। टेऊंमल आयनै भीमसेन सूं कैयौ— बेटा, हाल तांई तो चिता बळ रैयी है, लालाजी री आतमा नै क्यूं दुखी कर रैया हौ? घरै जाय'र कळळ-हूंकळ कर लिया, अबार तो सांयती राखौ।

'ठीक है' कैय'र भीम खड़्यौ होयौ अर चिता कानी चाल्यौ। सगळा जणा खिणेक में ई डाफाडोळ हुयग्या अर 'भीम, भीम' कैय'र टेऊंमल पाखती आया। लाला टोपणदास भी घबरायग्यौ, कठै ई औ बळती चिता में कूद'र आतमहत्या तौ... आ सोच'र लालाजी आंख्यां बंद कर ली, बाकी लोग भी ऊभा होया। भीम हाथ जोड़'र चिता री परिक्रमा करण लाग्यौ अर फेर चिता रै आगै उठक-बैठक काढण लाग्यौ तौ लोग हंसण लागग्या अर फेरूं खुल'र हंसण सारू बारै गया परा। करुण रस में हास्य रस रौ पुट देखर लोगां री बोरियत खतम होयी।

बठीनै दूजौ सपूत मोहन सिगरेट पी रैयौ हौ। भायलां नै कैय रैयौ हौ— म्हारौ बापू सूधौ नीं हौ। म्हारी घरआळी सूं बळतौ हौ। बा बापड़ी बापू री पसंद री चीजां त्यार करती, पण ई खाऊ पीर नै कोई चीज पसंद ई नीं आवती। बा हर चीज-बसत री अंवेर करती पण औ डैण दिनूगै सूं रात तांई ढाळोढाळ तंग करतौ रैवतौ।

लाला टोपणदास भीम रै पिछतावै नै देख'र घणा राजी होया अर उठण री कोसीस करी तौ केई लकड़ियां हेठै पड़गी। मोहन नै सिगरेट पीतां देख'र लालाजी घणा दुखी होया अर सोचण लाग्या— इसी संतानां सूं तौ मरणौ चोखौ।

अबै भीम सिगरेट पी रैयौ हो। बाकी जणा शेयर मार्केट, महंगाई, फैशन, प्यार इत्याद री बंतळ कर रैया हा। राजनीति माथै तौ चीर-फाड़ घणी होय रैयी ही। अेक छोरौ कोयलै सूं भींत माथै लिख रैयौ हौ— जीना यहाँ, मरना यहाँ, इसके सिवा जाना कहाँ।

भीम आय'र चिता नै देखी, हाल ई पूरौ दाह-संस्कार नीं होयौ हौ— घरवाळा बेवकूफ है, भीम बोल्यौ— रात-भर बरफ री सिल माथै राखीजै कांई? इण खतर तो कारज पूरौ नीं होय रैयौ है। ओ मोहनियौ ई जिम्मेदार है।

लोगां नै डर लाग्यौ कै कठै फैर कनखळ नीं होय जावै। दो जणा जाय'र चिता माथै घी रौ पीपौ खाली करण लाग्या। लालाजी भी अबै जल्दी बळण री सोचण लाग्या। वांनै ई दुनियां सूं घघड़दी घणी होवण लागी।

'होयग्यौ दाह संस्कार' सुणतां ई सगळा जणा भाज्या अर चिता रै चहुंगमा चक्कर काट'र, थेपड़्यां नांख'र बारै जावण लाग्या। केई जणा नै हाल भी आसा ही कै अबै 'फ्री' स्टाइल कुश्ती' भायां में होवैली।

●●

'प्रतिमा', सी-68, सादुलगंज
बीकानेर (राजस्थान) 334003
मो. 9928375298

● *उपन्यास-अंस*

अवधूत

मधु आचार्य 'आशावादी'

समाज री बण्योड़ी हर रीत सूं ऊंधौ चालणौ इज अबै तौ गणेश रौ काम हुयग्यौ। लुगाई घणौ ई टोकती, पण उण माथै कीं असर नीं होवतौ। फगत ऊंधौ ई नीं चालणौ, ऊंधी बात नै नियम बणावण अर बतावण खातर ई हरेक सूं झिकाळ कर लेवतौ।

उण दिन गणैश घर रै बारणै चौकी माथै बैठौ आपरै पजामै रै टांका लगावै हौ। टांका लगावणा उणरी आदत ही, घर हौ या फेरूं चौकी, पाटौ हुवौ या चौक, हर बगत टांका लगावतौ इज दीखतौ। उणरौ पजामौ भलांई फाट्योड़ौ नीं हुवै पण सुई सूं टांकौ चालू रैवतौ। उण बगत सांमी सूं भीखजी आवै हा। बै हैडमास्टर हा, पण रिटायर हुयोड़ा। बांरी छोटी बैन नर्बदा देवलोक हुयगी। घर-परिवार रा लौग उणरौ अंतिम संस्कार कर'र आया ई हा। गणेश नै चौकी माथै बैठौ देख'र भीखजी रुकग्यौ

-अरे भीखा, अठीनै आई तौ!

-बोलौ।

-कुण मरग्यौ?

-इयां कियां पूछै गणेश? आपां री रीत है कै कौई मरै जणै पूछां- कुण चालतौ रैयौ।

-रीत नै छोड। चालतौ रैयौ रौ अरथ मरणौ ई हुवै। सीधौ-सीक बतावै नीं कै कुण मरग्यौ?

-थासूं माथौ लगावणौ घाटै रौ सौदौ है।

-तौ लगावै ई क्यूं, पूछ्यौ बा बता।

-म्हारी बैन नर्बदा चालती रैयी। काल रात नै संसार छोडगी। अबार उणरौ दाग कर चौपटै सूं सीधौ आयौ हूं।

-औ काम ठीक हुयग्यौ।

अबै भीखजी सूं रैईज्यौ कोनी। बै भूं-भूं रोवण लागग्या अर गणैश री चौकी रै सांमी ई सड़क माथै बैठग्यौ। गणेश सौची, आज तौ कोजी हुई। बतळावण खातर रोक्यौ अर गळै ई पड़ग्यौ। उण रौ तौ आपरौ स्वभाव हौ, बियां इज बौल्यौ।

–देख भीखा, म्हारै घर सांमी बैठ'र ना रोव। म्हारी लुगाई अजै ठीक है, थारै रोवण सूं कीं खोटौ नीं हुय जावै, इण खातर रोवणौ–कूकणौ बंद कर बाबलिया।

–तूं आ कियां कैयी कै नर्बदा रै मरण रौ काम ठीक हुयग्यौ।

इण बवाळ बिचाळै आठ–दस दूजा मिनख ई आयग्या। गणेश सोच्यौ, मामलौ बिगड़ैला, इण खातर बात सुधारण खातर बोल्यौ।

–अरे भाईड़ां, म्हैं तौ ठीक हुयग्यौ, इण खातर कैयौ। बा तौ घणी बीमार ही, फोड़ा भुगतै ही, मुगती मिळगी।

–गणेश! बैन रौ लाड कांई हुवै, थूं नीं जाणै। राखी माथै अबै कुण तिलक काढसी। पण थासूं माथौ नीं लगावूं। थूं तौ है अवधूत। थासूं समाज री बात करणी'ज पाप है।

भीखजी आ कैय'र रोवता–रोवता गया परा। गणेश सोच्यौ, लारौ छूट्यौ। बाकी लोग ई भीखजी री हां में हां मिलाई कै साच्याणी अवधूत है औ। अवधूत नांव सुण'र गणेश मुळक्यौ। उणनै लाग्यौ कै जिकै मारग चालण री बौ तेवड़ी है, लागै है मारग पकड़ लियौ। जीवण रौ मजौ तौ अबै इज आसी। समाज रा लोग जद उणनै अवधूत मानसी तौ उण रौ हरेक काम उणी निजर सूं देखसी। सीख देवणिया री भीड़ घणी हुय जासी अर भाई भी डरसी। उणरै छोरां री ई लुगाई नै तंग करण री हिम्मत नीं हुवैली। आज तौ तीर ठिकाणै लाग्यौ हौ। इणी खातर राजी हौ। गळी रै छौरै नै हेलौ पाड़'र मीठौ मंगायौ। और किणी नै नीं दियौ, खुद भरपेट खायौ। इण सूं उणरै अवधूत रूप मांय कीं बधोतरी ई हुई। उण दिन सूं गणेश रौ विस्वास बधग्यौ। बौ इण तरै रौ मौकौ जोवतौ जिणसूं उणरै अवधूत हुवण माथै मोहर लागै। अैड़ौ अेक ई मौकौ नीं चूकतौ। उणरी समझ मांय आयग्यौ कै समाज रा सगळा जणा कैवै उणसूं ऊंधौ इज कैवणौ है। ऊंधौ इज चालणौ है।

सूरज ढळतां ई गणैश री चौकी या साळ मांय जाजम बिछती। लोग आवता अर गप्पां लड़ावता, हथाई चालती रैवती। सगळा हंसी–ठट्ठै री बातां करता अर गणेश सगळा सूं न्यारौ चालतौ। उणरै तौ धुन ही अवधूत बणण री। इण खातर कुबध री ई बात करतौ। बां दिनां बाबू रामकिसन बैठौ हौ। दफतर री अगलै दिन छुट्टी ही, इण खातर गणैश कनै हथाई खातर आयग्यौ। कनै परफ्यूम री दुकान करणियौ सांवरौ ई बैठौ हौ।

हथाई देस री राजनीति सूं लेय'र अमरीका रै राष्ट्रपति तांई री चाल रैयी ही। सब लौरा मारै हा। इयां लागतौ, जाणै अमरीका रौ राष्ट्रपति इणनै इज पूछै अर फेर कीं बौलै। बातां चालतां घणी ताळ हुयगी जणै गणैश बीच मांय बोल्यौ।

–देख रामू म्हैं अबै चाय पीवूंलौ

–पीवौ चाय।

–पैलां ई कैयदूं, तूं मांग्यै मत।

–क्यूं अवधूतजी महाराज?

–म्हैं देवूं कोनी, इण खातर।

–देख, म्हैं तौ मांगसूं, तूं ना कर दियै।

–पण जद म्हैं पैलां ई मना करूं तौ मांगणी ई क्यूं?

–मांगणौ म्हारै सारू है, देणौ या नीं देणौ थारै सारू। तूं थारौ काम कर, म्हनै म्हारौ काम करण सूं क्यूं रोकै।

–आ तौ थारी गुंडागर्दी है। जद मना करूं हूं तौ मांगै इज क्यूं!

–आ थारी गुंडागर्दी है, मांगण सूं थोड़ी रोक सकै।

बस झगड़ौ सरू हुयग्यौ। बात-बात मांय गाळ्यां निकळण लागी।

गणेश नै ठाह ही कै चाय रौ कैवतां पाण रामकिसन ई चाय मांगैलौ, इणी खातर पैला सूं ई नीं मांगण रौ कैयौ। पण अबै तौ बात बधगी ही।

–जे म्हैं मांगण माथै ई चाय नीं दूं तौ तूं काई कर लेसी?

–म्हैं खुद रसोई मांय जासूं अर चाय बणाय'र लासूं।

–म्हैं लारै दूध ई नीं छोडूं तौ?

–बजार सूं दूध लेय आसूं।

–चाय-चीणी नीं हुया तौ।

–रसोई मांय है, काम में लेय लेसूं।

–आ जबरी कैयी। रसोई म्हारी, समान म्हारौ अर चालसी थारी? आ तौ नीं हुय सकै!

–तूं म्हनैं रोक ई नीं सकै।

–देख अबार रोकूं।

गणैश उठ्यौ। रसोई मांय सूं दूध रौ ठांव लायौ अर दूध बारै लाय'र नाळी मांय ढोळ दियौ।

–अबै कियां बणासी चाय, म्हैं ई देखूं!

–बजार कनै ई है, अबार दूध मंगाऊं।

–अच्छ्या।

गणेश मांय गयौ अर चाय-चीणी रा डब्बा लायौ। सड़क माथै जाय खाली कर दिया।

–अबै तौ चाय बण ई नीं सकै।

–नीं बण सकै तौ तूं पी'सी कियां?

–म्हनैं पीवणी नीं है। थनै पीवण नीं देवणी है। अब तौ तूं ई नीं पी सकै।

–भोजाई मरी तौ कीं नीं, भाई रौ तौ नखरौ म्हैं ई भांग नाख्यौ।

चाय री राम-कहाणी इण तरै सूं खतम हुई। कनै बैठा लोग बोलण सूं नीं चूक्या कै औ तौ साची अवधूत हुयग्यौ।

अेक दिन गळी मांय रैवणियै रामलाल री तबीयत खराब ही। सगळा रै सागै गणैश ई पूछण खातर गयौ। बांनै सुध-बुध नीं ही अर मांचै मांय पड़्या हा। कनै बेटा बैठा हा। सागै आळा तबीयत माथै घणी चिंता जताई। रामकिसन देख्यौ गणेश चुप है, तौ उणां रै बेटै नै कैयौ— इयां तौ ठाह ही है थनै कै गणैश कठैई आवै-जावै नीं। पण रामलाल जी सूं इण रा आछा संबंध हा इण खातर ठाह पड़ी जद इयै कैयौ कै म्हैं ई पूछण खातर सागै चालसूं।

–म्हारा बडा भाग है, बाऊजी रौ पूछण खातर गणेशजी पधारया।

–अै कित्ता'क दिनां सू मांचै मांय है, भाई? गणेश पूछ्यौ।

–अेक महीनै सूं ऊपर हुयग्यौ।

–डाक्टर कांई बतावै।

–किडनी फेल हुयगी इण खातर खा–पी नीं सकै। अबै बिना खायां तौ सरधा आवै कठै सूं।

–हां साच कैवै। पण अबै खाय'र करसी कांई। जवान हा जणै खूब माल ठोकता। बाजार मांय रोज कीं–न–कीं खावतां देखतौ हौ आंनै!

गणेश री आ बात हंटर मारण जिसी ही। बेटा कीं नी बोल्या, पण रामकिसन समझग्यौ कै औ आपरै असली रूप मांय आय रैयौ है। इण खातर बीच मांय टोकणौ ठीक लाग्यौ उणनै।

–सरधा हुवै जद तांई खाईजै। और कांई बीमारी बताई है।

–हार्ट ई काम कम करै। होळै–होळै धड़कै है।

–इलाज कांई चालै।

–महंगा इंजेक्शन लागै। गोळ्यां–कैप्सूल तौ सागै है इज।

–इण महंगाई मांय दवायां रौ खरचौ ई बौत बडौ है, भाई। धिन है थां बेटा नै, इतरी सेवा तौ करौ हौ।

गणेश फेरूं बीच मांय टांग अड़ाई।

–इणसूं आछौ तौ है कै रामलालजी नै मुगती पाय लेवणी चाईजै।

बेटां अर दूजा लोगां नै इण बात माथै फेरूं इचरज हुयौ।

–अरे इयां कांई देखौ हौ। म्हैं तौ साच कैवूं।

–केई हुवै जिका कपड़ा मांय लुक्योड़ा ई आछा लागै।

–पण उणां रौ चालणौ सांमी आवै। ज्ञानी आयां फेरूं सहन नीं हुवै।

–दुनियादारी ई कीं चीज हुवै।

–आपां थोथी बातां नै दुनियादारी रौ नांव देय दियौ। साच देखणौ, साच कैवणौ अर साच मानणौ इज दुनियादारी है। इणनै आपां भूलग्या।

–देख तूं तौ है अवधूत। थासूं बहस मांय पार नीं पड़ै।

–तौ साच कैवण दौ। रामलालजी बिस्तर माथै पड़्या फोड़ा पावै। घरवाळा सगळा सेवा मांय लाग्योड़ा है, अै अलग सूं फोड़ा पावै। पईसां रौ चूरौ हुवै जकौ न्यारौ। इणसूं आछौ तौ है कै अै मुगती पाय लेवै। आं रै ई ठीक अर घरआळां रै ई ठीक। पाछा सजोग हुय'र चालणा तौ है कोनी, फेरूं मुगती ई ठीक है। साच तौ औ इज है। आ बात थे ई जाणौ पण थोड़ी दुनियादारी मांय कैवौ कोनी। चावौ ई थे आ इज हौ, पण आ सोच'र नीं बोलौ कै समाज कांई कैवैला। म्हैं थांरै मन मांयली कैवूं जद म्हनै अवधूत कैय देवौ। कैवौ भलांई, कांई फरक पड़ै है, पण म्हैं साच कैवण सूं नीं डरूं।

सगळां रै मूंढै माथै ताळा लागग्या। बांनै ठाह ही कै गणैश साव साची बात कैयी है, पण उणरी बात मांय हामळ भर्‌यां समाज रा लोग जीणौ हराम कर देवै। इणी खातर उणरै कैयोड़ी बातां नै ठीक नीं कैवणौ फगत मजबूरी है। रामलालजी रा बेटा जाणता हा कै दवायां माथै मोकळा रुपिया लागै। रुपिया कनै नीं हा, पण इलाज तौ करणौ हौ, इण खातर ब्याज माथै रुपिया लाय'र दवायां खरीदता हा। मुगती मिल्यां सब ठीक ई होवतौ, पण कैवै तौ कैवै कियां? बेटौ जाणतौ कै गणैश मन री बात कैय दी, पण सगळां रै सांमी तौ कीं और इज बोलणौ हौ।

–थारै बेटौ कोनी नीं, इण खातर तूं इण तरै री बातां करै। म्हांनै ठाह पड़ै कै बाप मर्‌यां किण तरै रौ दुख हुवै। तूं है अघोरी, थनै कांई ठाह।

–क्यूं म्हारै तौ जाणै बाप हौ ई कोनी?

–तौ फेर तूं आ बात कियां कैवै?

–म्हारौ बाप मर्‌यौ तौ म्हां लोग किसा फोड़ा पाया कोनी। समाज री बातां मांय आयग्या अर आधौ घर बिकग्यौ। बाप गयौ अर सागै आधौ घर ई लेयग्यौ। औ साच है, इण खातर कैवूं। म्हनै अबै समाज रौ डर नीं लागै। थांनै लागतौ हुसी भाईड़ां!

गणेश रै इण जबाब रौ किणी कनै तरक नीं हौ। इण खातर सब चुप हुयग्या। रामकिसन नै औ सब अटपटौ लाग्यौ। इण खातर उण मून तौड़्यौ।

–अवधूत तौ इणी तरै री बातां करसी। छोडौ इणनै! भाई, तूं मन लगाय'र सेवा कर। म्हैं ई भगवान नै अरदास करसां कै थारै जीसा नै ठीक करै। बाकी तौ बियां ई हुसी जियां ऊपर आळै री मरजी हुसी।

बात नै खतम कर सगळां नै लेय'र निकळग्या।

बांरै गयां पछै रामलाल रै बेटै सोचणौ सरू कर्‌यौ। उणनै गणैश री बात साव साची लागी। समाज आ नीं देखै कै किण तरै सूं रुपिया रौ बंदोबस्त हुवै। जे थोड़ी ई इलाज मांय ओछ रैय जावै तौ बदनाम कर न्हांखै। पण मदद करण री तौ रत्ती–भर ई नीं सौचै। गणेश भलांई अवधूत कैय'र उडा दौ, पण सुझावै तौ खरी–खरी है। खरी सुणावण री आज किणी मांय हिम्मत नीं है, इणी खातर तौ साच सूं सगळा मूंढौ लुकावै।

दो दिन बाद ई रामलालजी चालता रैया। उणां रै मरण री बात सुणतां ई अवधूत तौ आपरी बात बोल्यौ ई।

–औ ठीक हुयौ। बापड़ै छोरां रौ तौ पिंड छूटग्यौ। ना सेवा–चाकरी अर ना पईसां रौ हाण। रामलालजी ई मुगती पायग्या, दौनूं ई सौ'रा।

इण माथै ई लोगां अवधूत री बात मांय हुंकारौ नीं दियौ। सब जाणता कै बात साव साची है, पण हामळ कियां भरै! रामकिसन आयौ।

–क्यूं भाई अवधूत, रामलाल रै अंतिम संस्कार मांय तौ चालसी!

–हां चालसूं। घरवाळा दौरापै सूं मुगती पाई है अर रामलाल जीवण सूं, इण खातर घणी खुसी री बात है। खुसी मांय तौ सामल हुवणौ ई है।

रामलाल री अंतिम-जात्रा मांय अवधूत सामल हुयौ अर आखै मारग मुगती री बात करतौ रैयौ। लोग उणनै अवधूत मान लियौ हौ, इण खातर बात रौ पडूत्तर नीं देवता। खाली सुणता अर हंस'र बात टाळ देवता। बातां-बातां मांय रस्तौ कटग्यौ। समसाण पूग'र सगळा जणां बिसांई खाई। अंतिम कारज सरू हुयौ। दाग सरू हुवण मांय खासी टैम लागगी। टैम घणी लागतां देख'र अवधूत बिना कोई नै कीं बतायां उठ्यौ अर समसाण सूं बारै निकळग्यौ। रामकिसन अर दूजा इचरज सूं देखता रैया पण अवधूत नै किणी री परवाह नीं ही। थोड़ी ताळ बाद पाछौ मांय आयौ, तौ उणरै कनै अेक कागद हौ। उण मांय सूं की उठावतौ अर खावतौ। समसाण मांय बैठा सगळां री निजरां उणी माथै ही। इण जगै कोई कीं खावै, आ कोई सौच ई नीं सकै, पण अवधूत तौ आ कर रैयौ हौ। लोग अवधूत नै देख'र खुसर-फुसर करता रैया, पण बौ आपरी मस्ती मांय चणा खावतौ रैयौ। रामकिसन नै सहन नीं हुयौ।

-थनै सरम नीं आवै। अठै अेक जणै रौ दाग हुवै अर तूं चणा खावै।

-इण मांय सरम री कांई बात? औ तौ गयौ ऊपर। म्हनै भूख लाग्योड़ी ही। कीं नीं खावतौ तौ म्हनै ई ऊपर जावणौ पड़तौ। म्हनै अबार ऊपर जावण री उंतावळ नीं है। भाई अर उणरै बेटां सूं हिसाब करणौ है। इण खातर भाया, भूख लागी तौ चणा लेय आयौ अर चाबूं हूं। इणसूं थांनै कांई हरज है? बांरौ कै थांरौ कोई खोस'र थोड़ी खाऊं हूं।

-पण कीं तौ सरम करणी चाईजै।

-करै सरम तौ फूटै करम। भूख लागै तौ खावणौ ई पड़ै। इण मांय झिकाळ क्यूं हुवै, भाई?

रामकिसन समझग्यौ कै घणी बात करी तौ बाकी लोगां मांय तमासौ बणसी। इण खातर बात बंद कर अेक कानी बैठग्यौ। अवधूत ई अेक खूणै मांय बैठग्यौ अर चणा चाबण रौ काम चालू राख्यौ। उण माथै किणी तरै रौ असर नीं हौ।

दाग पूरौ हुयौ तौ सगळा जणा सिनान खातर गया, पण अवधूत नीं गयौ। उणनै किणी कैयौ ई नीं। सब जाणता, औ तौ आपरी मरजी हुसी जियां करसी। सब जणा जद सिनान खातर गया तौ बौ उण जगै पूगग्यौ जठै दाग हुयौ हौ। राख नै देखण लागग्यौ अर चारूंमेर चक्कर काढण लागग्यौ। मनोमन कीं मंतर ई पढतौ रैयौ। अेक जणौ छानै-सीक आय'र आ देखी तौ अचंभै मांय पड़ग्यौ। जद दाग हौवै हौ तद तौ चणा खावतौ अर राख हुयगी जणै कनै आयौ है। थोड़ी देर चक्कर काट्या अर पछै थोड़ी'क राख उठाई अर आपरै चोळै री जेब मांय घालली। राख घाल'र समसाण सूं बारै निकळग्यौ।

●●

कलकत्तिया भवन, आचार्यां रौ चौक
बीकानेर (राजस्थान) 334005

● *कहाणी*

दाग़ आछा है

डॉ. मदन सैनी

रामफळ चिंतक है। रामफळ विचारक है। रामफळ ग्यानी है। रामफळ स्सौ-कीं जाणै, इण बात नै सगळा जाणै। किणी नै खाली बगत मिळै अर आपरी जाणकारी में बधेपौ करणौ चावै तौ घणै मान सूं रामफळ रै घरां जावै। म्हैं मास्टर हूं अर कामचलाऊ जाणकार्‌यां राखूं, पण रामफळ दांई ग्यानी नीं हूं। जद-कद ई मन मांय किणी बात नै लेयनै दोघाचिंती हुवै, तद म्हैं इज रामफळ सूं भेंटवारता कर'र उणरौ नितार कर लिया करूं।

उण दिन भोराभोर ई टी.वी. माथै विग्यापन देख्यौ— 'दाग़ आछा है!' म्हैं मुळक्यौ। दाग़ ई कदैई आछा होय सकै? खासा ताळ तांई चिंतन कर्‌यौ, पण इण आडी रौ अरथ समझ में नीं आयौ। छेवट म्हैं रामफळ रै घरै जाय पूग्यौ। रामफळ बैठक मांय बैठ्या अख़बार पढै हा। म्हनै देखतां ई हरख-बावळा हुयग्या। बोल्या, ''पधारौ!''

म्हैं रामा-स्यामा कर्‌या अर वां रै साम्हीं सोफै माथै बैठनै बोल्यौ, ''आज दिनूगै ई अेक विग्यापन देखनै कीं विचार मन मांय उमड़-घुमड़ रैया है। आप बतावौ, दाग़ आछा कियां होवै? म्हनै तौ 'दाग़' सबद में इज 'ग़' नीचै जकौ धब्बौ है, वौ नीं जचै। आप बतावौ दाग़ आछा कियां है!''

रामफळ मुळक्या। बोल्या, ''औ सबद फारसी रौ है अर जिणनै आप धब्बौ केवौ, उणनै 'नुक़्तौ' कैयौ जावै। इण सबद रा केई अरथ है, जियां— कळंक, चिह्न, लांछण अर धब्बौ आद। पण नुक़्तै रौ मतळब धब्बौ नीं हौ। औ तौ उर्दू रा सबदां में काम आवै, जियां— अख़बार...।''

अबार रामफळ री बात पूरी ई नीं होयी कै बारै सूं 'अख़बार' सबद री पड़गूंजां गूंजण लागी। रोळौ-बेधौ रामफळ अर वां रै पाड़ोस्यां बिचाळै इज होय रैयौ हौ। म्हे दोनूं मून धारली। रोळै-बेधै री आवाजां म्हारै कानां तांई पूग रैयी ही...।

''औ सूगलौ दाग़दार अख़बार म्हारै घर कानी क्यूं सरकायौ। म्हारै घर आगै म्हे कचरौ बरदास्त नीं करांला।'' रामफळ री जोड़ायत रा कंठसुर सुणीज्या।

''कचरौ कुण बरदास्त करै? थे नीं करौ तौ म्हे ई क्यूं बरदास्त करांला। औ कादै में पड़्योड़ौ अख़बार थांरै घर आगै हौ। थे इणनै झाड़ू सूं म्हारै घर आगै कर्‌यौ है। म्हैं खिड़की मांय सूं साव देख्यौ है। तद ई म्हैं बारै आई हूं।'' रामफळ री पाड़ोसण बोली।

''पाड़ोस आछौ होवणौ चाइजै, पण थे कियांकला पाड़ोसी हौ ? खुद सूगला रैवौ अर गळी नै ई सूगली कर राखी है।'' रामफळ री जोड़ायत फेरूं कैयौ।

''देखौ, म्हारै घर आगै सूगलवाड़ौ थे करयौ है। इण सूगलै अख़बार नै अठै सूं अळगौ करौ, नीं तौ ठीक नीं रैवैला।'' पाड़ोसण बोली।

''ठीक नीं रैवैला, तौ कांई नौ री तेरह कर देवौला ?'' अठीनै सूं फेरूं जबाब दिरीज्यौ।

''म्हैं देख रैयी हूं, लारलै अेक साल सूं आपणी बोलचाल कोनी। पण थांनै तौ बात-बेबात खेबी करयां बिना आवड़ै कोनी। इयां घणा दिन कोनी चालै।''

''खेबी म्हे करां कै थे करौ, आ तौ आंख्यां दीखती बात है। औ अख़बार म्हारै घर आगै आयौ तौ कियां आयौ ? कोई भूत तौ बगायौ कोनी, है तौ मिनख रौ इज काम।''

''अैड़ा काम मिनखां रा हुया करै है कांई ?''

''तौ हवा सूं नीं आय सकै कांई ?''

''म्हनै इणसूं कीं ई लेणौ-देणौ नीं है। म्हारै घर आगै सूं इणनै अबार रौ अबार नीं उठायौ तौ म्हैं पुलिस नै बुलाय लेवूंला!'' पाड़ोसण रीस सूं कैयौ।

''देख्योड़ी है थारी पुलिस, बुलाय लै। कांई बिगाड़ लेसी म्हारौ ?''

दोनूं पखां मांय दांता झिगळ चाल रैयी ही। रामफळजी बोल्या, ''आवौ, चाल'र देखां। अख़बार भी है अर उण माथै दाग़-धब्बा भी है। अब आछा है का बुरा, अै तौ जायनै देख्यां ई ठाह लागसी।'' कैयनै बै उठ खड़्या हुया अर म्हैं इज वां रै लारै-रौ-लारै टुरग्यौ।

दोनूं पाड़ोसणां रै झगड़ै नै अड़खै-कड़खै रा केई पाड़ोसी आपरै घरां रै बारणै सूं, तौ केई छातां माथै ऊभा देख रैया हा।

रामफळ अर म्हैं बारै आया, तौ दोनूं पाड़ोसणां बोलबाली रैयगी। रामफळजी आपरी जोड़ायत सूं बोल्या, ''गळी रौ कचरौ जाण-बूझ'र तौ कोई किणी रै घर आगै नांखै कोनी, हवा कै पसुवां रै पगां सूं किणी रै घरां आगै आय जावै, तौ इणमें किणी नै दोस नीं देवणौ चाइजै।''

पछै बै आपरी जोड़ायत सूं बोल्या, ''म्हैं साल-भर सूं देख रैयौ हूं। आपां रा पाड़ोसी साव सूधा है, आपरै काम सूं मतळब राखै। कदैई आंनै ऊंचा बोलतां म्हैं तौ नीं देख्या। फेरूं औस्था-परवाण ई अै आपां सूं बडा है, आपां नै आं सूं माफी मांगणै चाइजै। थूं आं सूं माफी मांग, म्हैं ई माफी मांगूं।'' कैवता थकां रामफळ पाड़ोसण साम्हीं हाथ जोड़्या अर कैयौ, ''म्हांनै माफ करौ अर इण सूगलै दाग़-धब्बावाळै अख़बार नै तौ म्हैं ई उठायनै कचरा-पात्र मांय फेंक देस्यूं।'' कैवता थकां रामफळ अख़बार कानी हाथ बधाया।

''नीं-नीं, आप क्यूं, म्हैं इज फेंक देस्यूं।'' कैवता थकां पाड़ोसण उण अखबार नै आपरा हाथां मांय उठायौ अर कचरा-पात्र कानी टुरगी। पाड़ोसी आप-आपरा घरां में बावड़ग्या। गळी मांय सुनैड़ छायगी। जाणै चीड़्यां मांय भाठौ पड़ग्यौ होवै।

●●

अनाथालय रै लारै, विवेक नगर, बीकानेर 334001
मो. 7597055150

● *कहाणी*

सोच

नवनीत पाण्डे

''औ कुण हौ ?''

''लेखक है म्हारै दांई ई..क्यूं....''

''कांई कैवै हौ ?''

''कांई नीं, इयां ई....''

''म्हनै उण री दीठ अर मुळक कीं ठीक नीं लाग रैयी ही।''

''इण में नूंवी बात कांई है ? म्हैं जाणूं। लारलै केई बगत सूं आपनै म्हासूं पिछाण अर बंतळ राखणै वाळा दाय नीं आवै।''

''इण में इत्ती करड़ावणै अर रीसाणी हुवणै री कांई बात है...म्हनै जियां लाग्यौ... बता दियौ।''

''म्हैं कोई दूध पींवती टाबर कोनीं मां'सा...सैंग समझूं आपरै मांयलै कळमस नै। म्हारा जी'सा अर म्हैं सबंध री वेळा साफ बतायौ हौ, म्हनै कवितावां लिखणै-भणणै रौ सौक है। पत्र-पत्रिकावां में छपणै रै साथै-साथै कवि सम्मेलनां-गोस्ट्यां में ई आवती-जावती रैवूं। उण घड़ी तौ थां इत्ता थान फाड़ै हा, बडी-बडी, ऊंची-ऊंची बातां करै हा, हरज कांई है ? आ तौ भोत ई चोखी बात है। लिखणौ-भणणौ सोख नीं, प्रतिभा हुया करै। उण वगत तौ आप सिरजण नै परमात्मा तुल्य कारज बतावता थकां कैवै हा कै नसीबआळां में ई अैड़ी ल्याकत हुया करै। अर आप रौ लाडेसर ! वौ तौ लट्टू ई व्हैग्यौ हौ नौकरी रै साथै म्हारी आ खूबी जाणनै। कांई-कांई फड़दां बांचै हा.... बगत रै बायरै नै देखता थकां भण्या-लिख्या घणकरा मायत आपरै छोरै खातर नौकरी वाळी बीनणी सोधै, जमानौ बदळग्यौ है अर कांई ठाह कांई-कांई...अर अबै थां इयां... ?''

''म्हैं कणां फिरूं हूं म्हारी वां बातां सूं। पण इण रौ मतलब औ थोड़ौ ई है कै....''

''कांई कैवौ ? साफ-साफ बतावौ नीं, आपरौ मतलब कांई है...म्हारै मन खोट है ? म्हारौ चरित्र ठीक नीं है ? कांई कैवणौ चावौ आप ? म्हैं उथफणै लागी हूं अबै इण नितूकै री झिकाळ सूं। भेळा ई सोवणौ चावौ अर ढूं... ई लुकोवणां चावौ। दोनूं बातां नीं हुय सकै

मां'सा... । अेकै समचै निस्तारौ करौ नीं आगी। कणैई कोई, कणैई कोई, इण रौ कोई अंत-फंत है कै नीं, क्यूं आपरौ माजनौ देवणौ अर दूजां रौ लेवणौ।

''थूं फालतू ई बात नै बधा रैयी है, फगत पूछ्यौ ई तौ हौ, कोई गुनाह कर दियौ कांई? कांई इत्तौ ई इधकार नीं है कांई म्हनै?''

''बात इधकार री हुंवती तौ कोई बात नीं, पण आ कोई पैली अर नूंवी बात नीं है। आप जिण टौन अर दीठ सूं आजकल बंतळ करौ...साफ लखावै, आपरै मन में म्हारै सारू कांई भाव है? म्हैं ई धान खावूं...स्सौ समझूं। म्हैं तौ उण पैलैड़ै दिन ई लख लियौ हौ आप रै मन रौ खोट... जणां थां म्हासूं अैड़ी बंतळ करी ही। अचंभौ तौ इण बात रौ है कै अबै अचाणचक इयां कियां? पैली तौ आप अैड़ा नीं हा, नींतर अैड़ी ओछी सोच ई ही। अबै कुण आप रा कान भरया है? किणरै सिखावै आपरै मन में औ खोट आयौ है? कोई तौ है, आप तौ कदैई अैड़ा नीं हा। ...आप बतावौ म्हनै। आपनै कणै अर कांई अणहूंती बात लखाई म्हारै में कै म्हारै वैवार में? कदैई अैड़ी ओछी बात कै सोच म्हारै मूंडै आई? नईं नीं? क्यूंकै उण बगत म्हनै आप माथै अपणै आपसूं घणौ पतियारौ हौ। म्हनै ठाह है आप ई इण बात नै मानौ, अणजाण नीं हौ। म्हैं तौ खैर टाबर हूं आप साम्हीं, कांई कैवूं पण आप तौ इत्ती उमर लीवी है, अै धोळा इयां ई नीं हुया है। आप ई हरमेस सीख दिया करता,''बीनणी! उणी घर सुख-स्यांती बापरै जिण घर हरेक रिस्तै में अेक-दूजै माथै पूरौ भरोसौ हुवै। भरोसै में तरेड़ां चालणै रौ मतलब है रिस्तां में फरक आवणौ अर सत्यानास हुवणौ।'' कांई हुयौ अबै वां बातां रौ। पैली तौ आप म्हांसू कदैई दपूचा नीं लिया अर नीं कोई ओछी बात ई करी... अबै आ बातां रौ मतलब साफ है कै आपरौ म्हांसूं भरोसौ उठग्यौ है... अर आप री इण बातां री वजै सूं घर री सुख-स्यांती रै साथै-साथै म्हारै मन में ई गोधम मचा न्हांक्यौ है। म्हारौ जी सांयत नीं रैवै। टाबर ई अचरज सूं घड़ी-घड़ी पूछै, ''कांई बात है मम्मी! आप आजकल इयां कियां हुयग्या। आप ई बतावौ! कांई उथळौ देऊं उणां नै। आ बात म्हनै ठीक नीं लाग रैयी है। आ कांई बात हुयी कै नितूकै इण ढाळै माथौ लगायनै म्हनै आपनै म्हारौ चरित्र प्रमाण-पत्र देवणौ पड़ै। थारै बेटै नै म्हां माथै पूरौ भरोसौ है, म्हनै कदैई नीं पाली, अबै ई वै तौ वैड़ा ई है, म्हां माथै पूरौ पतियारौ राखै, म्हारी सरावणा करै। फेर आप क्यूं नितूकै फगत इण बात नै लेयनै म्हांसू कांस करौ। म्हनै बतावौ! म्हैं आज तांई कणैई आप री सेवा-चाकरी में कोई कसर राखी, घर-परिवार-रिस्तैदारी में किणी नै कीं कैवणै-सुणनै नै मौकौ दियौ, फेर... ?''

''म्हासूं भूल हुयगी। लखाव अर ठाह नीं हौ कवितावां-धवितावां रै ओळावै कांई कौतक हुवै? गळी-मोहल्लै अर रिस्तैदारी में लोग कांई-कांई बातां बणा रैया है। आज तौ थारी बीनणी उण ठौड़ ही, आज उण ठौड़। आज उणरै साथै देखी, आज उणरै...।''

''हे भगवान! तौ बात अठै तांई पूगगी है। अर आप इण बातां माथै म्हां माथै...। कुण है म्हनै बतावौ तौ सरी! म्हारै सामीं लावौ! इत्ता साल व्हैग्या म्हनै कै आपरै बेटै नै तौ आज तांई कोई अैड़ी बात नीं कैयी। अबै ठाह पड़्यौ...आप नितूकै मोहल्लै री लुगायां भेळा कै मिंदर भगवान रा दरसणां सारू जावौ कै फेर आप-आपरै बेटा-बेटी-बहुवां री घाईघुती करण नै?

औ सैंग फगत आप अर आप रै साथ वाळी लुगायां रै मनां रौ कळमस है। म्हनै लागै म्हनै आपरै बेटै सूं बंतळ करणी ई पड़ैला।''

''कांई बंतळ करैला?''

''इण कळै सूं पिंड छुडाणै री कोई जुगत। घर में सुख-स्यांती अर हेत सूं जीवणै री जुगत। म्हारौ दम घुटणै लाग्यौ नितूकै री इण फालतू री झिकाळ सूं।''

''म्हैं सौ समझूं थारी नीयत। थूं न्यारी हुवणै रा ओळाव सोध रैयी है जिणसूं और घणी आजाद हुय म्हारै घर री इज्जत नीलाम कर सकै।''

''बस-बस, मां'सा! इयां कांई करौ! कीं तौ सरम करौ। थांरै लाडेसर री जोड़ायत, दो टाबरां री मां हूं म्हैं। जी तौ नीं मानै पण दूजौ कोई उपाय नीं लखावै। भगवान आप रौ भलौ करै! आप म्हनै मारग सुझा दियौ। इण कळै सूं तौ न्यारौ हुवणै में भलाई है।''

''आगी नीं कोठै री बात होठां। म्हनै ठाह हौ, आ ई तौ चावै थूं।''

म्हैं बोली हुयगी। समझगी, कोई सार नीं मां'सा सूं बंतळ में। उणां रै मन जिकौ खोट वास कर लियौ है, म्हारी कोई बात उणनै नीं मेट सकै। कैवत है, भरोसै रौ तागौ काचै सूत दांई हुवै, तूटग्यौ तौ तूट ई गयौ। कित्तौ ई आफळ करलौ, पाछौ नीं संधै, गांठ पड़्यां ई संधै। म्हारौ मन खराब हुयग्यौ सासू मां री बातां सुणनै। बियां तौ केई महीनां सूं मां'सा म्हारै लेखण अर सभावां, गोस्ठियां में आवणै-जावणै सूं रिसाणा हा। पण म्हारै समझ नीं आ रैयौ हौ, दस बरस व्हैग्या ब्यांव नै, पैली स्सौ-कीं आछौ-भलौ हौ। कठैई कोई मिलतौ अर म्हारी रचनावां री बड़ाई करतौ, सरावतौ तौ अै ई मां'सा कित्ता राजी हुवता अर गरब सूं म्हां साम्हीं जोवता अर कैवता,''भोत गुणी है म्हारी बीनणी।'' अर अबै अचाणचक अै खेला...अबै अैड़ौ कांई कीं हुग्यौ, कुण चम्मा चाळ्या है जिकौ अै अैड़ा हुयग्या। कोई ई होवौ, उणसूं कांई, पण आ कोई बात है? म्हैं साची हूं, म्हारै मन कोई पाप नीं है, कोई अैड़ी-वैड़ी बात ई नीं है तौ म्हैं क्यूं नितूकै इण ढाळै अै मैंणा सुणूं अर सैवूं। आपरै मनमाफक सुभाव मुजब किणी सूं दो मुळकनै बंतळ करणै, साथै बैठणै रौ मतळब औ कठै है कै कोई चक्कर है! नौकरीपेसा मिनख-लुगायां माथै इत्तौ पतियारौ, छूट तौ घरआळां नै राखणी ई चाइजै। म्हैं घणी ई सोची पण किणी नेहचै नीं पूग सकी पण इण बात रौ कीं-न-कीं तौ निस्तारौ अबै करणौ ई पड़सी। इण भांत कित्ता'क दिन धिकैला और कित्तौ सबर रैवैला।

''देखौ! आप मां'सा सूं बंतळ करौ नीं आगी। अचाणचक कांई हुयग्यौ वां रै। आ कोई बात है कांई, वै म्हासूं इण ढाळै बरताव कियां कर सकै।'' म्हैं सिंझ्यां बिसांई री वेळा इणां सूं बात करी।

''कांई बात करूं वां सूं। थूं जाणै तौ है वां नै कोई कीं नीं समझा सकै। वै हरमेस आपरै मत्तै चालता रैया है। थारै कांई है, म्हनै था माथै पतियारौ है, फेर क्यूं झिकाळ बधावै। कैवण दै, वै कैवै जियां, थूं तौ मस्त रैव। म्है हूं नीं थारै साथै।''

''कैवणौ भोत सोरौ है मस्त रैव। अठै इणां कनै रैवौ, इणां रा मैंणा अर बोल सुणौ, पछै मस्त रैयनै बतावौ तौ जाणूं थानै।'' म्हनै रीस आयगी।

''तौ थूं ई बता! कांई उपाय है इण राड़-झिकाळ रौ?

''म्हैं सोचूं। आपां आपां रै दूजोड़ै घर में शिफ्ट हुय जावां। अबार किराए चढ्योड़ौ नीं है, खाली ई तौ पड़्यौ है। म्हासूं अबै आ नित री कळै बरदास्त नीं हुवै। टाबर ई कांई सोचता हुवैला।''

''गैली हुयगी कांई। कीं ठाह ई है कांई बक्यां जा रैयी है? मां'सा सूं न्यारा हुय जावां। मां'सा नै अेकला छोड़ देवां? च्यार आखर भण नौकरी कांई लागगी, हियौ ई फूटग्यौ थारौ तौ।'' अै रीसाणा हुयनै कैयौ तौ म्हैं इणां नै देखती ई रैयगी। म्है गळत कांई कैयौ हौ? अर इण बात रौ भणाई, नौकरी सूं कांई लेवणौ-देवणौ।

''कांई बोल्या आप?'' म्हनै ई ताव आयग्यौ।

''म्हारै कैवणै रौ मतलब औ है कै औ कोई इलाज नीं है इण बात रौ। न्यारा हुयां, घर बदळ्यां कांई मां'सा री सोच बदळ जावैली? आपां नै नेहचै सूं सोचणौ-विचारणौ चाइजै।'' वै नरमाई सूं बोल्या, स्यात लखग्या हा, कै उणां रै मूंडै गळत बात निकळगी है।

''तौ आप आछी दांव नेहचै सूं सोच-विचार करल्यौ। म्हैं तौ अदायगी हूं इण नितूकै री कळै-झिकाळ सूं। अर म्हनै तौ म्हारी जाण में इण रौ फगत औ ई अेक उपाय ठीक लखावै है।'' म्हैं पसवाड़ौ फोरनै सूयगी।

''स्यात थूं ठीक ई कैवै। म्हैं खूब विचार कर्‌यौ, मां'सा सूं ई बंतळ करणै री सोची, पण मां'सा रै स्वभाव नै जाणता थकां म्हनै नीं लागै कै वां सूं बंतळ में कोई सार है। म्हनै ठाह है उणां रै मन में जिकी बात बैठगी है उणां री सोच मतैई बदळै तौ बदळै कोई दूजौ तौ बदळ ई नीं सकै। अर जित्तै उणां री सोच नीं बदळै, म्हनै थारी बात ई ठीक लखा रैयी है। इण में ई आपां सगळां रौ भलौ है।''

म्हारौ मन मोरियौ हुयग्यौ, दिनूगै उठतां ई उणां रै मूंडै अै ओळ्यां सुणनै। जी सूं अेक भोत बडौ बोझ उतरग्यौ जाणै।

●●

2 डी 2, पटेल नगर
बीकानेर (राजस्थान) 334003

आप अपरंच नै सदस्यता शुल्क, विग्यापन अर आजीवन चंदौ नीचै लिख्योड़ै ठिकाणै माथै मनीआर्डर कर सकौ या नीचै बतायै मुजब सीधौ बैंक में जमा करा सको :

श्रीमती हेमा अरोड़ा

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया : खाता सं. 31631771578

रिपिया जमा करा'र 9413961800 फोन माथै सूचना करौ।

● *कहाणी*

ममता

राजेन्द्र जोशी

सूरज मथारै आयग्यौ, नौ बजण आई है, हाल तांई कोनी उठी! मैडमजी रै काम में मोड़ौ हुय जासी।

बस थोड़ी ताळ भळै सूवण दै मां! अर ममता मूंडौ ढक'र पाछी आंख्यां मीच लीनी।

पथरणा उठावती ममता री मां हाका करती थकी, ममता रौ चादरौ खींच'र भेळौ कर लीनौ तद ममता उठ'र सीधा हाथ-मूंढा धोय'र मैडमजी रै घरै जावण खातर संभी, ''आज मैडमजी रै घरै काम कीं बेसी है।'' बा फटाफट दौड़ती-न्हासती मैडमजी रै घरै पूगगी।

ममता मैडमजी रै घरै पूगतां ई काम में लागगी अर मैडमजी नै कैवण लागी, ''मैडमजी, थे छोडौ, म्हैं अबार सगळौ काम सलटाय देसूं, आपरा मैमान कद तांई आसी.... ?''

''अरे आसी जणै आय जासी, ममता तूं तौ झाड़ू-बुहारी अर साफ-सफाई करलै, रसोई मांय जाय'र आटौ उसण, बाकी दही-बड़ा, पाव-भाजी आद ई टैमसर बणावणा है ई।'' अर जियां ई मैडमजी ममता साम्हीं देख्यौ, बोल्या, ''ओ हौ ममता! म्हैं तौ थनै अबै इज देखी है, आज कांई बात है घणी रूपाळी दीसै ? कांई बात है, आज कोई खास बात है कांई ? थारी बरसगांठ तौ कोनी ?''

ममता कैवण लागी, ''आज तौ म्हैं मैडमजी सीधी पथरणा सूं उठ'र आई हूं, म्हनै तौ कोई खास बात कोनी लागै।''

ममता आटौ उसणती-उसणती ई सोचण लागी कै आज मैडमजी रै मैमान आसी। वां मांय नीं जाणै कुण-कुण लोग हुसी।

मैडम जी विचारै कै ममता रै बणायोड़ी रसोई वां नै चोखी लागसी का कोनी लागसी। कठैई, ओळभौ नीं मिळ जावै। आज चोखै सूं चोखी बात सजणी चाइजै। ममता जकै दिन चोखी रसोई बणावै अर आयोड़ा मैमान रसोई री तारीफ कर जावै तौ मैडमजी ममता री पीठ थपथपाय'र उण नै इनाम दिया करै।

मैडमजी रसोई रै आगै सूं निकळती अेकर भळै भोळावण दीवी, ''ममता! ममता!!, रसोई ठीक सूं जोरदार बणायै।''

''हां-हां मैडमजी, थे रसोई री फिकर छोड दौ, थे तौ मैमानां री फिकर करौ।''

ममता कड़ाई में बेसवार घालती आपरै इनाम री सोच में ही कै मैडमजी रा दियोड़ा कपड़ा पैर'र आपरी भायली रै सागै उण रै सासरै जावणौ है।

काल इज ममता री मा आपरी पाड़ोसण जमना सूं बात करै ही कै थारी बेटी रै देवर सूं ममता री बात करौ तौ ममता नै ई धोरियै चाढ देवां। आवती देव-उठणी ग्यारस नै फेरा करा'र नचीता हुवां।

ममता री मा नै भरोसौ हौ कै मैडमजी ममता रै ब्यांव में कीं सायरौ लगावैला। जिकै सूं फटाफट हाथ पीळा कर'र मा केई दिनां सूं माथै रौ भार उतारण री बात विचारै ही। ममता सोचती-सोचती कांई कांई सुपनां देखती-देखती कड़ाई मांय बैसवार रौ सगळौ डब्बौ ई उंधाय दियौ।

मैडम जी फोन पर बात करता-करता मैमानां सूं बेगा आवण रौ कैवै हा।

''अरे ममता, ममता! थारी रसोई कद बणसी, मैमान तौ आवण वाळा है।''

''हां, हां मैडमजी, मैमानां रै आवण सूं पैली बण जासी। थे रसोई कानी साम्हीं ई ना जोवौ। म्हैं जाणूं अर म्हारी रसोई जाणै। थे तौ मैडमजी बाकी चीजां देख लेवौ।''

''तूं सुण तौ सरी, चार-पांच जणा आवैला। साब रा अफसर अर वांरी जोड़ायत, दो बेटियां अर अेक अफसर रौ बेटौ, जिकौ अमरीका सूं आयोड़ौ है। अमेरिका में बडौ आदमी है, मोटी पगार है। वौ देस आपरै खातर छोरी देखण नै आयौ है।''

मैडमजी आपरी आदत मुजब बोल्यां ई जावै हा,''वौ भारत मांय क्यूं आयौ है? उण नै तौ अमरीका मांय घणी ई छोरियां मिळ सकती ही। पण उण नै भारत रा रीत-रिवाज घणा चोखा लागै, उण नै घर रै संस्कारां में घणौ रस है। हरेक मिनख मांय आपरै देस री सुवास बसियोड़ी हुवै। जिणरै कारण ई वौ आपणै सै'र में परणीजणौ चावै। अर फूटरी बात तौ आ है कै बिना दायजै रै। इसा भला मिनख जोयां ई नीं लाधै। वांनै कीं नीं चाइजै, बस चावना है कै छोरी संस्कारित हुवै, चोखी रसोई बणावणौ जाणै, भलां ई कम पढी-लिखी हुवै। जिकै सूं वौ परणीजसी, उण री किस्मत बदळ जासी।''

ममता, मैडमजी री सगळी बातां सुण रैयी ही, पण तौ ई ममता रौ सगळौ ध्यान रसोई मांय लागग्यौ। इंयां तौ ममता बारवीं पास ही अर बी.अे. प्राइवेट करै ही।

मैडमजी री बातां सुण'र मन मांय सोचण लागी कै दिनूगै मैडमजी उणनै फूटरी तौ कैवता ई हा, कांई म्हारी किस्मत बदळ सकै। ममता मन-ई-मन केई सुपना देख्या अर रसोई बणाय'र बारै निकळी तद उण सार औ निकाळियौ कै म्हारी इसी किस्मत कठै?

''मैडमजी! खाणौ त्यार है। कद आवैला वै मैमान।'' इत्तै ई फोन री घंटी बाजगी, ''हां-हां बोलो...''

''साब रै अफसर री घरवाळी रौ फोन हौ।''

ममता पूछियौ, ''कांई कैवता हा।''

''बै टुरग्या है अर आधी घंटा मांय पूग जासी।''

अबै तौ ममता घणी राजी हुयी अर सीधी काच रै साम्हीं जाय'र देखण लागी अर खुद नै पूछण लागी कै म्हैं किसी'क लागू हूं? उण नै भळै मैडमजी री कैयोड़ी बात सूं लखायौ कै आज कीं बेसी फूटरी हूं।

लारै सूं मैडमजी आयग्या। बोल्या, ''चोखी लागै ममता, तूं तौ इंयां खुद नै देखै जियां आवण वाळा मैमान थनै इज देखण नै आय रैया हुवै। चाल बावळी, चाल! मैमानां नै जीमावण री टेबल त्यार कर लेवां।''

''रसोई तौ बणगी नीं, आज म्हैं रसोई सगळी थारै भरोसै इज छोडी है, रसोई रै साम्हीं झांक्यो ई कोनी, कठै ई ओळभौ ना दिराय दियै।'' मैडमजी कैवता-कैवता दूसरै कमरै मांय निसरग्या।

''आज थे देखौ तौ सही, जे कदास मैमान आंगळियां नीं खावण लागै तौ म्हारौ नांव बदळ दिया मैडमजी।''

ममता हाल तांई काच रै साम्हीं ई ऊभी-ऊभी अफसर रै बेटै बाबत मैडमजी री कैयोड़ी बातां सोच-सोच'र राजी होवती अर अमरीका जावण रौ जाणै कोई सुपनौ उण री आंख मांय अटकग्यौ।

घंटी बाजी।

''आवौ-आवौ, आपरौ स्वागत है, पधारो सा, पधारो।''

सा'ब अर मैडमजी दोनूं ध्रू मौड़ै रै साम्हीं हाथ जोड़'र घणै हरख सूं वांनै मांय आवण रौ कैवता-कैवता घर रै मांय लाया।

मैडमजी तो बिना कोई लाव-लगाव रै बोल्या, ''कै कोई कंवर सा'ब नै कोई छोरी पसंद आई कै नीं?''

सा'ब री मैमसा'ब दोरै मन सूं उत्तर दीनौ, कठै! इणनै तौ कित्ती ई छोरियां देखाळ दीनी। अेक ई पसंद नीं आई। अबै थे इज बतावौ कठै सूं लावूं इणरै खातर छोरी। सै'र रै बडै अमीरां रा रिसता आया। चोखी सूं चोखी छोर्‌यां देख ली, पण कंवर सा'ब नै तौ अेक ई कोनी जची। म्हैं तौ अबै थक-हार'र इणनै कैय दियौ कै थूं जाणै अर थारौ काम जाणै। थूं ई देख अर थूं कैसी जिकी भेळै आंटां में पड़वा देसां।''

''थारै अमरीका में इज ब्यांव कर'र म्हांनै बुलवाय लीजै, इणरी जिद है कै छोरी तौ इणी सै'र री ले जासूं।''

''ममता! ममता!! पाणी ला।''

''लाई मैडमजी, अबार लाई।''

होळै-होळै, अदब रै सागै ममता पाणी ल्याई अर मुळकती-मुळकती सगळां नै पाणी रौ नोरौ करती थकी पाणी पायौ। कुंवर साब नै पाणी री तिरस नीं होवण रै पछै ई ममता रै अदब अर मनवार रै कारणै पाणी री तिरस लागगी।

फेर कांई ममता किणी रै कैयां बिना ई जीमावणै री त्यारी मांय लागगी। वा मैडमजी रै हुकम नै ई उडीकण लागी।

थोड़ी ई देर में मैडमजी जीमावण रौ हेलौ करियौ।

बिना टैम लगायां, टेबल पर देसी तरीकै सूं खाणौ लगावणौ सरू हुयग्यौ।

मैडमजी रा होस उडग्या, ''ओ कांई ममता! बाजरी री रोटी, फळियां रौ साग! खीचड़ौ अर इमलाणी! बाकी रसोई और तौ ल्या, पनीर, प्याज, चपाती।''

ममता बोली, ''आज मैडमजी राजस्थानी रसोई है, थे ई तौ कैयौ हौ कै अफसरजी रा कंवर साहब अमरीका सूं आयोड़ा है।''

इण बीच में कुंवर सा'ब खड़ा होय'र बोल्या, ''अबै कीं नीं चाइजै, हूं जिकी रसोई री उडीक राखै हौ वा आज मिळगी।'' अर कुंवर सा'ब जीम परा'र आपरी मां नै खुणै में ले जाय'र साफ कैयौ कै आ छोरी ममता म्हारै जचगी, इण नै पूछौ अर बात करौ।

कुंवर सा'ब री मां मैडमजी रै साम्हीं आप री बात राखी कै आप री ममता रौ ब्यांव म्हारै कुंवर सा'ब सागै हुवैला अर थांनै म्हारी बात राखणी पड़सी।

''पण! पण!!''

''नीं, नीं, कीं नीं है, आ बात पक्की।''

''म्हैं हांल तांई ममता री मां नै तौ पूछ लेवूं।''

''अछ्या तौ ममता आपरी बेटी नीं है।''

''नहीं ममता म्हारै अठै काम करै।''

कुंवर सा'ब झटकै सूं खड़ा होयग्या।

''चालो, अबार रा अबार ममता रै घरै चालौ, बात आज ई पक्की होसी।''

●●

तपसी भवन, नत्थूसर बास
बीकानेर-334004
मो. 9414029687

सुनील गज्जाणी

जथारथ

''माँ, कित्तौ आछौ हुवतौ कै आपां ई रिपियां वाळा हुवता अर आपां रै ई इयां ई नौकर-चाकर हुवता। पछै आपां ई गिदरां माथै इयां पसर'र सूवता, अैस करता!''

''सगळी करमा री बातां है... चाल बेगी-बेगी बासण मांज, औरूं ई हाल तांई खासौ खोरसौ करणौ पड़्यौ है!''

माँ-बेटी बासण मांजती आपस माय बंतळ करती ही!

''माँ! इण घर री सेठाणी कित्ती फोफस है, कित्ती जाडी है अर इण घर री बहुवां नै देखौ कित्ती बण-ठण'र इन्नै-बिन्नै फरळा मारती फिरै। पतळी पड़ण सारू लप-लाई करै, कसरत करै। जे घर रौ कामकाज, चूलै आगलौ काम, बरतण-भांडा मांजण रौ काम करै तौ इयां कसरतां करण री लोड ई कोनी पड़ै, है कै नीं मां!''

''बात तौ थारी आछी है। अै तौ बरतण-भांडा अर चूल्हौ-चौकौ नीं करसी तौ ई चाल जासी, पण जे आपां बरतण-भांडा नीं मांज्या, तौ भूखां फगत आपां नै मरणौ पड़ैला।'' मां उथळौ दियौ।

ड्यूटी

''साब! म्हैं इसौ कांई कर दियौ, जिकौ थे म्हनै नोटिस झिलाय दियौ?'' बूढौ चपड़ासी बोल्यौ।

''थूं तौ थारी जाण में घणी ई ड्यूटी करी ही, पण ठबक तौ म्हारै लागगी नीं। सगळौ कात्यौ-पींद्यौ कपास कर नांख्यौ।'' अफसर रातौ-पीळौ होयौ।

''साब! म्हैं समझ्यौ कोनी!''

''ना थूं बिरखा मांय निरा दिनां सूं आलै होयोड़ै अर सड़तै फर्नीचर नै सावळ ठौड़ धरतौ अर ना नूंवा फर्नीचर मोल लेवण री अप्रूवल कैंसिल हुवती!'' अफसर ताव खायग्यौ।

●●

बीकानेर (राजस्थान)

● *नाटक*

सुपनां में नीं सीर

हरीश बी. शर्मा

पात्र परिचै

हजूरौ	:	अधखड़ उमर रौ अेक मनमौजी फकीर। मांग'र खावै अर टाबरां नै कथावां सुणावै।
राजियौ	:	सुंदरपुर रौ नौजवान। सुभाव रौ हठी।
महात्मा/भगवान	:	चैरै पर तप रौ तेज।
राजा विक्रमजीत	:	सुंदरपुर रौ राजा, बूढापै री औस्था
राजकंवरी	:	सुंदरपुर री राजकंवरी
गिरधारी, सुगनियौ नंदियौ, चंदर	:	पंदरै-सौळै बरसां रै टाबरां री टौळी।

छोटी-छोटी भूमिकावां खातर चार-पांच दूजा जका राजम्हैल में दरबारी, राजकंवरी रा जासूस अर भगवान रै दूत री भूमिका निभावैलौ

दरसाव : पैलौ

(मंचीय सज्जा अेक बस्ती री है। मलंग हजूरौ गीत रै बौल सागै बस्ती में पूगै अर उण नै देखतां ई टाबरां री टोळी दौड़ती आवै अर घैर लेवै। टाबर हजूरै रै आणै सूं हरखता थकां नाचै-गावै)

चाल हजूरा हाल हजूरा
आज दिसावर टाळ हजूरा
सदा करां बातां दुनिया री

जाणां खुद रा हाल हजूरा
चाल हजूरा...
राजी रै हर हाल हजूरा
करै न कोई सवाल हजूरा
सैं कीं जाणै, सैं की समझै
थारौ बडौ कमाल हजूरा
चाल हजूरा...
लाग-लपीटी दाय न आवै
बात करै है सीधी-साची
ना है कागद ना है लेखी
कैयी, सुणी कांई देख हजूरा
चाल हजूरा...
दुनिया है जाणी-पहचाणी
सुपनां री माया अणजाणी
जाग हुवै तौ साथ छौड दै
सूता नै बिलमाय हजूरा
चाल हजूरा...

(टाबर अेक सागै हाकौ करता हजूरै नै घैर लेवै)

ओय हजूरौ आयग्यौ, होय हजूरौ आयग्यौ
बातां रौ सिरदार मलंगौ, होय हजूरौ आयग्यौ

हजूरौ : अरे आयौ तौ हूं पण इण बार लायौ नीं हूं कीं भी। कीं भी नीं। देख ल्यौ चायै। देखौ-देखौ, आज म्हारै झोळै में रंग पलटै जकौ नीं तौ डेडरियौ है अर ना ई अगन-भाटौ। कीं भी नीं जकै सूं थांनै बिलमा सकूं। पण, फेरूं ई थांनै निरास नीं करूंलौ। आज थांनै सुणाऊंला कहाणी। पण कहाणी सूं पैली थांनै करणौ पड़ैलौ म्हारौ काम। भूख लागी है जोरदार। सैं आपू-आप रै घरां जावौ अर ठाह करौ कै कीं है या नीं। खावण खातर जकौ कीं है, लेय आवौ! पैली कीं पेट रै पेटै। ऊंदरा गोधम मचाय राखी है पेट में।

(हजूरे की बात सुण'र टाबरिया हंसण ढूकै तौ हजूरौ मीठी दाकळ देवै।

रे तेराणी ठौक्या, कूं जकी बात समझ नीं आवै अर हंसै, दांत दिखावौ? नुगरां! जावौ पैली कीं न कीं लेय'र आवौ। जकौ भी बचियोड़ौ है, लेय आवौ!

गिरधारी : (आंगळी सीध करतौ पूछै) फेर बात तौ सुणावोला नीं?

हजूरौ : (माथै पर तईड़ौ लेवतौ) अरे पैला कीं लेय'र तौ आवौ। सारा आप रौ सुवारथ देखै। दिखण में अै नेन्हा-नेन्हा टाबर है, पण पैली वादौ करौ इयां सूं! कहाणी सुणावौ तौ खावण नै लास्यां। अर जे म्हैं भूख स्यूं मर जाऊं तौ? कहाणी तौ म्हारी बण जावैली। देख ल्यौ। दोखी थे हुवोला। थां सगळा माथै दोख आवैलौ कै

हजूरौ भूख स्यूं मरियौ। हत्यारा हा अै टाबर। इण खातर भागौ अर म्हारी भूख मिटावण रौ जतन करौ। पेट रै आगै कहाणियां री भूख कीं नीं है। पैली पेट-पूजा अर फेरूं काम दूजा। (टाबरां नै आप-आपरै घरां रवाना कर मंच रै आगै आवै) आ भूख भी। जाणै, कितरा रंग दिखावै। पण हूं कांई समझूं। इयां थोड़ी है कै म्हनैं भूख लागै नीं पण जद भी लागै रोटियां साम्हीं हुवै। अब देख ल्यौ। अठै भी वा इज बात। सारौ गांव म्हनै हजूरै रै नांव सूं जाणै। मस्त मलंग। फकीर बाबौ साच तौ आ है कै म्हनै ई ठीक सर याद नीं है कै म्हैं ई गांव में आयौ कद? याद अेक ई बात। औ म्हारौ गांव, म्हैं इण गांव रौ।

सगळा जाणै, हजूरौ नीं तौ कदै कोई काम करियौ अर ना करै। गांव वाळा पैली-पैली समझायौ, काम धंधौ करलै। अपां रै क्या? मानग्यौ पण करै तौ क्या करै हजूरौ। अेक बोल्यौ, चाय रौ खोखौ लगाय लै। सवाल तौ अैंठा कप कुण साफ करै? हजूरौ तौ आज करै न काल। फेर किणी कैयौ कै खेती करलै। तीजौ बोल पड़ियौ, खेत में डांगर घूमैलौ

...तौ बात इत्ती कै हजूरै खातर कोई काम नीं। गांव रा मुखियाजी फैसलौ सुणाय दियौ कै सारौ गांव थारौ। दोय टंक री रोटी इण गांव खातर कोई बडी बात नीं है। घूम-फिर, मौज कर। भूख लागै तौ किणी नै हेलौ कर दियै।

बस, वौ दिन अर आज रौ दिन। गांव रा माइत म्हारा माइत अर टाबरिया म्हारा टाबर। साच तौ आ है कै म्हैं म्हारै मांय पळतै टाबर नै कदै बडौ हुवण इज नीं दियौ। हमेशा टाबर रैयौ अर इण कारणै ई टाबरां में इज रैवूं। (दरसकां साम्हीं देखतौ) अर थांनै भी कहूं हूं कै आप रै मांय बैठै टाबर नै सदा जींवतौ राखजौ अर इण रौ तरीकौ भी बताऊं?...तौ सुणौ, सदा टाबरां रै बीच में रैवौ। अर हां, उणां नै ज्ञान मती देवौ, उणां री सुणौ। बतावौ कम अर निकळावौ घणौ। घणौ मजौ आवैलौ। अपां रौ ज्ञान तौ नकली है सौ पड़तां पर पड़तां। साफ बात तौ वै ईज कर सकै। (टाबरां रै आवण रौ हाकौ) ल्यौ आयग्या म्हारा बेली। आयौ रे...

(सगळा टाबर आप-आप रै घरां सूं आवै अर आप रै सागै भांत-भांत री चीजां ल्यावै। किणी रै हाथ में साग तौ किणी रै हाथ में रोटी। कोई लायौ भुजिया, तौ कौई लायौ तरकाकड़ी। सगळी चीजां हजूरै साम्हीं राख देवै)

हजूरौ : (जीमण ढूकै तौ सागै-सागै टाबरां सूं बंतळ भी करै) वाह! कांई साग बणायौ है, वाह भइ वाह! अबार ताणी तिरवाळौ दिसै। कढी तौ लाजबाव। थारी मां रोटियां तौ जमा ई पतळी-पतळी बणावै रे! सुगनिया, इसी दस खा लूं तौ भी रंज नीं आवै। अर औ देख गिरधारी राम रोट। है क नीं थारी मां रै हाथां बणियौ? आधी भूख तौ इण में ही पूरीजगी।

सुगनियौ : (बात खातर अधीर हुवतां थकां) हजूरा जी! होळै-होळै क्यूं खावौ हौ। बेगा-बेगी निवेड़ौ नीं।

हजूरौ : (रोटी नै चाबतौ-चाबतौ रुकै अर आंख्यां काढ़तौ सुगनियै नै देखै अर फेर अेक-अेक कर सगळा नै देखतौ) जीमण तौ सुख सूं दो छातीकूटां! थे तौ सगळा जीम-जूठ निरवाळा हुया, म्हारी बारी आई जद खतावळ करौ। स्याणा घणा हौ।

नंदियौ : (बात काटै) नीं वा बात नीं है, रात घणी हुयगी तौ मां फेर हेलौ पाड़ैली अर आधी बात बिचाळै छोड'र जावणौ चावूं कोयनी। थांरी कहाणियां म्हांनै घणी दाय आवै।

चंदर : (गळै नै आंगळी सूं पकड़'र सौगन खावण ज्यूं) हजूरा! थांरी बात सुणै बिना मन नीं लागै। जकी रात रा थे कोई कहाणी सुणावौ हौ नीं, उण रात मन हरख सूं तिरिया-मिरिया हुय जावै।

हजूरौ : (मुळकतौ) क्यूं? इस्यौ कांई है रे बातां में?

गिरधारी : (कांधा उचका'र) ठाह नीं, पण नींद ई नीं आवै केई दफै। जद थे नीं आवौ तद म्हे सगळा मिळ'र कहाणी पाछी याद करां।

हजूरौ : (चळू करतौ) आ बात!

सुगनियौ : (कीं सौचतौ थकौ) हां, अर जे बात सुण'र जावां तौ जोरदार नींद आवै अर सुपनां भी मीठा-मीठा आवै। ठाह ई नीं पड़े कै कद दिन ऊगग्यौ। केई दफै तौ इयां लागै कै सुपनै में ई सै चालै है।

हजूरौ : (पाणी पी'र लोटौ पागती राखतौ) तौ औ रोळौ है। डूमणी रै रोवण में औ राग है। चलौ बतावौ। सुपनै में कुण आवै?

चंदर : (आंगळी सूं गिणावतौ) सुपनां में आवै भूत, पलीत, परी अर राजकंवरी, सै कीं। जका थे सुणावौ। वै सब।

हजूरौ : साचाणी?

गिरधारी : (चहकतौ) हां, हजूरा, अेक बार तौ सुपनां में थे भी दीस्या हा।

हजूरौ : हूं दीस्यौ? अर वौ भी सुपनै में? फेर... फेर कांई हुयौ?

गिरधारी : हुवणौ फेर कांई हौ। मारती मां! (हंसतौ) अरे सुपनै में थे मांगी खावण नै रोटी। हूं नींद में इज उठ'र चूल्है लारै रोटी रै कटोरदान मांय सूं रोटी काढण लाग्यौ।

हजूरौ : कांई बात करै!

गिरधारी : हां हजूरा! वा तौ आधी नींद रै कारणै बाटकी नीचै पड़गी अर खड़कै सूं मां जागगी। मां सोचियौ कै ऊंदरौ आयौ है, तौ वा दौड़ती आई। आगै देख्यौ तौ हूं हौ। मां आई अर बोली, 'रे गिरधारिया, रोटी जीम'र तौ सुयौ हौ। फेर भूख लागगी के?' मां री अवाज सुण'र म्हारी नींद उडगी। मां नै सगळी बात बताई तौ पैला तौ घणी ताळ तांई हंसती रैयी। पछै बोली कै अबै आइंदा सूं सुवण सूं पैली पग धोय'र सूया कर। आज तौ रसौई में गयौ। काल कठै आधी रात रा बाखळ कांनी ना बईर हुय जायै। उण दिन रै बाद अेक आदत और घालणी पड़ी। सूवण सूं पैली पग धोवण री। जिकै दिन पग नीं धोया मां पथरणा सूं उठा'र पग धोवण भेजै अर ऊपर सूं मैंणौ भी देवै कै नीं जणै फेरूं जावैलौ हजूरै खातर रोटी लेवणै।

हजूरौ : (हंसै, सगळा हंसण लागै) साच ई तौ कैवै। सोच, जे तूं उण दिन बस्ती में निकळ जावतौ तौ ? घरवाळा री चिंत्या जायज है, पण म्हैं चिंत्या सूं मुगत। म्हारी चिंत्या आ ही कै थांनै अबै कहाणी किसी सुणाऊं। अब याद आयगी।

नंदियौ : हूं...। गिरधारी री बात में किसी कहाणी है। वौ तौ आपबीती बताई है।

हजूरौ : (आप री जगां सूं खड़ौ हुवै अर टाबरां रै लारै जाय'र उणां रै कांधा पर हाथ धरतौ) तौ सुणौ, आज जे अपां बात इज सुपनां री करां तौ कियां रैवै ? सोचौ कै गिरधारी रै सुपनै में तौ हूं आयौ। अब म्हनैं कांई ठाह कै गिरधारी नै कांई सुपनौ आयौ। गिरधारी कूड़ भी तौ बोल सकै। बात तौ तद मानणी में आवै जद जिकौ सुपनौ गिरधारी नै आयौ, वौ म्हनै आवै। मतळब, कै जकौ सुपनौ गिरधारी नै आयौ वौ म्हनै भी आवै अर म्हनै आयौ तौ गिरधारी नै भी आवै। बताऔ जे इयां हुय जावै कै जकौ थारै सुपनां में आवै उण रै सुपणा में थे ई जावौ तौ कियां रैवै ?

गिरधारी : (सेंगमेंग) हेंऽऽ ? इयां कियां ? हूं तौ कीं समझ ई नीं सक्यौ।

हजूरौ : (व्यंग्य सूं) हें ढुळगी डफा ! पूछूं जकी बात रौ पड़ूत्तर तौ दै ! गिरधारियौ अर तूं (सुगनियै साम्हीं देखतौ) यूं चमगूंगा हुय'र क्यूं बैठग्या। जबाब नीं ढूक्यौ कांई ?

सुगनियौ : (भोळपणै सूं) बात समझ नीं आई हजूरा, सुपनौ तौ ठीक। अठै तांई तौ सारी बात समझ आयगी। सुपनौ म्हनै आयौ, औ भी ठीक। पण थनै भी बिस्यौ इज सुपनौ आवै। आ बात उपरियां कर निकळगी।

हजूरौ : (सुगनियै रै कांधा हाथ धरतौ) उपरियां कर। अरे तू कांई, थारै बाप रै भी उपरियां कर निकळ जावै आ बात। उण नै भी कैवण सूं समझ नीं आवैली। पण म्हैं समझाऊं तौ थारै भी समझ आय जावैली। तौ सुण, कै जे थनै सुपनौ आयौ जिन्न रौ, तौ जिन्न रै सुपनै में भी तूं... !
अर जे सुपनौ आयौ परी रौ तौ परी रै सुपनै में भी ! अर सुपनौ भी अेक जिस्यौ। जे जिन्न थांनै अकास री सैर करावै तौ उण नै भी इस्यौ ई सुपनौ आवै अर जे परी आपरै लोक में थांनै लेय जावै तौ परी नै भी सुपनौ आवै।

चंदर : (किलकतौ) हेंऽ ? परी रै सुपनै में म्हैं ? फेर तौ राजे म्हैं अर परी। परी अर म्हैं।

हजूरौ : हां... है नी चमकण वाळी बात ?

गिरधारी : इयां हुय सकै ? इयां हुय सकै कै जिकै रौ सुपनौ म्हनै आवै, उण रै सुपनै में म्हैं भी जाऊं ?

हजूरौ : क्यूं नीं हुय सकै ? मिनख चावै तौ कांई कोनी हुय सकै। बस, चांवना हुवणी चाइजै। इण दुनिया में इसी कोई चांवना नीं है जकी पूरी नीं हुय सकै। चांवना हुवै इज पूरी हुवण नै है। चाहौ अर फेर लाग जावौ। चांवना पूरी करण री जिद सैं कीं कराय सकै। फेर इण रा परिणाम चोखा हुवै कै माड़ा, अेक बार तौ जिद री ई जीत हुवै।

सुगनियौ : क्यूं बिलमावौ बाबा, इंयां हुवै कदै ? हुवणौ तौ दूर री बात। ना देखी ना सुणी, ना किणी रै हियै उमटी। म्हां तौ आ भी नीं जाणां कै सुपनां आवै कियां है अर थे कैवौ हौ कै अेक जिस्या आवै।

हजूरौ : (टाबरां ने छोड'र मंच रै आगी कांनी आवै) हुवै रे टींगरां! हियै उमटै जकी बातां किसी सगळी बारै आवै है? (टाबरां नै पूछै तौ टाबर नाड़ हिला देवै।) कीं आवै अर घणखरी रैय जावै। जद घणखरी बातां भी साम्ही नीं आवै तद कल्पनावां री तौ मानै इज कुण? अपां खुद ई सोच लेवां कै इयां नीं हुय सकै। मन में उमटी बात नै बतावण में डर लागै अर इण तरियां मन मारता रैवां। डर, इण बात रौ कै लोग भोंदू या भोळू नीं समझ लै। इणी खातर घणखरी बातां बारै आवण सूं पैली इज खतम हुय जावै। सोचौ, इतरी नूंवी-नूंवी चीजां अपां रै साम्हीं कियां आई, सोच सूं इज नीं? (टाबर हामळ भरै) इस्या लोगां री इज तौ कहाणी बणै। कहाणी उणां री बणै जका अलायदी सोच राखै। कहाणी तौ वा इज है नीं कै हुवै जकी तांई कोई पूगै नीं अर फेरूं अेक दिन जद सगळा रै साम्हीं आवै तौ सै नै आपरी-सी लागै। (टाबर हामळ भरै) तौ सुणौ!

अेक बगत री बात है। अेक हौ सुंदरपुर नांव रौ राज। भाखरां सूं घिरियोड़ौ, हरियौ-भरियौ राज। च्यारूंमेर सुख-संतोख। सुंदरपुर रा राजा हा विक्रमजीतसिंह। राजा री अेक बेटी ही, नांव हौ मूमल। बेटौ हौ नीं। राजा बूढौ अर दरबारी लोभी। म्हैल में चौपड़-पासा बिछण लागग्या हा। हर दरबारी री अेक चांवना कै राजा आज मरै, तौ काल वौ राजा बण जावै। गिरजड़ा ज्यूं राजा री सांस गिणता अर उण री मौत री बाट जोवतां। इणी गांव में हौ अेक नौजवान। नांव हौ राजियौ। मां-बाप रौ अेकाअेक। करतौ कीं नीं। अर दिन-रात सोच में डूब्यौ रैवतौ। हुवैला कोई थांसूं थोड़ौ'क बडौ अर म्हासूं तौ घणौ नेन्हौ। म्हारै जिस्यौ अेक मलंगौ रोजीना बस्ती में आवतौ अर अेक कहाणी रोजीना सुणावतौ अर कहाणी सुण परौ राजियौ सुपनां री सैर करतौ। जियां कै थे करौ। कदै सुपनै में कीं दिखै तौ कदै कीं। पण हाथ में कीं नीं आवै। आ कोई बात हुवै? राजियौ, उफतग्यौ सुपनां सूं। करै तौ करै कांई? कैवै तौ कैवै किणनै? अेक दिन ठाह लागी कै राज री सींव पर अेक महात्माजी आपरौ डेरौ करियौ है। औघड़दानी संत पूगियोड़ा महात्मा हा। सुणी ही कै उणां रै आसीरवाद सूं घणखरा सुखी हुयग्या। अन्न, धन, पूत अर अैड़ा इज घणखरा वरदान। संत री च्यारूंमेर जै-जैकार।

सुंदरपुर री सींव माथै धूणी रमाय बैठ्या महात्माजी रा चरचा घर-घर हुवण लाग्या। घणखरा तौ महात्माजी नै भगवान इज मानण लागग्या। च्यारूंमेर जै-जैकार। लौगां रौ जमघट। राजियै नै ठाह पड़ी तौ वौ भी पूगियौ आपरी चांवना लेय'र। महात्माजी मिळिया नीं, पण हार नीं मानी। भगतां-चेलां में सूं किणी बतायौ कै महात्माजी कुटिया में अेक पग पर खड़ा तप कर रैया है। राजियौ पूछियौ कै औ तप कद तक चालसी? तौ किणी सूं जवाब नीं मिळियौ। बतावै भी कुण? जे महात्मा जी कोई नै कैय'र तप में बैठिया हुवै तौ बतावै। पण राजियौ तै करली कै महात्माजी रा दरसण करियां बिना पूठौ नीं जावै। अेक दिन राजियै नै ठाह

पड़ी कै महात्माजी तप सूं राजी रैवै। राजियै रै बात हाडौहाड बैठगी। राजियौ कुटिया रै बारै पेड़ रै नीचे अेक पग पर खड़ौ हुयग्यौ। रटण लाग्यौ 'गुरदेव-गुरदेव!' कुटिया में लोग जठै कोई 'नारायण-नारायण' अर 'ओम् नमः सिवाय' रटता हा, राजियौ रटण लाग्यौ 'गुरदेव-गुरदेव!' बात महात्मा जी तांई पूगी। पैला तौ महात्माजी आप रै नांव री रट सूं रीस में आया पण फेरूं जद बीजा संत पूरी बात बताई तौ खुद राजियै कनै पूग्या।

(मंच रै डावै पासै दरसाव में राजियौ तप करतौ दिखै। रोसनी राजियै पर थिर। टाबर अर हजूरौ मंच रै जीवणै पासै आगै कांनी आय'र बैठ जावै। निरदेसक चावै तौ टाबरां अर हजूरै खातर मंच रै आगै अेक अलायदौ तखत भी लगा सकै अर चावै तौ दोनूं नै जरूरत सारू मंच पर बुला सकै)

(मंच रै जीवणै कांनी सूं महात्मा जी रौ आवणौ।)

महात्मा : नारायण! नारायण! अरे टींगर, कुण है रे तूं? अर अठै कांई लेवण आयौ? अर अेक पग पर खड़ौ हुय'र कांय खातर हठजोग करण ढूक्यौ है। अै थनै सोभा नीं देवै। मैनत-मजूरी कर अर परिवार रौ पेट पाळ।

राजियौ : (महात्माजी नै देखै अर पग पकड़ लेवै) गुरदेव! निवण थांनै! सैं की करूंलौ गुरदेव। पैला आप म्हनै सरण में लेयलौ अर म्हारी अेक इंछा पूरी कर दिरावौ। आप ही हौ वै जकां नै सोधतां म्हारी जूण जाय री है। अब आप आया हौ तौ म्हारी जूण री जातरा नै कीं रंग मिळैलौ। पतियारौ है। भरोसौ है गुरदेव!

महात्मा : कोई कीं नीं कर सकै बावळा! इण धरा माथै आयोड़ै अर जीव री आप री सींव है। सगळां नै लागै कै बीजे कनै कीं इधकार है, सिद्धी है। पण औ साच नीं है। सगळा अेक जिस्या है। सगळां रै हाथ-पग है। भगवान किणी सागै भेदभाव नीं करै। फेर भी लागै इयां इज है। पण तूं छोड आं बातां नै। तूं तौ बता, तप रौ हठ कियां झाल्यौ?

राजियौ : थे कैवौ तौ साच इज हुवैला गुरदेव। भगवान कदै भेदभाव नीं करै। पण म्हैं कियां मानूं। म्हारै कनै तौ सबूत है कै भगवान भेदभाव करै। (महात्मा उण नै सवालिया निजरां सूं देखै) हां, गुरदेव, आप नराज नीं हुवौ तौ बताऊं। (महात्मा हाथ रौ इसारौ करै) बात घणी बडी नीं है गुरदेव। अर मानौ तौ घणी बडी। फेर बात क्यां री गुरदेव। अेक इज बात है। जुगां जूनी अेक बात है। थांनै ई सुपना आवै अर म्हनै भी। म्हारै दादै रै पड़दादै नै भी आवता अर आप रै भी। जुग बीतग्या, कोई नीं बता सक्यौ कै सुपनां कुण भेजै। वौ, जकौ सुपनां दिखावै उण री सोच कांई है। कोई जाण सकियौ न समझ सकियौ कै आ लीला कांई है!

महात्मा : तौ? आ कांई बात हुई। सुपनां री आपरी अेक दुनिया है। आपरा सैनाण है। इण दुनिया में हुवण वाळी कोई भी बात इयां इज नीं है। सै कीं तै है। तूं तौ थारी बात बताव!

राजियौ : तौ बात इत्ती इज है कै हूं चावूं, म्हारा सुपना अेकल नीं रैवै। जे म्हनै किणी रौ सुपनौ आवै तौ उणनै म्हारौ भी सुपनौ आवणौ चाइजै। अेक जिसौ सुपनौ। जस रौ तस। बस आ इज है म्हारी चांवना, आप पूरी कर दिरावौ। आप इज पूरी कर सकौ हौ।

महात्मा : गेलौ हुयग्यौ कांई ? माथौ फिरग्यौ कांई थारौ ? थनै देख'र लागै तौ नीं है कै माथौ खिसक्योड़ौ है थारौ। पण बातां थारी...

राजियौ : (फेर पगां नै काठा झाल लेवै) गुरदेव, गेलौ हूं तौ कोनी पण हुय पक्कौ जासूं, जे इणी तरयां लोगबाग म्हारै सुपनै में आय परा'र गोधम मचावता रैया तौ। आप ई सोचौ! आ कोई बात हुई कै कोई सोचै-बिचारै बिना ई कोई रै ई सुपनां में जावै परा ? नींद खुलै जद मन खराब हुवै जकौ पागती में। सोचौ गुरदेव! जे थांनै कोई सुपनौ आसी तौ सवाल तौ हुवै इज कै सुपनौ क्यूं आयौ ? अर जबाब नीं मिळै। अर जिकौ आप रै सुपनै में आयौ, उण नै तौ कीं ठाह इज नीं। वौ तौ चैन री नींद सूवै। गळत बात नीं है आ ?

महात्मा : (सौच में पड़ जावै) बात तौ साच है थारी, पण सुपनां पर किणरौ वस है राजिया ? कोई भी तौ नीं जाणै सुपनां री माया।

राजिया : म्हनै भी नीं जाणनी। म्हारौ तौ इत्तौ इज सोच है कै म्हनै जिकै रौ सुपनौ आवै, उण नै म्हारौ सुपनौ आवै। जे इयां नीं हुवै तौ औ अन्याव है गुरदेव! आप रै भगवान रै घर रौ अन्याव। अर थे हौ भगवान रा दूत। म्हारै पर किरपा करौ। बस, म्हनै तौ अेक वरदान देय दिरावौ कै जकौ म्हारै सुपनै में दीसै, वौ सैं कीं उणनै भी दीसणौ चाइजै, जकौ म्हारै सुपनै में है।

महात्मा : (अचकचा'र) म्हैं ? कुण कैवै कै हूं भगवान रौ दूत हूं। अरे मिनख जैड़ौ मिनख हूं भला आदमी! पैली बात तौ म्हैं इयां कीं कर ई नीं सकूं। फेर म्हैं इयां कर भी कियां सकूं ? सुपनां में सीर ? आज तांई नीं हुयौ! ना हुयौ ना हुवणौ चाइजै। तूं जकी चांवना राखै, वा आज तांई ना तौ हुई है अर ना हुवणी चाइजै। कीं बातां नै नीं जाणण में इज भलाई है। नेम-धरम भी कीं चीज हुवै अर अपां नै ई उणी मुजब चालणौ चाइजै।

राजियौ : आप स्सौ-कीं कर सकौ गुरदेव। फेर म्हनै किसी आखी दुनियां री पड़ी है। चावौ तौ और तप करवाय लौ। आप तौ म्हनै औ वरदान देयदौ। आप शांति भाभी नै पूत दियौ। मूळियै रौ घर धन-धान सूं भर दियौ। सारौ राज आप सूं खुस है। म्हनै भी खुसी चाइजै। म्हैं आपरौ कांई बुरौ करियौ ?

महात्मा : (हंसै) तौ तूं मानै कोयनी ? (राजियौ नाड़ हिला देवै) भोळा राजिया! थारै इण भोळपणै नै देख'र अेकै कानी म्हैं डरूं-फरूं हूं तौ दूजी कानी चावूं भी हूं कै थनै वरदान मिलणौ भी चाइजै। (कीं सोचतां थकां) देख! थनै वरदान देय देसूं। पण याद राखजै, इण रा दुख भी कम नीं है। औ सुपनै रौ सीर कठैई थारी अबखाई

नीं बण जावै। औ जाण लियै कै थनै जकौ सुपनौ आयौ वौ रौ वौ सुपनौ उणनै भी आवैलौ जकौ थारै सुपनै में आयौ है।

राजियौ : (हथाळी पर हथाळी ठोकतौ) आ इज तौ चावूं हूं कै म्हैं भी उणरै सुपनै में जाऊं जकौ म्हारै सुपनै में आवै।

महात्मा : सोच लियै!

राजियौ : सांगोपांग सोच लियौ महाराज। आप तौ वरदान दिरावौ। सगळी बातां मानली गुरदेव! फेर म्हारा तौ तारणहार ई आप हौ। जे कांई-किसी हुई तौ थांनै इज तौ याद करूंला, आप इज हौ म्हारा स्सौ-कीं।

महात्मा : (आप रै कमंडळ सूं पाणी लेवै अर राजियै पर छिड़क देवै) जा, आज रै बाद जकौ थारै सुपनै में आसी उण रै सुपनै में भी तूं जासी। कल्याण हुवै थारौ!

(महात्मा वरदान देयर पाछा निकळ जावै। इण वरदान रै बाद राजियौ नाचै-गावै अर मोद मनावतौ मंच छौडै।)

(अंधारौ)

दूजौ दरसाव

हजूरौ : (टाबरां में सूं उठ परौ मंच रै आगै आवै। रोसनी हजूरै पर थिर) मनचींतौ वरदान लेयर राजियौ पूग्यौ घरां। वरदान औ कै जकौ राजियै रै सुपनै में आसी, उणरै सुपनै में राजियौ भी हुवैलौ। घर मांय सगळा नै कैय दियौ कै उणनै काची नींद सूं जगावण री दरकार किणी नै नीं है। वौ आपरी मरजी सूं उठैला अर मरजी सूं इज सुवैला। राजियौ लाडेसर बेटौ। अेकौअेक औलाद। बात कुण टाळै?

चंदर : (बेसबरी सूं) आगै बतावौ नीं हजूरा!

हजूरौ : (लारै घूम परौ टाबर नै देखै) क्यूं रे! अबै मां नीं बुलावै?

गिरधारी : (कसमसावतौ) मां तौ बुलावै जद बुलावै। पण अबार तौ बात में मजौ आवै।

सुगनियौ : (चंदर कीं कैवै जकै नै कैवण सूं रोकतौ अर दूजै हाथ सूं हजूरै नै बात जारी राखण रौ इसारौ करतौ) रुकौ मती ना, बतावौ नीं आगै कांई हुयौ?

हजूरौ : (टाबरां री बातां में रळी जाण'र देखै अर मुळकै) हुवै कांई? महात्माजी रौ वरदान हौ। फळापणौ तौ हौ इज। पैली रात ई असर दीसग्यौ। हुयौ यूं कै राजियै रै बालपणै रौ साथी हौ— सहीराम। दोनूं पक्का भायला। बाळगोठिया। पण अचाणचक ठाह नीं कांई हुयौ कै सहीराम रा मां-बापू कठै चल्या गया अर राजियौ आप रै नानाणै हौ। आयौ जद ठाह लागी। पण आ ठाह नीं लागी कै वै गया कठै है। राजियौ आप रै भायलै नै घणौ इज याद करतौ। केई दफै उण रा सुपनां भी आवता पण करै तौ कांई करै? वरदान रै बाद तौ बात ई दूजी ही। अठीनै राजियै नै सहीराम रौ सुपनौ आयौ अर सहीराम नै राजियै रौ। दिन उगतां इज राजियौ सहीराम रै गांव पूगियौ। इयां मिळिया दोनूं जियां हुयग्यौ भरत-मिळाप।

इण तरियां रा सुपनां राजियै नै रोजीना आवता अर राजियौ लोगां नै सुपनै री बातां बता'र मजौ लेवतौ। सामलौ बगनौ-सो राजियै रै मूंडै कानी भाळतौ। इण तरियां कोई राजियै नै सिद्ध बाबौ समझण लागियौ तौ कोई कीं। राजियै रौ डंकौ बाजण लाग्यौ। अर इणी कड़ी में अेक दिन राजियै नै आयौ राज रौ सुपनौ।

सुगनियौ : राज रौ?

हजूरौ : हांऽऽऽ, अेक सुपनै में मिळी राजकंवरी, अर दूजै में आया खुद राजा! सुंदरपुर री राजकंवरी अर राजा विक्रमजीत। राजा सुणाई आपरी राम-कहाणी अर बोल्या कै इण भंवर सूं तूं ही निकाळ सकै। राजियौ अर राजकंवरी तौ पैराय ई दियौ फूलां रौ गजरौ।

चंदर : (थौड़ौ आगे सिरक'र बैठ जावै) अईलै!

हजूरौ : (चंदर कांनी देखै) कांई हुयौ रे?

चंदर : (पाछौ सावळ बैठण रौ जतन करतौ) नीं, कीं नीं। राजा री बात करी तद...

हजूरौ : (हंसतौ) राजा री बात करी जद या राजकंवरी सुपनै में आई तद?
(टाबरिया चुप हुय जावै) जाणूं हूं रे, सगळौ कीं जाणूं हूं। अर हुई भी आ इज। राजकंवरी रै सुपनै में जियां ई राजियौ आयौ, राजियै नै देख'र राजकंवरी तौ चेता-चूक। राजा री बेटी ही। उण खातर कांई दौराई। उठतां इज मूंडौ बाद में धोयौ अर पैली राज रै चित्रकार नै बुलायौ अर बोली कै म्हारै त्यार हुवण सूं पैली उण रौ चितराम मंड जावणौ चाइजै जकौ म्हारै सुपनै में आयौ हौ। अर बता दीन्हा सुपनै में आयै जवान रा सैं कीं अैनाण-सैनाण।

सुगनियौ : फेर?

हजूरौ : फेर हुयौ औ कै जियां ही चितराम बणियौ राजकंवरी बावळी हुयगी। अेक इज बात— इण सूं मिळणौ है। जकौ लेय'र आसी उण नै सोनै री सौ मोहरां देवण री बात। म्हैल में बात अगन बणगी। जासूसां नै काम मिळग्यौ। राजकंवरी साफ कैय दियौ कै पैली इण नै साम्हीं लावौ, पछै ई कोई रोटी-पाणी री बात करौ।

गिरधारी : (इजरज सागै) इयां कियां? सुपनै में दीसण वाळै सूं मिळण खातर सौ मोहरां?

हजूरौ : अरे बात ई इसी'ज ही रे! तूं तौ थ्यावस राख'र सुणतौ रै। (ठंडी सांस भर'र मंच रै आगै आवै) अठीनै राजियौ उठ्यौ तौ वौ भी राजम्हैल कानी ली रवानगी।

नंदियौ : (उमायौ होय'र) राजकंवरी सूं मिळन नै?

हजूरौ : (मुळकतौ) आ तौ राजियौ ही जाणै। (हजूरौ थिर)
(मंच पर राजदरबार रौ दरसाव। राजा आप रै दरबारियां सागै बैठौ है। मंच नै इण तरयां सजावणौ कै दरबार रौ दरवाजौ अर उण पर खड़्यौ पौंरैदार भी दीखै। राजियै रौ प्रवेस। पण पौंरैदार रोक लेवै।)

राजियौ : खम्मा घणी अन्नदाता! राजराजेश्वर विक्रमजीतजी महाराज री जै हौ! महाराजाधिराज सूं मिळण री आस लेय'र आयौ हूं। पौंरैदारजी, म्हारी अरज तौ पूगाय देवौ महाराजा तांई। अन्नदाता रौ हुकम हुवै तौ...

पौरैदार : अन्नदाता राजकाज में है। दरबारिया संग मंत्रणा री घड़ी है। मिळणौ मुस्कल है। पैली नाम और काम बतावौ।

राजियौ : अन्नदाता नै अरज करौ कै थांरै ई राज रौ रैवण वाळौ हूं, नाम है राजियौ अर महाराजाधिराज बीती रात म्हारै सुपनै में आय'र दुख-सुख री बात करी ही।

पौरेदार : (हंसी उडावतौ, थोड़ी रीस भी) कांई बात करै है ? होस में तौ है ? अन्नदाता अर थारै सुपनै में। अर आया भी हुवै तौ कांई ? उणां नै कांई ठाह कै थनै कांई सुपनौ आयौ है ? आयौ भी है या इयां ई ठळा मारै। राजा तौ कोई रै सुपनै में भी जाय सकै। म्हनै तौ डर है कै आ बात सुणतां ई राजा म्हारी नस ई नीं काट देवै। होस में आव! औ राजम्हैल है। कोई नौटंकी नीं...।

राजियौ : (बेपरवा) हूं तौ होस में इज हूं। लागै थांनै म्हारी बात समझ नीं आय री है। आप नै अरज करूं हूं कि राजाजी नै भी वौ इज सुपनौ आयौ जकौ म्हनै आयौ है। इण खातर...

दरबारी : राजा नराज हुयग्या तौ जाणै है नीं अरथ ? तूं कैवै जकी बात रौ अरथ भी जाणै है नीं ? सीधौ फांसी रौ फरमान आवैला थारै नांव।

राजियौ : सै कीं जाणूं हूं। अर फेर भी राजा नीं मानै तौ सुपनै री बात भी बता दिया, ल्यौ सुणौ! बताऊं थांनै असली बात (राजियौ सावचेती सारू इणगी-उणगी देखतौ पौरैदार रै कान में कीं कैवै। पौरैदार सुण'र चौंक जावै।)

पैरेदार : (राजा आगै जाय'र राजियै री बात राखै) महाराजाधिराज! भूल-चूक माफ हुवै। राज रौ अेक नौजवान आप सूं मिळण री आस राखै। उण रौ कैवणौ है कै आप उण रै सुपनै में रात रा आया अर कीं सुख-दुख री बात करी।

राजा : कांई ?

पौरेदार : उण रौ कैवणौ है अन्नदाता, कै आप उण नै इण दरबारियां में सूं कीं नांव बताया जकां आप रौ हुकम तौ मानै इज नीं है, आप रै सिंघासण माथै भी खोटी निजर राखै।

(आ सुणतां ई राजा चौंक जावै। सिंघासण सूं उठै अर फेर कीं सोच'र बैठ जावै। दरबार में खुसर-फुसर सरू हुय जावै। राजा दरबार नै देखै अर राजियै नै लावण रौ आदेस देवै। पौरैदार सागी पगां पाछौ जावै अर सागै उण जवान नै लेय'र आवै। राजियै नै देख'र महाराज रा भी चेता चूक जावै।)

राजियौ : महाराज री जै हौ! राजराजेश्वर विक्रमजीतसिंहजी री जै हौ!

राजा : तूं तौ काल म्हारै सुपनै में हौ ?

राजियौ : आ इज तौ बात है अन्नदाता, इचरज भी कै आप म्हांसूं जकी बात करी, वा तौ...

(राजा हाथ रै इसारै सूं रोक देवै अर खुद सिंघासण सूं उतर परौ राजियै कनै आवै अर उणरै कांधै हाथ राख'र सिंघासण रै लारै लेय'र जावै। दूजै कानी पौरैदार नै दरबारी घेर लेवै अर उणनै पूछै कै बात कांई है। वौ सबनै प्रतीकात्मक रूप सूं

सुपनै री बात बतावै कै कियां राजा राजियै रै सुपनै में गयौ अर दरबारियां रा नांव बताया। अब जकौ भी करणौ है जल्दी करणौ पड़सी। टाबरां अर हजूरै पर रोसनी।)

गिरधारी : राजियै नै लेय'र राजा कठै गया ?,

हजूरौ : क्यूंकै राजियौ स्सौ-कीं जाणतौ हौ अर राजा विक्रमजीत नीं चांवता हा कै जकी बात राजियौ जाणै वा बात दरबारियां नै ठाह पड़ै। इण खातर दूजी ठौड़ लेयग्या।

चंदर : (चिंत्या सूं) तौ कांई राजियै नै राजा मार देसी ?

हजूरौ : (हंसै) राजा मार देसी ? अरे राजा तौ खुद आप री जान बचावण खातर राजियै सूं इमदाद चावै। सुपनै में आयै मिनख नै साम्हीं देख'र राजा जाणियौ कै औ कोई जादू-टूणा जाणै। उणनै लागै कै भगवान रौ कोई दूत आयौ है अर उणरै सिंघासण माथै अबै किणी री निजर नीं पड़ सकै। राजा आप रै दरबारियां सूं आफळीज्योड़ौ हौ। सोच्यौ कै कीं इमदाद इण री मारफत मिळ जावै।

नंदियौ : तौ... ?

('तौ' रै सागै ई रोसनी पाछी सिंहासन पर। सिंहासन लारै सूं राजियौ निकळै अर लारै राजा अर राजियै नै पाछा आंवतां देख दरबारी आप-आपरी ठौड़ जाय'र बैठ जावै। पण सगळां रै चैरां पर तणाव।)

राजियौ : अरे ना अन्नदाता! माफ करौ। इण सूं बेसी तौ कीं जाणूं इज नीं हूं। औ भी गुरदेव रौ वरदान है। हुई जकी बता दी। आप आया सुपनै में तौ सोच्यौ आप नै कीं कैय दूं। अर इयां ओळमां देवण सूं राज नीं बचैलौ। आप राजा हौ। राज करौ। अर इयां करौ कै लागै राजा हौ।

राजा : देखलै राजिया, सौच लै! जे सुपनै में म्हैं आयौ हूं थारै, तौ कोई-न-कोई कारण इज है। आ भगवान री लीला भी हुय सकै।

राजियौ : कोई कारण नीं है हुकम। म्हनैं इजाजत दिरावौ। अर रैयी बात भगवान री लीला री, तौ वा भगवान ई जाणै। पण अेक बार तौ वै भी म्हनै कैय देवै कै म्हनै इयां करणौ है तौ म्हैं उणां सूं भी औ इज सवाल करूं कै जे अै इज सब करवाणा हा तौ म्हारौ जलम ईसरदासजी रै घरां क्यूं करियौ ? म्हारी आ औकात नीं कै थांनै मना कर सकूं महाराज। पण साच औ नीं है जकौ आप सोचौ हौ। हूं कोई सिद्ध बाबौ नीं हूं। नीं कोई चमत्कार आवै। सिद्ध बाबा तौ राज री सींव माथै है।

(राजियौ राजा नै हाथ जोड़ै। राजा उण कांनी आपरी पीठ कर ले। अर मंच छोड़ देवै। राजियौ भी मंच छोडै अर दरबारी पाछा अेकजुट हुय नै राजियै नै जांवतौ देखै अर आपसरी में सेन करता किणी बडी साजिस बणावण री मंत्रणा करता निजर आवै। दरबारियां पर रोसनी धीरै-धीरै कम। राजियौ दरबार सूं निकळै अर च्यार-पांच सिपाही उण नै पकड़ ले। मुंडे पर पाटी बांध'र ले जावै।)

अंधारौ

तीजौ दरसाव

(म्हैल रै मांय रौ दरसाव। सजियोड़ौ अेक कक्ष। राजकंवरी खड़ी है। मंच रै डावै कानी सूं सिपाही राजियै नै लावै। राजकंवरी उणनै देखै अर मुळकै। आंख सूं पाटी हटावण रौ हुकम देवै।)

राजियौ : (म्हैल में च्यारूंमेर देखतौ अर राजकुमारी पर निजर थिर कर'र) म्हनै अठै अर इण तरयां बुलावण री वजै जाण सकूं राजकंवरी सा?

राजकंवरी : (इचरज अर उमाव सूं) म्हनै जाणौ हौ?

राजियौ : आप इण राज रै महाराजाधिराज री लाडली हौ। राजकुमारीजी हौ। थांनै कुण नीं जाणै?

राजकंवरी : अर थे?

राजियौ : (खुद रै खातर राजकंवरी रै मूंडै सूं 'थे' सुण'र अचकचा जावै) हूं कुण? आप थे कैय'र माण बधायौ है, तूं भी केय सकै हा।

राजकंवरी : (प्रेम में पगी) बात हाल तांई इत्ती बधी नीं है।

राजियौ : (फेर झिझकै) हूं समझियौ नीं।

राजकंवरी : (थोड़ी आगै आय'र राजियै नै देखती) या समझणौ चावौ नीं?

राजियौ : (अचकचा जावै) हुंसियारी तौ आवै नीं है, बात बता देवौ, है जकी। म्हैं तौ इतरौ इज जाणूं हूं कै म्हैं इण राज री प्रजा रौ अेक अदनौ उणियारौ। नांव है राजियौ। अर आप हौ इण राज री राजकंवरी। जिकां रौ नांव पूछणौ भी जुरम होय सकै।

राजकंवरी : (राजियै रै चौफेर घूम'र साम्हीं आवै) म्हारौ नांव है मूमल! लागै तौ कोनी कै थे म्हारै राज रा हौ। जाणै किणी दूर दिसावर सूं आया हौ। परीदेस रा वासी और (हरखायमान होय आगै बधै, उण सूं पैली राजियौ बात काट देवै।)

राजियौ : आपरै राज रौ इज रैवासी हूं, सक-सूबौ होवै तौ पूछ लिरावौ किणी नै। ईसरदास रौ बेटौ। मां रौ नांव गौमती देवी।

राजकंवरी : (नराजगी रौ नाटक) फेर इतरी मजाल कै म्हारै सुपनै में आय'र म्हासूं इज...

राजियौ : (बात काटतौ) कांई?

राजकंवरी : थांनै स्यात नीं ठाह कै काल थे म्हारै सुपनै में आया हा।

राजियौ : (नाड़ नीची कर'र बोलै) ठाह है स्सौ-कीं, पण सुपनां रौ कांई? किणी नै भी किणी रौ आय सकै। इण में मजाल रौ कांई सवाल?

राजकंवरी : (इचरज में) कांई बात करौ हौ? थांनै कांई ठाह?

राजियौ : हूं आप रै सुपनै में आयौ जद आप केसरिया कसूमल ओढणी ओढ राखी ही अर म्हारै पचरंगी पाग। च्यारूंमेर उच्छब हौ अर आप रै हाथां में गजरौ। वरमाळ। आप उण नै म्हारै गळै पैराय दीवी। म्हारौ वरण कर लियौ। राज में उच्छब। अपां दोनूं भी खूब मगन। अेक-दूजै में...

राजकंवरी : (इचरज अर उमाव में) बस...बस...बस करौ! आगै कीं मत बोलौ। आ इज बात। आ री आ बात। पण....

राजियौ : पण कीं नीं राजकुमारी जी। इयां हुवै। काल कोई दूसरी भी म्हारै सुपनै में आय सकै। म्हनै वरदान मिळियौ है कै जकौ म्हारै सुपनै में आवै, उणनै भी म्हारौ सुपनौ आवै।

राजकंवरी : (इचरज सूं) इयां हुय सकै है ?

राजियौ : (छाती चौड़ी कर'र) म्हारै तौ हुवै।

राजकंवरी : (दो पांवडा आगै बध'र) तौ ठीक। आज रै बाद नीं हुवैलौ। अब आप रै सुपनै में ई नीं, सागै भी म्हैं रैवूंली। सुपनौ साच करांला आपां (नेड़ी आवै। राजियौ चमकै। माथै पर पसेवौ)

राजियौ : (पसेव पूंछतौ) कांई कह रैया हौ थे ? जाणौ तौ हौ ? अर फेर सुपनां पर किण रौ वस ?

राजकंवरी : (राजियै री आंख्यां में आंख्यां घाल'र केई देर देखै) नींद पर तौ है ? आप नै नींद ई नीं लेवण दूं तद ?

राजियौ : (चैरै पर डरप) आप कांई कैय रैया हौ, जाणौ हौ कै नीं ? कठै आप राजकंवरी अर हूं प्रजा। थांरौ-म्हारौ कोई जोड़ नीं है। अर थे कैय रैया हौ कै वा तौ सजा है, इण में प्रेम कठै ?

राजकंवरी : सजा नीं है। आपनै पावण रौ अेक तरीकौ है। अर जे थे अब इसी बातां करौ हौ तौ फेर सुपनै में इतरा वाचा क्यूं करिया ? सुपनै में भी थे किस्या राजकंवर हा, पण म्हैं तौ वरण करिया हा थांनै।

राजियौ : वौ तौ सुपनौ हौ। सुपनां पर किण रौ जोर। अर वाचा थे भी तौ करिया हा!

राजकंवरी : तौ किसी नटगी! मानूं हूं। आप संग प्रीत रा रंग मंजूर। स्सौ-कीं। आपरै प्रीत रंग पगीज्योड़ी हूं अबै। हूं भी तौ जागती रैवूंली आप रै संग।

राजियौ : सोचलौ राजकंवरी सा। म्हारै सागै न राज है न पाट। कम पाकौ अर घणकाचौ घर है। सूवण खातर मूंज री खाट है। न्हावण खातर अेक कोस पर बणियै तळाब रौ गऊघाट है। बठै इस्या ठाठ है न बाट है।

(मंच जीवणै पख सूं राजा रौ प्रवेस।)

राजा : (हरखीजता थकां दोयां रै बिचाळै आय'र ऊभ जावै) कीं चाइजै भी नीं है। राजकंवरी सूं परणीजतां ई आप म्हारा जंवाई राजा। आखै राज रा जंवाई। मूमल आज पैली बार आपरी पसंद बताई है। राजकंवरी नै नराज नीं कर सकां। अर थांरी भलाई भी इणी में है।

राजियौ : (राजकंवरी नै देख'र पाछी निजरां फोरलै। राजा रै साम्हीं हाथ जोड़'र) आप माफ करौ महाराज। म्हनै अठै सूं जावण ई देवौ। हूं म्हारै घर-परिवार में राजी। आप म्हैल में। म्हारा अर राजकंवरी मूमल री खुसी रा पैमाना निरवाळा है महाराज। निरवाळा इज रैवै तौ ठीक।

राजा : सोच ले राजिया! थारै कनै राज बचावण रौ उपाय है अर राजा रौ सारौ कड़ूम्बौ थारै सागै। सुपना साच भी हुवै राजिया! पैलौ साच औ है क म्हैं म्हारै घणखरा दरबारियां सूं आफळीज्योड़ौ हूं, क्यूंकै वै चावै सिंघासण। नीं जाणूं कै आ बात किण विध थारै तांई पूगी। आ तौ राम जाणै, पण जद राजकंवरी रै सुपनै री बात म्हारै साम्हीं आई तौ म्हारै कनै भरोसौ नीं करण रौ कोई कारण इज नीं हौ। म्हनैं भरोसौ है कै थारै कनै कोई ताकत है जकी राज रै काम आवण सारु थनै मिळी है।

राजियौ : (हंसण लागै) इसी कोई बात नीं है महाराज। म्हारै कनै कोई सिद्ध नीं है। जिद रौ इनाम है। हूं जचै जिका सुपना नीं लेय सकूं। सुपना तौ आपै ई आवै है। बस, म्हनै तौ औ वरदान है कै जकौ म्हारै सुपनां में आवै। उण नै म्हारौ सुपनौ भी आवै। पण फेर भी जकी ताकत म्हारै कनै है, वा राज रै काज में इमदाद कर सकै तौ म्हनै कांई परहेज। अन्नदाता! दरबारी अर सिपहसालारां री अकल ठिकाणै लगावण खातर कीं कर पाऊं तौ लारै नीं रैऊंला। अब जावण री आज्ञा दिरावौ। राज री इण कूड़ी चकाचौंध में म्हारौ दम घुटै है। (राजकंवरी साम्हीं) पण राजकंवरी जी, आप आप रै सुपनै नै भूल ई जावौ। म्हारी बात मानौ।

(राजा आप रै पौरैदारां नै हाथ सूं राजियै नै जावण देवण रौ इसारौ करै। राजकंवरी रूस'र पग पटकती राजा नै कीं केवण नै आगै बधै। थिर। रोसनी हजूरै अर टाबरां पर थिर)

चंदर : औ कांई हुयौ हजूरा? राजियौ मना क्यूं करी?

हजूरौ : राजियौ डरग्यौ रे। राजकंवरी री बातां उणनै डरा दियौ। पण राजा भी तौ डरियोड़ौ हौ। करै तौ करै कांई? दरबारी उण रै सागै नीं हौ हर समै उणनै मैंणा देवतौ आ बतावतां कै राज-पाट चलावणौ आवै नीं है। राज रौ कोई वारिस भी नीं हौ। राजा कियां ई कर राज चलावै हौ कै सुपनै री बात और साम्हीं आयगी। जद सूं दरबार में बात चाली कै राजा सुपने में बोलै। महामंत्री अर सेनापति तौ सैमूंडै ई विरोध करण लागग्या। जागीरदार घणा बोलण लागग्या। राज नै अेक आस राजियै सूं ही। वा भी पूरीजी नीं।

नंदियौ : तौ अबै राजकंवरी रौ कांई हुयसी?

हजूरौ : थांनै पड़ी है राजकंवरी री, अर हूं बात करूं राजियै री। राजियै नै तौ वरदान रौ दूजौ पख अबै इज ठाह लाग्यौ। बालपणै रौ भायलौ मिळियौ तौ सुख मिळियौ। फेर भी कीं दिन ठीक-ठाक हौ पण राजा अर राजकंवरी तौ मन में घमसाण मचा न्हाख्यौ। फेरूं सोचण पर मजबूर हुयग्यौ राजियौ। तौ बोलौ राजकंवरी री बात बताऊं कै राजिये री।

सुगनियौ : (अणमणै भाव सूं) चालौ, राजियै री इज बताय दौ।

हजूरौ : ठीक है, तौ चालौ राजियै रै घरां चालां...।

(टाबरां अर हजूरै पर रोसनी कम। रोसनी राजियै पर। राजियै रै घर रौ दरसाव। खाट पर बैठौ-बैठौ सोचै। कदै खड़ौ हुय जावै अर कदै फेर बैठ जावै। अचाणचक

उण री निजर भगवान री तस्वीर पर जावै। तस्वीर नै देखतौ-देखतौ वौ मुळकण लागै अर सूय जावै। रोसनी पाछी टाबर-टोळी अर हजूरै पर।)

गिरधारी : अब आगै तौ बतावौ, फेर कांई हुयौ हजूरा?

हजूरौ : (मुळकतौ) बताय दूं? क्यूं कै हुयौ जकौ तौ लाजबाब हुयौ। वरदान रा रंग इस्या रच्या कै ठैठ अकास में दिखण लागग्या। इंदरलोक मांई पूगग्या।

नंदियौ : हां, तरसावौ मती।

हजूरौ : तौ सुणौ। उण रात राजियै नै सुपनौ आयौ...

सुगनियौ : बोलौ, रुक क्यूं गया?

गिरधारी : बतावौ तौ सरी

हजूरा : बताऊं हूं तौ, कै उण रात राजियै नै सुपनौ आयौ भगवान रौ! भगवान आया सुपनै में अर बोल्या कै राजिया! थारै खातर राजकंवरी जिसी बीनणी सोध्यां नीं मिलैली। हां कर दै!

चंदर : (हरखिजतौ) तौ कांई राजियौ हां कर दी?

हजूरौ : (रीसां बळतौ) भावै थां सगळां नै राजकंवरी। अरे अकल रा चांद! हुयौ कीं और इज। सुरग रौ सिंघासण हालण लागग्यौ। इंदरलोक में मचगी खळबळी।

नंदियौ : क्यूं? बठै इसौ कांई हुयौ?

हजूरौ : क्यूंकै भगवान नै सुपनौ आयौ अेक मिनख रौ। वा बात हुयगी, जकी आज तांई नीं हुई।

टाबर : (सगळा अेकै सागै) हेंऽऽ???

हजूरौ : (समझावतौ) हें नईं, हां साऽऽ! वरदान हौ नीं कै जकौ सुपनौ राजियै नै आसी वौ रौ वौ सुपनौ उणनै ई आसी जकौ सुपणै में है।

टाबर : (अेक-दूजै नै देखतां अर बात समझतां) हां...।

सुगनियौ : फेर?

हजूरौ : फेर कांई। भगवान रिसाणा हुयग्या। दूत भेज्या प्रिथवीलोक। राजियौ फेर फंसग्यौ। इण दफै मामलौ भी संगीन हौ। भगवान रै सुपनै में आवण रौ अपराध! पण राजियौ करै तौ कांई? अबै तौ जकौ ई करणौ हौ, भगवान नै इज करणौ हौ। भगवान रै आगै किणी री चाली है आज तांई, जकौ राजिये री चालती?

नंदियौ : तौ...

(टाबरां रै 'तौ' बोलण रै सागै मंच पर रोसनी हुवै। टाबरां पर रोशनी कम। रोसनी में मंच पर भगवान दीसै, अर डावै पासै सूं राजियै नै लेय'र भगवान रा दूत पूगै। भगवान कोप मुद्रा में राजियै नै देखै।)

दूत : (हाथ जोड़'र) हे जगदीश्वर! औ इज मिनख है नीं?

(भगवान आपरौ सिर हिलाय'र हामळ भरै।)

दूत : आदेस करौ, इण री सजा कांई दी जावै?

राजियौ : (भगवान कीं कैवणौ चावै कै) सजा? किण बात री सजा?

दूत : भगवान रै सुपनै में आवण री सजा।

राजियौ : पण सुपनै में तौ भगवान आया म्हारै! पूछलौ भगवान नै। (भगवान चमकै) अै म्हारै सुपनै में आया अर कैयौ कै राजकंवरी सूं ब्यांव करलै। (भगवान कांनी देखता) क्यूं भगवानजी? हूं साच कैवूं कै कूड़?

भगवान : (संकौ करता) बात तौ इण री साच है। सुपनै में तौ इण रै हूं गयौ हौ। औ कैवै जकी बात भी साव साची है।

राजियौ : (कमर पर दौनूं हथाळ्यां टिका'र दूतां कानी देखै) अबै बोलौ। सजा किणनै? म्हनै या... (भगवान कांनी देखतौ)?

भगवान : (राजियै री बात पूरी हुवण सूं पैली इज बोलै) इण नै पूठौ प्रिथवीलोक पर छोड आवौ।

राजियौ : इयां कियां जगदीश्वर! आप रा दरसण करियां पछै पाछौ जावण री इंछा किणनै है! मुगती मिळगी जींवतै-जी। अमर हुयग्यौ हूं तौ। म्हनै तौ आप अठै इज सरण में राख लिरावौ।

पैलौ दूत : पण अठै जींवता आदम्यां खातर जगै कोयनी।

दूजौ दूत : अठै आत्मावां रैय सकै।

राजियौ : पण आत्मा तौ म्हारै मांय भी है। इण हिसाब सूं ई राखलौ!
(दोनूं दूत आप रौ माथौ झाल लेवै)

भगवान : (राजियै रै कनै आवै अर बोलै) देख भाई! थनै जावणौ तौ पड़ैलौ, औ परलौक है। थारै जिस्या हाडमांस रा लोगां री जगै मृत्युलोक है। धरती। जियां ई थारी आत्मा इण खोळियै रौ सागौ छोडसी, थनै म्हें बुलाय लेसां। अबार तौ थनै जावणौ इज पड़ैलौ। तूं चावै तौ थारी कोई चांवना पूरी कर दूं।

राजियौ : रिस्वत देवौ हौ? कीं ले-दे'र... आप हौ तौ भगवान ही नीं, कै अठै भी कीं चाल-चकरम है?

भगवान : (मुळकण लागै) सुरगलोक में कोई देहधारी पैली बार आयौ है। इण खातर।

राजियौ : तौ अेक बात मानणी पड़सी म्हारी!

भगवान : बोल?

राजियौ : सुंदरपुर रै राजा विक्रमजीत नै इतरौ ताकतवर बणाय देवौ कै उण रै राज नै कोई नी हड़प सकै।

भगवान : औ कियां हुय सकै?

राजियौ : आप चावौ तौ होय कांई नीं सकै?

भगवान : पण इण पर तौ म्हारौ भी वस नीं है। सुख-दुख, मान-अपमान, हानि-लाभ। स्सौ-कीं बठै रा बठै है। अठै सूं इण रौ कोई रिस्तौ नीं है। नीं तौ किणी में अेक सांस बेसी भर सकूं अर न किणी री अेक सांस कम कर सकूं। विक्रमजीत रै राज भोगण री घड़ी निकळती जा रैयी है। जे म्हैं थारी बात मान'र उणनै वरदान देय

भी दूं तौ सांसां री लड़ी कठै सूं लाऊंला राजिया! वा तौ टूटण वाळी है। आज नीं तौ काल। कुदरत रौ औ इज नेम है।

राजियौ : फेर?

भगवान : राजा रौ बदळाव संसार रौ नेम है। आत्मा भी देह सूं देह तांई फिरै है। फेर औ तौ राज है। सिंघासण कद किणी अेक रौ हुयौ है। औ तौ उणी रौ हुवै जकै रौ जोर चालै।

राजियौ : (चैरै पर विचारां री घाण-मथाण) तौ आगलौ राजा कुण?

भगवान : जे इण सवाल नै थारी चावना मानूं तौ?

राजियौ : नीं-नीं रेवण दौ। म्हनै तौ आ बता देवौ कै जे सुंदरपुर रौ राजा हूं बण जाऊं तौ?

भगवान : (मुळकता) जे इण सवाल नै थारी चावना मानूं तौ?

राजियौ : नीं नीं। म्हारी चावना फेर कदैई। अबार तौ आप म्हनै आज्ञा दिरावौ। जावण देवौ प्रिथवीलोक पर।

(भगवान मुळकता राजिये ने जांवता देखै।)

अंधारौ

चौथौ दरसाव

(रोसनी टाबरां अर हजूरै पर थिर। टाबर बगना-सा हजूरै नै देखै, अर हजूरौ ऊपर कानी देखतौ मुळकै।)

गिरधारी : हजूरा, बात तौ पूरी करौ। यूं कांई मून धारली। मुळकौ जका पागती में।

हजूरौ : अरे नीं रे! मून नीं धारी। राजियै नै आवतौ देखूं हूं।

नंदियौ : अब कांई करैलौ राजियौ?

हजूरौ : आ इज तौ म्हैं सौचूं।

सुगनियौ : कांई?

हजूरौ : सोचूं हूं कै राजियै नै ठाह पड़गी कै उण कनै अेक और वरदान है, अब वौ तौ कीं भी कर सकै। जद चावै भगवान सूं अेक वरदान मांग सकै। सुपनां में जावण रौ तौ वरदान पैली सूं इज है।

नंदियौ : तौ

हजूरौ : पण कीं तौ बाकी है ई अबार री घड़ी।

गिरधारी : कांई आडी घालै है हजूरा? सीधी बात बतावौ नीं। देखौ, चांद भी चढण लाग्यौ है डागळै।

हजूरौ : अरे हां, तौ सुणौ। राजियौ, पाछौ आयौ पण अब राजियौ, राजियौ नीं हौ। अबै राजियौ हौ उणनै तौ राजा बणनौ हौ। राजा! सुंदरपुर रौ राजा। राजियौ सोच लियौ कै जद विक्रमजीत रै राज री बेळा बिसूंजण वाळी है तौ क्यूं नीं वौ इज राजा बण जावै। राजकंवरी तौ चावै इज है। बात बण जावै तौ बण जावै। अर आ सोचतौ-सोचतौ राजियौ घरां पूग्यौ।

सुगनियौ : फेर ?

हजूरौ : संजोग देखौ। उणी रात राजियै नै सुपनौ आयौ। सुंदरपुर रौ राजा बणग्यौ है राजियौ। च्यारूंमेर मंगळ-गाण। डावै पासै राजकंवरी, अर लारै-आगै सिपहसालार। वौ दरबारी जकौ जावण सूं रोकियौ उणरै सागै-सागै सेनापति, महामंत्री, मंत्री अर छोटा-मोटा सारा जागीरदार उण री हाजरी में।

नंदियौ : फेर ?

हजूरौ : फेर कांई। वरदान आप रौ रंग दिखायौ। जिसौ सुपनौ राजियै नै आयौ। वौ रौ वौ सुपनौ राजकंवरी नै आयौ। वा घणी राजी हुई। हरख अर उमाव सूं भरीजगी। मिलण रौ गीत गायौ। सखियां संग उच्छब रचायौ। पण दुखी हुवणिया ई कम नीं हा। सेनापति, महामंत्री, जागीरदार, मंत्री, दरबारी। घणखरा सगळां देख्यौ राजियै नै राजा बणतां, क्यूंकै सुपनौ तौ उणां नै भी आयौ जिसौ कै राजियै अर राजकंवरी नै आयौ हौ। क्यूंकै सुपनै में वै भी हा, सब जाणता हा राजियै रै चमत्कारां नै। लोगां नै साव निजर आवण लाग्यौ जवान राजा। जनता रौ राजा। दरबारियां नै लाग्यौ कै इयां तौ पूरी उमर निकळ जावैला। रातौरात अेकौ हुयौ। सारा पूग्या राजियै रै घरां। सूत्योड़ै राजियै रै धरया गदीड़ अर लेय आया गांव री सींव माथै। (टाबरां रै चैरां माथै भय अर हजूरौ बात करतौ-करतौ चुप। रोसनी मंच पर जठै दरबारी राजियै नै लाय'र पटकै अर दावै ज्यूं मारण लागै। राजियौ चिरळावै।)

दरबारी 1 : क्यूं ? महाराजाधिराज राजियेश्वरजी ! घणी खम्मा हुकुम (लात ठोकै)।

दरबारी 2 : राजिया ! तू सोच्यौ तौ सोच्यौ कियां रे ? सुपनौ लियौ तौ लियौ कियां कै राजा बण जासी ? म्हे सगळा मरग्या कांई रे ? (हाथ मरोड़ देवै)

दरबारी 3 : अर जे सुपना लिया भी तौ म्हानै क्यूं ठाह घाली राजिया ? घणखरा है जका चावै राजा बणणौ। म्हे भी चावां हां, पण ठाह घाली कदै... ? (राजियै री छाती पर गोडौ राख'र कंठ मोसण लागै। राजियौ कियां ई कर छुडावै अर भागणौ चावै तौ पौंरैदार पकड़ लेवै)

राजियौ : (सगळां आगै हाथ जोड़तौ) गळती हुयगी महामंत्रीजी ! सेनापतिजी माफ करौ। अरे जागीरदारां, हूं तौ थांरी गाय हूं। अर पौंरैदारजी ! आज मानग्यौ कै उण दिन जे थांरी बात मान लेवतौ तौ...

दरबारी 1 : तौ अबै तौ औ तै हुयग्यौ राजिया कै जनता नै सिंघासण सूंपणौ राजतंत्र री नीति रै खिलाफ है।

दरबारी 2 : थारौ बचणौ राज रै हित में नीं है।

दरबारी 3 : जे तूं बचियौ तौ राजकंवरी सूं परणीजैलौ। जे आ हुई तौ थारौ मान-सन्मान, इज्जत सैं कीं बधैला। फेर तूं नीं रुकैलौ। म्हांरी छाती माथै मूंग दळैलौ। अरे (पौंरैदार नै अवाज लगावै) पौंरैदार ! कांई कैयौ हौ रे तू इण नै ?

पौंरैदार : हुकम, हूं तौ आ कैयी कै जे राजा नराज हुयग्या, तौ फांसी रौ फंदौ त्यार है।

राजियौ : (दरबारियां रै भाव अर साम्हीं खड़ी मौत नै देख'र) गुरदेव! बचायलौ म्हनै। ले लौ पूठौ आप रौ वरदान गुरदेव!!!

दरबारी 3 : सौ टका सई! ले सांभ (आपरी तलवार पौंरैदार साम्हीं फेंकै। पौंरैदार लपक लेवै।) कर तौ काम तमाम!

(पौंरैदार आगै बधै अर इणी समै तेज रोसनी रै बिचाळै औघड़दानी महात्मा पूगै। आप रै कमंडळ रौ पाणी छिड़कै। दरबारी थिर। महात्मा उणां नै जावण रौ इसारौ करै। दरबारी सम्मोहित-सा पूठा जावै परा। महात्मा कमंडळ रौ पाणी राजियै पर घालै। राजियौ आंख्या खोलै। महात्मा नै देखतां ई उणां रा पग पकड़ लेवै। चैरे पर भय रा भाव)

राजियौ : गुरदेव, साच बतावौ, हूं जीवूं हूं कै मरग्यौ?

महात्मा : क्यूं?

राजियौ : नीं महात्माजी। आप में अर उण भगवानजी में म्हनैं कीं फरक नीं लागै। इण खातर पूछियौ। अर आखरी बार हूं इत्तौ इज देख्यौ हौ कै पौंरैदार म्हारै कानी तलवार लेय'र...। ...अर आंख खुली तौ आपनै देख्या। आप में अर सुरग में मिळिया भगवान में म्हनै तौ कीं फरक नीं लागै। आप भी वर दियौ। भगवान भी आ इज बात करी। दरबारियां सूं मार खावण बाद लाग्यौ कै अबै बचणौ मुस्कल है। आप नै देख्या तौ तै हुयग्यौ कै राम नाम सत होय चुकी है।

महात्मा : (हंसै) कोई सुपनौ हुवैला राजिया!

राजियौ : (आंख्यां मिचमिचावतौ) अरे नीं, किस्या सुपनां? अै सुपनां इज तौ सगळी राड़ घाली है। हूं सुंदरपुर रौ वासी। वौ इज रेवण दौ। मिनख नै मिनख बण्यौ रैवण में इज फायदौ है। सोच कद जिद में बदळगी अर जिद कद लोभ में, ठाह ई नीं पड़ी। लौभ री कोई हद थोड़ी हुवै गुरदेव। अे सब आप जिसा जोग्यां ने ओपै, जिका परोट सकै। आप पाछी लेय लौ आ सिद्धि। भेळी कर लौ आप री माया।

महात्मा : कांई लेय लूं राजिया! सुपनां में सीर?

राजियौ : हां, गुरदेव! औ वरदान पूठौ लेय लौ अबै। अबै नीं चावूं गुरदेव कै म्हारै सुपनै में आवै जकै रै हूं भी जावूं। घालै तौ घालै राफड़। बंद आंख री राफड़ तौ सैई जा सकै पण खुली आंख्यां...! आज आप नीं आवता तौ राजियौ नीं रैवतौ। म्हारी बूढी मां अर बाप रौ कांई हुवतौ गुरुदेव?

महात्मा : क्यूं रे, समझायौ हौ नीं थनै। जद तौ सुपनां में सीर घाल्यौ।

राजियौ : अज्ञानी हौ गुरदेव! राजा रा हाल देख'र थोड़ौ लोभ ई जागग्यौ। म्हनै ठाह तौ उण दिन ई लागगी ही जद राजकंवरी कैयौ हौ कै थांनै नींद इज नीं लेवण दूं। वा तौ म्हांसू ई बडी जिद्दण निकळी। हां, आ बात ठाह नीं ही कै राजसिंघासण तौ लोही सूं सींचीजै। अबै अंधारौ दूर हुयग्यौ। जाणग्यौ कै सुपनां में सीर कित्तौ दोरौ है।

महात्मा : अब ज्ञान हुयौ?

राजियौ : हुयग्यौ! सांगोपांग हुयग्यौ! आंख्यां खुलगी। जे सुपना ई किणी रै ताबै रा नीं है तौ

पछै सीर तौ परळै ला सकै। जे इणी तरै अेक-दूजै नै सुपना आवणा सरू हुयग्या तौ बे-बात राफड़ माच जावैली। आप री माया पाछी लौ गुरदेव।

महात्मा : क्यूं भाई ? थोड़ा दिन और राख कनै। थूं तौ इण खातर तपस्या करी ही नीं अेक पग पर खड़ौ हुय नै ?

राजियौ : भूल जावौ गुरदेव। अर दूजा सगळां नै ई भूलाय दौ। राजियौ पैली जिसौ इज हुवणौ चावै। राजा आपरी खेंचौ-ओढौ अर राजकंवरी आपरी। म्हनै म्हारै हाल पर छोड दौ। जाणग्यौ गुरदेव! सुपनाा किणी दूजै रा नीं हुवै। सुपनां रौ सीर नीं हुय सकै। अर जे सुपनां में लोभ पसर जावै तौ अनरथ इज हुवै।

महात्मा : हां, अै तौ आप रा इज हुवै। खुद सूं खुद तांई। जे इण रौ अरथ समझणौ है तौ खुद नै अर जे नीं समझणौ है तौ किणी री कोई जबाबदेही नीं है। ना तौ कोई पूछै अर ना कोई निभावै। सुपना तौ आवै अर जावै है। चावै तौ इणनै आळ-जंजाळ कैयर बिसराय दै, चावै तौ इण में सैनाणियां जोवण री खैचळ कर।

(रोसनी राजियै अर महात्मा पर कम हुवै अर टाबरां पर थिर हुय जावै। जठै महात्मा आप री बात छौडे वठै सूं हजूरौ आपरी बात सरू करै।)

हजूरौ : जकौ सुपना में जीवै वौ भी कीं नीं पावै अर जकौ सुपनां नै कीं नीं समझै वौ भी रीतौ ई रैय जावै। सुपना वौ पूरा करै जकौ जाणै है जीवण रौ अरथ। नींद में भी आप रा सुपना बणावै अर फेर जागती आंख्यां सूं साकार करै। सुपना जीवण नीं है पण कीं न कीं तौ है। औ कीं न कीं जकौ जाणग्यौ सुपनां रौ धणियाप उण कनै है। जीवण रौ सार उण कनै है। नीं जणै सुपना तौ नींद उडणै सूं पैली उडण वाळा पांखी है। उड जावै फुर्र। अर रैय जावै उडीक। पण फेर नीं आवै। सुपना न तौ सीर चावै अर ना पाछा आवै।

(हजूरौ गाणौ गावण लागै)

सुपना आपरा, आप-आप रा
इण में सीर हुवै ना भाई
कहै हजूरौ इण दुनिया में
सुपना है खुद सूं खुद तांई
देख, समझ अर परख हजूरा
कर लै काम तूं पूरा सुपना
चाल हजूरा, हाल हजूरा
आज दिसावर टाळ हजूरा
सदा करां बातां दुनिया री
जाणां कीं खुद रा हाल हजूरा

(हजूरौ टाबरां नै लाड करै अर गावतौ-गावतौ मंच छौडै। टाबर भी आप रै घरां बईर हुवै।)

।। पूरण।।

●●

सूर्य कॉलानी, बेणीसर बारी, बीकानेर (राजस्थान) 334005

● *पोथी परख*

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

उकळती ओकळ माथै उभाणै पगां

'गांव री ऊबड़-खाबड़ सड़क/पाणी री सूकी खेळ/पंचायत रै खंबै रौ बुझ्योड़ौ लोटियौ/पेमै रै राशनकार्ड में/डीलर री झूठी इन्द्राज/फेरूं भी तूं मून/अरे भाई/कीं तो बोल!' अै बोल है राजस्थानी रा चावा कवि श्याम महर्षि रा। चाळीस बरसां सूं लांबी कविता जातरा में श्यामजी अैड़ा मून-बेबस लोगां री अवाज बणणै री खरी खैचळ करी है। इत्तै लांबै बगत रै बावजूद बां री प्रतिबद्धता रा सुर मोळा नीं पड़्या, तर-तर मुखर ई हुया है। 1978 में आपरी पैली कविता पोथी- 'उकळती ओकळ' री भूमिका 'म्हारी ओळ्यां' में कवि आपरी दीठ नै इण भांत प्रगटै, 'म्हैं जठै म्हारी कल्पना करयोड़ी मांयली पीड़ कानी सूं सावचेत हुय'र उणनै कविता में बांधण रै खातर रीझ्यौ हूं बठै मानखै रै मोल कानी सूं ई सावचेत हूं। रचनावां खातर म्हैं आ कैय सकूं कै कविता म्हारै अंतस सूं निकळ्योड़ी अेक अमूझ है। हो सकै म्हारी कवितावां परम्परागत चिंतण सूं अळगी हुय'र सीधी सपाट भावुक हिड़दै री ओळखाण करावै। आं कवितावां रौ संबंध ई आज रै मिनख अर बीं रै संघर्ष सूं है। पण मिनख सूं ई अेक किलास नीचै री श्रेणी मांय रैवणै वाळा, कै दो किलो दाणा उधार मांगणै वाळै मिनख सूं किती'क नैड़ी है आ तौ आप ई जाण सकोला।' 'उकळती ओकळ' पछै श्याम महर्षि (जलम-7 अक्टूबर 1943) रा पांच कविता संग्रै आयग्या- साच तो है-1983, मेह सूं पैल्या-1991, अड़वौ-1996, सोनळ बेळू रो समदर-2006 अर कीं तौ बोल-2014।

आपां जाणां कै साहित्य आपोआप में प्रतिरोध री आफळ हुवै। सामाजिक बिडरूपतावां, अन्याव अर अनीत थकां कवि मून कोनी रैय सकै। श्याम महर्षि रौ कवि कविता नैं अेक औजार दांई बरतै अर जीयाजूण रै संघर्ष नैं सबद सूंपै। खास बात आ है कै औ रचाव इकरंगी कोनी बहुवरणौ अर बहुरंगी है। अठै कठैई कमेरै तबकै री जूझ रा चितराम है, तौ कठैई दूजां रौ हक मारणियां नै सीधी ललकार। परकत सागै तौ कवि रौ अैड़ौ घरापौ है कै वांरी कवितावां में बेळू, बायरौ, रूंख, मेह, अर पंखेरू आद घिर-घिर ठौड़ पावै। मरु-परकत रा ओपता चितराम श्याम महर्षि री कवितावां नैं नवौ रंग देवै। इण मांयनै में बै चंद्रसिंह बिरकाळी अर नानूराम संस्कर्ता री सांवठी परम्परा नै नूंवै मुहावरै सूं उजाळता लखावै। अेक बानगी जोवौ- 'सामीं देख्यौ/ सोनल बेळू रौ समदर/ चिड़कल्यां रौ न्हावणौ/ अर अेकल हुय'र गावणौ/ म्हारै मन नै/ सुगन दिरावै/ सामै/ सोनल बेळू रौ समदर/ भरम री म्रिग तिरसणा/ हूक जगावै/ आंधी आवै/ नींद उडावै/ बिरखा री/ आस जगावै। *(सोनल बेळू रो समदर)*

'गांव' श्याम जी री कवितावां रै केन्द्र में रैयौ है। गांवठी जीयाजूण रौ स्यात ई कोई खूणौ-खचूणौ अैड़ौ हुवैला जकौ वां री लेखनी सूं अदीठ रैयौ है। आं कवितावां में आजादी पछै री गांवठी जिनगाणी रै सुपनां अर साच रौ प्रामाणिक इतियास सोध्यौ जा सकै। बगत रै सागै

गांव रौ बदळतौ उणियारौ आं कवितावां में पड़तख दीसै। आपां जाणां कै सरलता अर सहजता गांव रै जीवण री पिछाण रैयी है जठै आपसी मेळ-जोळ अर अड़ी बगत अेक दूजै रै काम आवणौ। लोगां रौ सुभाव रैयौ है। कैवण री दरकार कोनी कै भूमण्डळीकरण री हवा सूं अबै गांव री गवाड़ में ई छळगारी राजनीति अर सुवारथी वृत्ति रौ पसराव हुयग्यौ। बिगसाव रै इण बायरै सूं जठै नूंवा साधन बापरया बठै ई गवाड़ सूनी हुयगी। 'कूवौ' कविता में महर्षि जी इण पीड़ नै उजागर करै- 'बोड़ियै कुवै रौ/कोठौ, खेळ अर चाठ/ अब सूनी है/कूवै री पिणघट/अर पिणहारी/ अब हुयगी है/बीत्योड़ै बगत री बातां/आज नीं कुरजां री बंतळ है/न कागै रा गीत/न सासू री गिंगरथ/अर न नणदल री प्रीत।' *(सोनल बेळू रो समदर)*

साचाणी पणघट अर पणिहारी सूकै कूवै खातर कोनी हुवै पण औ आज रौ खरौ साच है अर साच नै स्वीकारणौ पड़सी। साच औ इज है कै बिगसाव रा लांबा-चौड़ा दावा अर आंकड़ा रै बावजूद देस-दुनिया रौ मोटौ हिस्सौ अजै लग 'रोटी' सारू ही जूझै। इण तबकै सारू अजै तांई बुनियादी जरूरतां ई पूरी कोनी हुई। आ बिडरूपता नीं तौ पछै कांई है कै इण व्यवस्था में गरीब और गरीब अर अमीर और अमीर हुवतौ जा रैयौ है। सेवट औ आंतरौ कांई रूप धारैला? 'साच तो है' संग्रै री 'रोटी' सिरैनांव सूं अेक कविता में कवि आ ई अळोच करतौ दीसै- 'रोटी..../म्हैं भूख सूं राड़ करतौ/बरसां-लग/सड़का, पुळां, खेतां अर मीलां मांय/कारज करतौ हांफीज रैयौ हूं..../अर तूं म्हारै सूं फेर ई अळगी हुवै..../ऊंची और ऊंची चढै/मैं लां-दुमै'ला!'(साच तो है) नांवी कवि-आलोचक श्यामसुंदर भारती रै सबदां में 'मरुथल रा अै चितराम परतख करती महर्षि री कवितावां इण भौम रा मिनख मानवी री अबखायां रा कोलाज उकेरै। इतरी बारीकी सूं कै फोटौ फ्लेश री गळाई सै कीं आंख्यां आगै परतख हो जावै।' *(माणक, दिसम्बर 2007)*

महर्षिजी री कवितावां री सै सूं मोटी तागत लोक रौ उजास है। इण उजास रै पाण ई अै कवितावां राजस्थानी कविता री जातरा में न्यारी ठौड़ बणावै। कविता में विचार रौ आपरौ महत्त्व हुवै पण लोक रौ बळ ई विचार नै करम सूं जोड़ै। सूकै विचार सूं नारा तौ रचीज सकै, कविता नीं। श्याम महर्षि री कविता जातरा जनपखी रचाव री सांगोपांग साख भरै। आं कवितावां में आपरै बगत री चिंतावां सूं जूझते मानखै री जीयाजूण रा बिसवासू चितराम मौजूद है। अै चितराम पोथ्यां में बांच्योड़ा का सुण्योड़ा कोनी, आंख्यां देख्योड़ा अर भोग्योड़ा है। औ अकारण कोनी कै कवि री सिरजण जातरा में काळ, गरीबी, भूख, बेरोजगारी, मूंघीवाड़ै, ओछी राजनीति, भ्रष्टाचार, धरम रै नांव माथै पाखंड, सामाजिक बिडरूपतावां आद रा मोकळा दाखला मिलै। अेक कविता देखौ— 'मील री/चिमनी रौ धुंवो/मील मांय काम करता/मजूरां रै/बळतै खून/अर जळती हाड्यां री/ओळखाण करावै।' *(उकळती ओकळ)*

अमूमन प्रगतिशील रचाव रै सौंदर्यबोध माथै सवाल उठाया जावै। श्याम महर्षि रै जनपखी रचाव में सौन्दर्यबोध री पड़ताल करां तौ आपां कवि री न्यारी-निरवाळी दीठ सूं अरू-भरू हुवां। बियां तो परकत सूं इत्तौ हेत-अपणास राखणियौ कवि रूखौ कींकर हुय सकै क्यूंकै परकत तौ नित नवा रंग धारै। मेह सूं भीज्योड़ी धरती रौ अेक चितराम आप ई जोवौ- 'दोपारै रै मोकळै मेह सूं/धाप्योड़ी धरती माथै/आभै मांय/इन्द्रधनुसी रंग पळकै/धोरां माथै।/बरसै तीजणी/

जाणै धरती माथै/उगिया है हीरा/भीजेड़ी धरती री सुगंध/हरखावै मन म्हारौ/अर जगावै आस/जमानै री। *(हरख/सोनल बेळू रो समदर)*

कमेरै तबकै रै डील माथै मैणत सूं आयोड़ै पसीनै रा टोपा ई कवि री कवितावां में पळकता दीसै। अेक चितराम भळै जोवौ–'काती अर फागण रै/महीनां में/आपरै घर नै/गोबर–माटी सूं लीपै/अर पोळी माथै/मांडै मांडणा/हिरमच अर खड़ियै सूं/झांझरकै उठतां ई जड़ाव/झाड़ू–बुहारी करै/आपरी बाखळ मांय/देवै अरग सूरज नै।' (जड़ाव/कीं तो बोल)

मिनखा मोल में प्रेम सै सूं सिरै बाजै। साची कैवां तौ प्रेम रौ मोल फगत मानखै ई नीं जीव जात अर प्रकृति तांई पसरयोड़ो है। अेक कवि सारू प्रीत री राग नैं साधणौ कसौटी ई कैयी जा सकै। जियां प्रेम बिहूणो जीवण बिरथा है बियां ई प्रेम बिहूणी कविता ई कोरी वंचना है। आपरै ओळै–दोळै अर प्रकृति सूं इसी अपणायत राखणियौ कवि प्रेम सूं न्यारो पण कींकर रैय सकै। ओ हेत ई तो उणनैं मैला–कुचेला गाभा पैरयोड़ै कमेरा लोगां रै बांध भरणै सारू उतावळो करै, आपरै गांव–गवाड़ सारू अपणेस जगावै, प्रकृति रौ गवैयौ बणावै। अेक दाखलौ देखौ–'थारौ मुळकणौ/म्हारी आंख्या मांय/दीठाव करै/ सुरंगा सुपनां रौ/पूनम रै चांद री/ पिछाण करावै/ थारो मुळकणो/ सिस्टी री सिरजणा री/सरुआत करावै/मुळकणौ थारौ/घर नै सुरग बणावै/मन में हरख जगावै/मुळकणौ थारौ।' *(थारौ मुळकणौ/मेह सूं पैल्यां)*

इराक जुध हुवौ चावै अफगानिस्तान माथै हमलौ, छत्तीसगढ़ रा हालात हुवौ चावै गुजरात में आयोड़ौ भूकंप, श्याम महर्षि री कलम खुल्लै खाळै दड़ूकै अर साम्राज्यवादी–सामंतवादी तागतां रा पोत उघाड़ै। आं कवितावां में हूंस अर आस्था रा सुर घणा सजोरा है। आपां जाणां कै थकणौ, बैठणौ का हार मानणौ नीं तो कवि रौ सुभाव है अर नीं उणरी कविता री तासीर।

आलोचना री आंख सूं देखां तौ आं कवितावां में केई ठौड़ विचार अर भावां रौ दुसराव ई मिलै तौ केई कवितावां में वर्णन रौ मोह पण दीसै। जियां बोड़ियै कूवै रौ उल्लेख कोई बीस नैड़ी कवितावां में हुयौ है। सिल्प री दीठ सूं अै कवितावां सीधी अर सरल है। केई ठौड़ तौ सपाटबयानी ई निगै आवै। कला रै नांव माथै कोई कारीगरी अठै कोनी दीसै। आ बात इण भांत ई कैयी जा सकै कै आं कवितावां में कला पख करता भाव पख हावी रैयौ है। पण आपां जाणां कै वैचारिक प्रतिबद्ध कवि री कलम आपरै मूल्यां सारू बेसी जूझै, भाषा–सिल्प री दीठ सूं कविता नै सुधारण–संवारण में कोनी रमै। इणरै सागै सरलता अर सहजता रौ ई अेक अलायदौ रंग हुवै। ओ रंग ई आं कवितावां नै सम्प्रेषण री दीठ सूं सवाई करै।

श्यामजी री कवितावां नै अेकठ रूप बांच्यां पछै म्हनै लखावै कै बां रौ मूल्याकंन हुवणौ अजै बाकी है। कांई कारण रैयौ हुवैला कै 1972 में पैली कविता छप्यां पछै 42 बरसां में छव मौलिक अर तीन अनूदित कविता पोथ्यां आवण रै बावजूद वांनै काम प्रमाणै जस नीं मिल्यौ। विचार रै सीगै प्रगतिशील दीठ अर विधा री सीगै कविता पेटै इसी प्रतिबद्धता राखणिया रचनाकार कित्ता'क है? रवि पुरोहित रै संपादन में 'उकळती ओकळ सूं उपज्या आखर' सिरैनांव सूं श्याम महर्षि री कविता जातरा अेकठ रूप सूं साम्हीं आई है, जकी वांरी खरी कूंत रा मारग खोलैला।

●●

144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर
मो. 9982502969

● *बीकाणै री साख*

साहित-सिरजण री भोम : बीकानेर

डॉ. दीनदयाल ओझा

म्हैं इण साच नै जाणूं-समझूं हूं कै साहित-सिरजण सगळी ठौड़ हुय सकै। हुय रैयौ है। पण म्हैं क्यूं कैवूं कै साहित-सिरजण री भोम बीकानेर है। दूजी बात, जीवण रै 85 बरसां में म्हैं सगळौ राजस्थान साहित रै विद्यार्थी, लेखक अर कवि, पत्रवाचन, आकासवाणी सूं प्रसारण रै रूप में देख्यौ, आपरी अकल मुजब लेख्यौ-समझ्यौ। सायद मोल-तोल पण कर्‌यौ।

म्हैं 18 बरसां रौ जैसलमेर सूं सन् 1947 में बीकानेर आयौ अर 58 बरसां, मतलब 39 बरसां तांई बीकानेर रैय सन् 1986 में पाछौ आपरी जलमभोम जैसलमेर पूग्यौ। आज राजस्थान रै नगरां, महानगरां अर वठै रै मोकळै साहितकारां नै याद करूं, ओळूं गावूं, वां री सादगी, साधना नै निवण करूं, नूंवी ऊरमा पाऊं।

साहित-सिरजण री भोम बीकानेर क्यूं है—म्हारी नजर में— इण पेटै पखपात सूं बेसी साच अर अनुभव कियोड़ा साचा सरावणजोग बीकानेर री माटी अर उण माटी में जलम्यै सुमाणसां साहितकारां रा गुण है, वै इण भांत है—

लेवणौ नीं देवणौ

बीकानेर री माटी अर माटी में जनम्यौ माणस लेवण री तुलना में देवण री नियत पाळै। वौ सीख्योड़ौ ग्यान, गुण-ग्राहकां नै देवै। आदरजोग सरबश्री धनरूपजी गोस्वामी, बदरीप्रसादजी साकरिया, अगरचंदजी नाहटा, नरोत्तमदासजी स्वामी, प्रो. नाथूरामजी खड़गावत, पं. विद्याधरजी शास्त्री, चन्द्रदानजी चारण, डॉ. मनोहरजी शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत, मुरलीधरजी व्यास, नानूरामजी संस्कर्ता, ठा. रामसिंहजी, श्रीलाल नथमलजी जोशी, सत्यनारायणजी पारीक, अक्षयचंद्रजी शर्मा आद-आद मोकळै गुणी विद्वानां पढणो-लिखणौ, पत्रवाचन करणौ, संपादन करणौ, हस्तलिखित पोथ्यां पढणौ सिखायौ। इणी भांत जिका अनुजवत साहितकार है वै सनेव दियौ अर देय रैया है।

अंतस प्रेम

माणस नै ई मौसम ज्यूं गरमास अर ठंडास तौ आवै, पण बीकानेर री माटी रौ साहितकार (माणस) कदैई द्वेष-भाव नीं राखै। वौ अपमान नै सेवै अर दूजा नै मान देवै। बीकानेर री माटी रौ माणस अंतस सूं प्रेम राखै, प्रेम पाळै-प्रेम निभावै। सुख-दुख में आडौ

आवै। वौ आपरै हेताळु रौ हरख, आपरौ हरख अर आपरै मिलणवाळै रौ दुख आपरौ दुख समझै। मददगार बणै।

सहजता अर समरसता

बीकानेर रै साहितकारां में सहजता अर समरसता रैवै। वै कदैई म्हारी समझ रै मुजब सहजता, सरलता, समरसता नीं खोवै अर नीं दिखावटीपणै रौ सांग रचै। नीं कदै आपरी सरावणा-सोभा करै। इनाम-पुरस्कार या थरपीजण री चावना ई नीं राखै।

काम री ईमानदारी

बीकानेर रौ साहितकार, साहित रौ जिकौ ई काम हाथ में लेवै, पूरी लगन, निष्ठा, ईमानदारी सूं करै। भावै काम साहित-सिरजण रौ हुवौ, भावै ग्रंथ अर पत्र-पत्रिकावां रै संपादन रौ हुवौ। वौ हरेक काम नै आपरी साख साथै जोड़ै।

संभाळ

बीकानेर रौ पाकी उमर रौ साहितकार आपरै जवान साहित सिरजकां री सार-संभाळ राखै। वै आगै सनेव सागै पूछता रैवै— लिख तौ रैया हो नीं? कांई लिख रैया हौ? जे लेखण बंद है, तो भी पूछै आं दिना आपरा लेख-कविता-नाटक या रचना अर कोई पोथी छप्योड़ी नजर नीं आई, कांई बात है?

प्रेरक अर प्रेरणा

बीकानेर रौ साहितकार प्रेरक बण साहित लिखण वाळां नै लिखण री साची सल्ला देवै तौ सिरजण में सातत्य निभावण री भी प्रेरणा देवै कै इण अछूतै विषयां माथै लिखौ। अमुक-अमुक साहितकारां इण-इण विषयां माथै अमुक नांववाळा ग्रंथ लिख्या है, वांनै देख्या है, जणै तौ ठीक, नीं जणै वांनै पढौ।

मदद री आदत

बीकानेर रौ साहितकार नूंवै-पुराणै अर पी-अेच.डी. करण वाळां री मन सूं मदद करै। लाख अवसर आवै, पण वौ कदैई आ बात नीं कैवै कै म्हैं फलाणै साहितकार री मदद करी। अमुक-अमुक साहितकार म्हारी मदद सूं तैयार हुया।

ऊपर लिखी बातां, म्हैं सरावण रै सीगै नीं, अंतस रै आभार, आदर अर आजमायोड़ै गुणां रै आधार माथै लिखूं हूं। म्हैं आ पण कैवणौ चाऊं कै दूजी ठौड़ ऊपर लिख्यै गुणां रौ अभाव है। पण ज्यूं भुजिया सगळी ठौड़ बणै, पण बीकानेर रा भुजिया, जैसलमेर रौ घोटुवा सिरैकार मानीजै, उणी भांत बीकानेर री माटी रै साहितकारां में ऊपर लिख्या गुण खास है, स्थाई है। बीकानेर रौ साहितकार साचौ साहितकार है अर उणमें सरावणजोग गुण स्थाई रूप सूं मिळ्योड़ा है। म्हैं सादर लुळ-लुळ निवण करूं सगळै सरावणजोग गुणां अर उण गुणां नै अंतस सूं अंवेरण वाळै सगळै पुराणै-नूंवै साहितकारां नै।

●●

साहित्य साधना सदन, केला पाड़ा, जैसलमेर 345001
फोन : 02992-252576